Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कक्षा
12

हिंदी अनिवार्य की प्रथम पुस्तक

सर्जना

कक्षा 12

सर्जना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सर्जना

अनिवार्य हिन्दी कक्षा – 12

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक : सर्जना अनिवार्य हिन्दी

कक्षा – 12

संयोजक :– डॉ. हेमा देवरानी
प्राध्यापक, हिन्दी–विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर कला महाविद्यालय, अलवर

लेखकगण :–

1. डॉ. अरुण कुमार दवे, हिन्दी–विभागाध्यक्ष
जी. के. गोवाणी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भीनमाल (जिला जालोर)

2. श्री नरेश कुमार जैन, प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
कासिमपुर (जिला धौलपुर)

3. श्री लालाराम कुम्हार
अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा, पाली

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ्यक्रम समिति

पुस्तक – पीयूष प्रवाह
कक्षा–12 हिंदी अनिवार्य द्वितीय

संयोजक – डॉ. आशीष सिसोदिया, सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

लेखकगण: –
1. डॉ. दीपिका विजयवर्गीय, व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महिला कॉलेज, चौमूं जिला–जयपुर

2. डॉ. नवीन नन्दवाना, सहायक आचार्य हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

3. श्री संजय कुमार शर्मा
डाइट , हनुमानगढ़

4. श्री रमाशंकर शर्मा, व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धौलपुर

5. श्री अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रलावता, अजमेर

6. श्री रमाशंकर शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, कुण्डगेट, सावर, अजमेर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आमुख

शिक्षा का उद्देश्य समाज को बेहतर नागरिक प्रदान करना होता है, जो स्वस्थ समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सके। शिक्षा के मानदण्ड राष्ट्र के विकास का पैमाना है। आज हम देख रहे हैं कि नैतिक चारित्रिक मूल्यों का पतन एवं हनन हो रहा है, भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है, अनाचार लोकाचार बन गया है तथा अपराधीकरण सर्वव्यापी बन चुका है, मौलिक स्वरूप विद्रूप हो गया है। हमारा समाज अपने शिक्षा तन्त्र से कतिपय अपेक्षाएँ रखता है, शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थी जीवनमूल्यों एवं संस्कारों को अंगीकार करने में समर्थ हो पाते हैं। जीवनमूल्यों का मूल आधार जीवन उत्कर्ष ही है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की पाठ्यपुस्तक, प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत राजस्थान के विद्यालयों में कक्षा 12 के हिन्दी अनिवार्य प्रथम पुस्तक 'सर्जना' तैयार की गई है। काव्य खंड के अन्तर्गत संतों की वाणी श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देती हैं। रहीम के पदों द्वारा लोक–व्यवहार की शिक्षा दी गई है। राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत भूषण के कवित्त विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायी हैं। राष्ट्रीयता की भावना भेदभाव को भूलकर राष्ट्रीय–हित को ध्यान में रखकर मिलकर रहने की प्रेरणा देती है और उन्हें एकसूत्र में बांधे रखती है। गद्य भाग में विद्यार्थियों को गद्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराते हुए, लोक–कलाओं का संरक्षण व लोक–संस्कृति का संरक्षण करते हुए स्वस्थ परम्पराओं व रीति नीतियों से अवगत कराना है।

समग्र संकलन विद्यार्थियों के चरित्र को संवारने जीवन के यथार्थ को जानने का अवसर प्रदान कर सकेगा, ऐसी आशा है। पुस्तक अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध हो सकेगी। संपूर्ण प्रयत्नों के उपरांत भी न्यूनताएं निश्चित ही रही होंगी। हमारा निवेदन है कि उन न्यूनताओं की ओर इंगित करें जिससे इसमें यथोचित संशोधन संभव हो सके। इसके लिए हम आपके आभारी रहेंगे।

– संपादक मंडल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिन्दी अनिवार्य
पाठ्यक्रम–कक्षा–12

समय–3:15 विषय कोड–
पूर्णांक–80

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	08
व्यावहारिक व्याकरण एवं रचना	16
पाठ्यपुस्तक –सर्जना (प्रथम पुस्तक)	32
पाठ्यपुस्तक –पीयूष प्रवाह (द्वितीय पुस्तक)	12
संवाद सेतु	12

खण्ड–1

अपठित बोध – 8 अंक
(क) अपठित गद्यांश – 4 अंक
(ख) अपठित पद्यांश – 4 अंक

खण्ड–2

व्यावहारिक व्याकरण एवं रचना – 16 अंक
(क) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय – 2 अंक
(ख) पद परिचय – 2 अंक
(ग) शब्द शक्ति – 2 अंक
(घ) अंलकार – (अनुप्रास, श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण तथा विरोधाभास) – 2 अंक
(ड.) पारिभाषिक शब्दावली – 2 अंक
(च) पत्र व प्रारूप लेखन (अर्द्वशासकीय पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) – 2 अंक
(छ) निबंध लेखन (विकल्प सहित) – 4 अंक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खण्ड–3

पाठ्य पुस्तक–सर्जना (प्रथम पुस्तक) – 36 अंक

(क) 1 व्याख्या गद्य से (विकल्प सहित) – 1X4=4 अंक

(ख) 1 व्याख्या पद्य से (विकल्प सहित) – 1X4=4 अंक

(ग) 2 निबंधात्मक प्रश्न (1 प्रश्न गद्य से एवं 1 प्रश्न पद्य भाग से विकल्प सहित) – 2X4=8 अंक

(घ) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्न (2 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) – 4X3=12 अंक

(ड.) किसी एक कवि या लेखक का परिचय – 1X4=4 अंक

(च) 2 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (1 गद्य एवं 1 पद्य भाग से) – 2X2=4 अंक

खण्ड–4

पाठ्य पुस्तक – पीयूष प्रवाह (द्वितीय पुस्तक) – 12 अंक

(क) 1 निबंधात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) – 1X6=06 अंक

(ख) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्नों में से कोई तीन प्रश्न – 3X2=6 अंक

खण्ड–5

संवाद सेतु – 12 अंक

(क) समाचार लेखन (1 प्रश्न) – 1X2=2 अंक

(ख) विविध प्रकार के लेखन (फीचन, संपादकीय, सम्पादक के नाम पत्र, प्रतिक्रिया लेखन) (1 प्रश्न) – 1X2=2 अंक

(ग) साक्षात्कार लेने की कला (1 प्रश्न) – 1X2=2अंक

(घ) विविध क्षेत्रों में पत्रकारिता (1 प्रश्न) – 1X3=3 अंक

(ड.) वार्ता, रिर्पोताज, यात्रा वृतांत, डायरी लेखन की कला (1 प्रश्न) – 1X3=3 अंक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

विवरण	पृष्ठ संख्या
काव्य खंड	
अध्याय 1 संतवाणी : कबीर, तुलसी, कृपाराम	1
अध्याय 2 भ्रमरगीत से चयनित कुछ पद : सूर	7
अध्याय 3 नीति के दोहे : रहीम	10
अध्याय 4 बिहारी सतसई से कुछ पद : बिहारी	14
अध्याय 5 वीर रस के कवित्त : भूषण	18
अध्याय 6 उषा कविता : शमशेर बहादुर सिंह	21
अध्याय 7 आत्म–परिचय, एक गीत : हरिवंश राय बच्चन	24
अध्याय 8 कविता के बहाने, बात सीधी थी पर : कुँवर नारायण	28
अध्याय 9 मेरा नया बचपन : सुभद्रा कुमारी चौहान	32
गद्य खंड	
अध्याय 10 भय : आचार्य राचन्द्र शुक्ल	36
अध्याय 11 बाजार दर्शन (निबन्ध) : जैनेन्द्र	42
अध्याय 12 मजदूरी और प्रेम (निबन्ध) : पूर्णसिंह	49
अध्याय 13 सफल प्रजातंत्रवाद के लिए आवश्यक बातें (भाषण का अंश) : भीमराव अम्बेडकर	57
अध्याय 14 ठेले पर हिमालय (निबन्ध) : धर्मवीर भारती	65
अध्याय 15 तौलिये (एकांकी) : उपेन्द्रनाथ अश्क	71
अध्याय 16 ममता (कहानी) : जयशंकर प्रसाद	86
अध्याय 17 मैं और मैं (निबन्ध) : कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	91

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 1

संत–वाणी

(अ) कबीरदास

जन्म – सन् 1398 ई.
मृत्यु – सन् 1518 ई.

हिन्दी साहित्य की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीर भक्तिकाल के महान समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत, धार्मिक आडम्बर, ऊँच–नीच एवं बहुदेववाद का कड़ा विरोध करते हुए 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के मूल्यों को स्थापित किया। कबीर की प्रतिभा में अबाध गति व तेज था। उन्हें पहले समाज–सुधारक बाद में कवि कहा जाता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को वाणी का डिक्टेटर कहा है। कवि ने अपनी सपाटबयानी एवं तटस्थता से समाज–सुधार के लिए जो उपदेश दिए उनका संकलन उनके शिष्य धर्मदास ने किया।

कबीर की रचनाओं के संकलन को बीजक कहा जाता है। बीजक के तीन भाग हैं– साखी, सबद व रमैनी। संत काव्य परम्परा में उनका काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।

पाठ्य पुस्तक में चयनित कबीर के दोहे सदाचार एवं श्रेष्ठ जीवन–मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। जीवन में त्याग की महत्ता है। मानव को हंस की तरह नीर–क्षीर विवेक रखना चाहिए। अभिमान त्यागने में सार है। साधु की पहचान जाति से नहीं उसके ज्ञान से होती है। सत्संगति सार्थक होती है। दुराशा सर्पिणी के समान घातक होती है। वाणी में कोयल सी मिठास होनी चाहिए।

त्याग तो ऐसा कीजिए, सब कुछ एकहि बार।
सब प्रभु का मेरा नहीं, निहचे किया विचार ।।

सुनिये गुण की बारता, औगुन लीजै नाहिं।
हंस छीर को गहत है, नीर सो त्यागे जाहिं।।

छोड़े जब अभिमान को, सुखी भया सब जीव।
भावै कोई कछु कहै, मेरे हिय निज पीव।।

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संगत कीजै साधु की कभी न निष्फल होय ।
लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय ।।

मारिये आसा सांपनी, जिन डसिया संसार।
ताकी औषध तोष है, ये गुरु मंत्र विचार।।

कागा काको धन हरै, कोयल काको देत ।
मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत।।

(ब) तुलसीदास

जन्म – सन् 1532 ई.
मृत्यु – सन् 1623 ई.

उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर गाँव में जन्मे तुलसीदास का बचपन अत्यन्त कठिनाइयों में बीता। कष्टों के दौर से गुजरकर उन्होंने गुरु नरहर्यानन्द व शेष सनातन से शिक्षा ग्रहण की। वे अपनी पत्नी रत्नावली से अति स्नेह रखते थे लेकिन एक दिन रत्नावली द्वारा उत्प्रेरित किए जाने पर उनके हृदय में रामप्रेम जाग्रत हो गया।

तुलसीदास ने अवधी तथा ब्रज भाषा में कई ग्रंथों की रचना की। 'रामचरितमानस' उनकी कीर्ति का आधार ग्रंथ है। अन्य प्रसिद्ध ग्रंथों में विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, कृष्ण–गीतावली, बरवै रामायण तथा रामलला नहछू प्रमुख हैं।

तुलसी के काव्य में समन्वय की भावना सर्वोपरि है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आदर्श समाज की जो कल्पना प्रस्तुत की है, वह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। तुलसी का काव्य भारतीय समाज का आदर्श पथप्रदर्शक है।

पुस्तक में संगृहीत तुलसी के दोहे मानवता की सीख देते हैं। कामक्रोधादि दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए। मानव जीवन की सार्थकता परमार्थ में है। मनुष्य अच्छी संगत से अच्छा व बुरी संगत से बुरा बन जाता है। सबसे हिल–मिलकर चलना चाहिए। वक्त प्रतिकूल हो तो मौन रहना श्रेयस्कर है। बुरे समय में धीरज, धर्म, विवेक, साहित्य, साहस, सत्यव्रत व परमात्मा में भरोसा रखना चाहिए।

काम क्रोध मद लोभ रत, गृहासक्त दुःखरूप।
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ़ परे भव कूप।।

कहिबे कहँ रसना रची, सुनिबे कहँ किए कान।
धरिबे कहँ चित हित सहित, परमारथहि सुजान।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुलसी भलो सुसंग तें, पोच कुसंगति सोइ ।
नाउ किंन्नरी तीर असि, लोह बिलोकहु लोइ।।

राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान।
जो जल परै जो जन मिलै, कीजै आपु समान।।

तुलसी या संसार में, भाँति भाँति के लोग।
सबसौ हिल–मिल चालिए नदी–नाव संयोग।।

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिलन मौन।
अब तो दादुर बौलिहे, हमें पूछिहै कौन ।।

तुलसी असमय के सखा, धीरज धरम बिबेक।
साहित साहस सत्यब्रत, राम भरोसो एक।।

(स) राजिया रा सोरठा

कृपाराम खिड़िया

जन्म – सन् 1743 ई.
मृत्यु – सन् 1833 ई.

राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध कवि कृपाराम खिड़िया का जन्म तत्कालीन मारवाड़ राज्य के खराड़ी गाँव के निवासी जगराम खिड़िया के यहाँ हुआ था। राजस्थानी भाषा डिंगल और पिंगल के उत्तम कवि व संस्कृत–मर्मज्ञ होने के कारण उन्हें सीकर के राव लक्ष्मण सिंह ने महाराजपुर और लछनपुरा गाँव जागीर में दिए थे। कवि कृपाराम सीकर के राजा देवी सिंह के दरबार में भी रहे।

राजिया कृपाराम जी का सेवक था। एक बार कवि के बीमार पड़ने पर सेवक राजिया ने उनकी खूब सेवा–सुश्रूषा की, जिससे कवि बहुत प्रसन्न हुए। कोई संतान न होने के कारण राजिया बहुत दुःखी रहता था। राजिया के इसी दुःख को दूर कर उसे अमर करने हेतु कवि ने उसे सम्बोधित करते हुए नीति सम्बन्धी सोरठों की रचना की जो हिन्दी व राजस्थानी साहित्य में राजिया रा दूहा या राजिया रा सोरठा नाम से विख्यात है। इन सोरठों ने सेवक राजिया को कवि कृपाराम से भी अधिक लोकप्रिय बना दिया।

प्रस्तुत पाठ में नीति व आदर्श लोक–मर्यादा की सीख देने वाले सोरठों का समावेश किया गया है। कोयल व काग की तुलना कर कवि मीठी वाणी की महत्ता बताता है। शक्कर व कस्तुरी के माध्यम से सौन्दर्य

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

की तुलना में गुणों को श्रेयस्कर बताता है। दूसरों के कलह व विवाद से लोग आनन्दित होते हैं। हमारा व्यवहार मतलब पर आधारित होता है। मुख पर मधुरता और हृदय में खोट रखने वाले लोगों से आत्मीयता सम्भव नहीं है। मैत्री–निर्वाह हेतु समर्पण व सरलता जरूरी है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के लिए रथ हाँकने तक का काम कर लिया। आजकल हिम्मत की ही कीमत है; हिम्मत–रहित व्यक्ति की कीमत रद्दी कागज–सी हो जाती है।

उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखित करै।
कड़वो लागै काग, रसना रा गुण राजिया।।

काळी घणी कुरूप, कस्तूरी कांटां तुलै।
सक्कर बड़ी सरूप, रोड़ां तुलै राजिया।।

डूँगर जळती लाय, जोवै सारो ही जगत।
पर जळती निज पाय, रती न सूझै राजिया।।

मतलब री मनवार, चुपकै लावै चूरमो।
बिन मतलब मनवार, राब न पावै राजिया।।

मुख ऊपर मिठियास, घट मांहि खोटा घड़ै।
इसड़ां सू इखळास, राखीजै नहिं राजिया।।

साँचो मित्र सचेत, कह्यो काम न करै किसो।
हरि अरजण रै हेत, रथ कर हाँक्यौ राजिया।।

हिम्मत किम्मत होय, बिन हिम्मत किम्मत नहीं।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यूं राजिया।।

षब्दार्थ–

तोष – संतोष	निज – अपना
कंचन – सोना	परस – स्पर्श
कागा – कौआ	अभिमान – गर्व
औगुन – अवगुण	नीर – पानी
रत – डूबे रहना	मूढ़ – मूर्ख
भव – संसार	कूप – कुआँ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रसना – जीभ	हित – प्रेम
नाउ – नाव	दादुर – मेंढक
चेत – सावधान	अनुराग – प्रेम
हरखित – आनन्दित	रसना – जीभ
डूँगर – पहाड़	जोवै – देखना
पाय – पैर	घट – हृदय।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ''आसा साँपनी'' की औषधि है–
   (अ) माया (ब) सुख
   (स) संपदा (द) संतोष ( )
2. कवि ने 'कस्तूरी' व 'चीनी' के माध्यम से मनुष्य के किन गुणों की ओर संकेत किया है–
   (अ) आन्तरिक (ब) बाह्य
   (स) आन्तरिक व बाह्य (द) इनमें से कोई नहीं। ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. हंस के उदाहरण से कवि क्या शिक्षा देना चाहता है ?
2. ''मोल करो तलवार का पड़ा रहने दो म्यान'' से क्या तात्पर्य है ?
3. कबीरदास ने संगति का क्या प्रभाव बताया।
4. ईश्वर प्राप्ति में बाधक अवगुण कौन–कौन से बताए गए हैं ?
5. तुलसीदास के अनुसार इन्द्रियों की सार्थकता किससे संभव है ?
6. कवि के अनुसार मनुष्य के जीवन में संगति का क्या प्रभाव पड़ता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जगत् को वश में करने का क्या उपाय बताया गया है ?
2. कबीरदास की वाणी साखी क्यों कहलाती है ? स्पष्ट कीजिए।
3. 'जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
   मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. ''नदी नाव संयोग''–द्वारा तुलसी ने संसार में जीने का क्या तरीका बताया ?
5. ''राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान'' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
6. ''अब तो दादुर बौलिहे, हमें पूछिहैं कौन'' – में तुलसी का क्या भाव है ?
7. ''पर जळती निज पाय, रती न सूझै राजिया'' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
8. ''मुख ऊपर मिठियास, घट माहि खोटा घड़ै'' – पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निबंधात्मक प्रश्न –

1. ''हिम्मत किम्मत होय .... रद कागद ज्यूं राजिया'' – दोहे का भावार्थ लिखिए। दोहे के माध्यम से मनुष्य के किस गुण की ओर संकेत किया है ?

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. कागा काको धन हरै .... जग अपनो करि लेत।
2. काम क्रोध मद .... परे भव कूप।
3. तुलसी या संसार .... नदी नाव संयोग।

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 2

भ्रमरगीत से चयनित कुछ पद : सूरदास

जन्म – सन् 1483 ई.
मृत्यु – सन् 1563 ई.

सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव में हुआ था। रुनकता (आगरा) के गऊ घाट पर उनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई। उन्होंने सूरदास को वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित किया तथा भागवत कथा सुनाई। जिसके आधार पर कवि ने उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया। सूरदास ने ब्रजभाषा में श्रीकृष्ण की लीलाओं का सुन्दर चित्रण किया है। वे भक्ति, शृंगार एवं वात्सल्य के अनुपम कवि हैं। सूरदास की प्रमुख रचनाएँ तीन मानी जाती हैं– 1. सूरसागर 2.सूर सारावली 3. साहित्य लहरी । इनमें से सूरसागर इनकी अक्षय कीर्ति का आधार ग्रंथ है।

सूरदास अष्टछाप के शीर्ष कवि हैं। कृष्ण के लोकरंजक रूप को काव्य का आधार बनाकर उन्होंने जयदेव और विद्यापति की गान परम्परा को आगे बढ़ाया। सूरदास का काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। उनके बारे में सच ही कहा गया है–

सूर सूर, तुलसी ससि, उडुगण केसवदास।
अबके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास।।

इस पाठ में सूरसागर के भ्रमरगीत से छह पद लिए गए हैं। श्रीकृष्ण ने विरह–वेदना से व्यथित गोपियों को सान्त्वना देने हेतु उद्धव को भेजा। उद्धव उन्हें निर्गुण ब्रह्म एवं योग का उपदेश देते हैं। तभी वहाँ एक भौंरा आता है। गोपियाँ भ्रमर के बहाने उद्धव को जवाब देती हैं। उन्हें कड़वी ककड़ी के समान योग का उपदेश अरुचिकर लगता है। उनके लिए मिलन ओर विरह दोनों स्थितियों में श्रीकृष्ण से लगाव लाभदायक है। मथुरा काजल की कोठरी के समान है। उनकी आँखें कृष्ण–दर्शन को व्याकुल हैं। वे निर्गुण ब्रह्म के रूप, रंग, निवास, माता–पिता आदि का ब्यौरा जानना चाहती हैं। कृष्ण की याद दिलाने वाले वन–उपवन, लतावितान, यमुना आदि विरहकाल में भीषण संतापदायक बन गए हैं।

भ्रमरगीत से चयनित कुछ पद

हमारे हरि हारिल की लकरी ।
मन बच क्रम नंदनंदन सो उर यह दृढ़ करि पकरि ।।
जागत सोवत सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जकरी ।
सुनतहि जोग लगत ऐसो अलि! ज्यों करुई ककरी ।।
सोई व्याधि हमैं लै आए देखी सुनी न करी ।
यह तौ सूर तिन्हैं लै दीजै जिनके मन चकरी ।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हम तो दुहूँ भाँति फल पायो ं
जो ब्रजनाथ मिलैं तो नीको, नातरु जग जस गायो।।
कहँ वै गोकुल की गोपी सब बरनहीन लघुजाती।
कहँ वै कमला के स्वामी संग मिलि बैठीं इक पाँती ।।
निगमध्यान मुनिज्ञान अगोचर, ते भए घोषनिवासी ।
ता ऊपर अब साँच कहों धौं मुक्ति कौन की दासी ?
जोग–कथा, पा लागों ऊधो, ना कहु बारम्बार ।
सूर स्याम तजि और भजै जो ताकी जननी छार ।।

बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे !
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे ।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे ।
तिनके संग अधिक छवि उपजत कमलनैन मनिआरे ।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना जाय पखारे ।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम–गुन न्यारे ।।

अँखियाँ हरि–दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसराची ये बतियाँ सुनी रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहिं झूखी ।
अब इन जोग–सँदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी ।।
बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी ।
सूर सिकत हठि नाव चलायो ये सरिता है सूखी ।।

निर्गुन कौन देस को बासी ?
मधुकर ! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी ।।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी ?
कैसो बरन, भेस है कैसो, केहि रस में अभिलासी ।।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे ! कहैगो गाँसी ।
सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मति नासी ।।

बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजैं ।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं ।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं अलि गुंजैं ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुंजैं ।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों विरह कदन करि मारत लुंजैं ।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं ।।

शब्दार्थ–

हरि – श्रीकृष्ण	हारिल – एक प्रकार का पक्षी
जकरी – जकड़ी हुई	करुई ककरी – कड़वी ककड़ी
तिन्है – उन्हें	चकरी –फिरकी
राची – रंगी हुई	झूखी – दुःख से पछताई (खीजी)
पतूखी – पत्ते का दोना	बारक – एक बार।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सूरदास की भक्ति मानी जाती है –
   (अ) सखा भाव की (ब) दास्य भाव की
   (स) माधुर्य भाव की (द) कान्ता भाव की
   ( )
2. सूरदास ने अँखिया को भूखी बताया है –
   (अ) प्राकृतिक सौन्दर्य की (ब) सुरमा लगाने की
   (स) नींद लेने की (द) हरिदर्शन की ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1.उद्धव को गोपियों ने ऐसे कौन से प्रश्न किए कि उद्धव ठगा–सा रह गया?
2. हारिल पक्षी की क्या विशेषता हैं ? बताइए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गोपियों को उद्धव का योग (जोग) संदेश किसके समान लग रहा है ?
2. ''मानहु नील भाट ते काढ़े लै यमुना ज्यों पखारे।'' पंक्ति में कौनसा अलंकार है ? परिभाषा लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सूरदास के पदों में वर्णित प्रेमभक्ति भावना का वर्णन कीजिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. अँखियाँ हरि–दरसन .... सरिता है सूखी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय–3

नीति के दोहे : रहीम

जन्म – सन् 1556 ई.
मृत्यु – सन् 1626 ई.

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनके पिता बैरम खाँ ने मुगल बादशाह हुमायूँ की मृत्यु के बाद अकबर के संरक्षक का दायित्व निभाया था। रहीम बचपन से ही साहित्य–प्रेमी और बुद्धिमान थे। उन्हें अपने माता–पिता से वीरता, राजनीति, दानवीरता तथा काव्य जैसे गुण विरासत में मिले थे।

रहीम का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वे सामंजस्यवादी थे। श्रीकृष्ण के प्रति भी उनकी अथाह श्रद्धा थी। उन्होंने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों एवं पात्रों का भी बखूबी उल्लेख किया है। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है। रहीम को दोहा, सोरठा, बरवै तथा सवैया छंदों में विशेष महारत हासिल थी।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– दोहावली, बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी, मदनाष्टक तथा नगरशोभा। अपने अनुभवों को उन्होंने जिस सरल शैली में व्यक्त किया वह अद्भुत है।

प्रस्तुत पाठ में चयनित रहीम के दोहों द्वारा हमें परोपकार, सज्जनता, परदुःखकातरता, स्वाभिमान एवं लोक–व्यवहार की सीख मिलती है। दीनों पर दया करने वाला दीनबंधु भगवान–तुल्य होता है। मांगने से मनुष्य की महत्ता घटती है। उत्तम स्वभाव वाले मनुष्य को कुसंग दुष्प्रभावित नहीं करती। सज्जन परोपकार के निमित्त ही सम्पत्ति का संग्रह करते हैं। धनी पुरुष निर्धन होने पर अपने अतीत की चर्चा ऐसे करते हैं जैसे आश्विन मास के जलविहीन बादल गरजते हैं। अच्छे लोगों के रूठने पर उन्हें मना लेना चाहिए। आँख से निकलने वाले आँसू घर–भेदी की तरह हमारी व्यथा को जगजाहिर कर देते हैं। काम पड़ने व काम निकलने पर लोगों का व्यवहार भिन्न–भिन्न होता है।

नीति के दोहे

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि ।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय ।।

कदली, सीप, भुजंग–मुख, स्वाति एक गुन तीन ।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

काज परै कछु और है, काज सरै कछु और ।
रहिमन भँवरी के भए, नदी सिरावत मौर ।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार ।
रहिमन फिरि–फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार ।।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरबर पियहिं न पान ।
कहि रहीम पर–काज हित, संपति सँचहि सुजान ।।

थोथे बादर क्वाँर के, ज्यों रहीम घहरात ।
धनी पुरुष निर्धन भये, करै पाछिली बात ।।

रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुःख प्रगट करेइ ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ ।।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय ।
सुनि अठिलैहें लोग सब, बाँटि न लैहें कोय ।।

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय ।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय ।।

दोनों रहिमन एक से, जौ लौं बोलत नाहिं ।
जान परत हैं काक पिक, ऋतु बसंत के माँहिं ।।

बड़े बड़ाई ना करैं, बड़ो न बोलैं बोल ।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल ।।

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय ।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय ।।

बिपति भए धन ना रहे, रहे जो लाख करोर ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नभ तारे छिपि जात हैं, ज्यों रहीम भए भोर ।।

माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम ।
तीन पैग बसुधा करो, तऊ बावनै नाम ।।

मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीस।
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस ।।

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल ।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ।।

अमृत ऐसे वचन में, रहिमन रिस की गाँस ।
जैसे मिसिरिहु में मिली, निरस बाँस की फाँस ।।

शब्दार्थ–

लघु – छोटा	तलवारि – तलवार	कदली – केला
सीप – सीपी	भुजंग – सर्प	स्वाति–एक नक्षत्र का नाम
काज – कार्य	कुसंग – बुरी संगति	विश – जहर
बादर – बादल	बसुधा – धरती	बावनै – वामन
पैग – पैर, कदम	जिह्वा – जीभ	कपाल – सिर
रिस – क्रोध	मिसिरिहु – मिश्री	नीरस –रसहीन।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. रहीम के काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता क्या है –
   (अ) समासिकता (ब) शृंगारिकता
   (स) नीति प्रवणता (द) अनुभव संकुलता ( )
2. विपत्ति में धन किसकी तरह लुप्त हो जाता है –
   (अ) प्रातःकालीन तारों की तरह (ब) मित्र की तरह
   (स) दुश्मन की तरह (द) हवा की तरह ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. "काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
   रहिमन भँवरी के भए नदी सिरावत मौर।।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रस्तुत दोहे के माध्यम से रहीमदास जी ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति का वर्णन किया है ?समझाइए।

2. कवि के अनुसार बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति कैसे स्वभाव वाले व्यक्तियों की प्रवृत्ति को बदल नहीं पाते हैं ?सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. रहीमदास जी ने सज्जन व्यक्ति के रूठ जाने पर भी बार–बार मनाने की बात क्यों कही है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. "थोथे बादर क्वार के .... पाछिली बात।" प्रस्तुत दोहे का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. "नीति काव्य के क्षेत्र में रहीम का स्थान सर्वोपरि है।" इस कथन के विषय में अपने विचार लिखिए।
3. रहीम ने मनुष्य को अपने मन की व्यथा अपने तक ही सीमित रखने को क्यों कहा है ?
4. 'माँगे घटत रहीम पद .... तऊ बावनै नाम।'
   प्रस्तुत दोहे का कथन स्पष्ट कीजिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. "मान सहित विष खाय .... राहु कटायो सीस।" दोहे की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 4

बिहारी सतसई से कुछ पद : बिहारी

जन्म – सन् 1595 ई.
मृत्यु – सन् 1663 ई.

गागर में सागर भरने वाले रीतिकाल के महान् कवि बिहारी का जन्म ग्वालियर के निकट बसुआ नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। उन्होंने आमेर के राजा मिर्जा जयसिंह के दरबार में पहुँचकर अल्पवयस्का रानी के मोहपाश में राज–कर्तव्य भूले राजा को एक दोहे के द्वारा सावचेत किया। काव्य–पारखी राजा ने उनका सम्मान किया व अपने दरबार में सम्मानजनक स्थान दिया।

बिहारी ने 'सतसई' की रचना की। कवि ने भक्ति, नीति, शृंगार, प्रकृति–चित्रण, ज्योतिष एवं बहुआयामी ज्ञान पर आधारित दोहों की रचना कर अक्षय कीर्ति अर्जित की। वे निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हुए तथा राधा–कृष्ण की भक्ति की। उनकी रचनाओं में उक्ति वैचित्र्य, अन्योक्ति, अर्थ–गाम्भीर्य, अर्थ–विस्तार अलंकारिकता तथा कल्पना की समाहार शक्ति का विलक्षण समावेश है।

उनकी समाहार शक्ति के कारण ही कहा गया है–

सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे घाव करे गम्भीर।।

प्रस्तुत पाठ में बिहारी के भक्ति, नीति एवं शृंगार के दोहे लिए गए हैं। कवि सांसारिक–बाधाओं से मुक्ति हेतु राधाजी की आराधना करता है तो दूसरी तरफ अपने प्रभु श्रीकृष्ण को उपालम्भ देता है कि आपको भी संसार की हवा लग गई है। मुक्तात्माओं के सानिध्य से अधम भी मुक्त हो जाता है। श्रीकृष्ण की बातों का आनन्द–रस पाने के लिए गोपियाँ उनकी मुरली छिपा लेती हैं। वन में कृष्ण के आते ही बिना वर्षा मोर नाचने लगते हैं। नायक व नायिका भरे भवन में संकेतों से वार्तालाप करते हैं। झीने वस्त्रों में नायिका ऐसे सुशोभित हो रही है जैसे सागर में कल्पवृक्ष की डाल।

भक्ति, नीति एवं शृंगार के दोहे

मेरी भव–बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परे, स्याम हरित दुति होइ।।

तौ पर वारौ उरबसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन के उर बसी, ह्वै उरबसी समान।।

बंधु भए का दीन के, को तार्‌यौ रघुराइ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तूठे तूठे फिरत हौ, झूठे बिरद कहाइ।।

कब को टेरतु दीन–रट, होत न स्याम सहाइ।
तुमहूँ लागी जगत गुरु, जगनाइक जग बाइ।।

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यों–ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों–त्यों उज्जलु होइ।।

भजन कह्यौ तातैं भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।
दूरिभजन जातैं कह्यौ, सो तैं भज्यौं गँवार ।।

अजौं तरयौना ही रह्यो श्रुति सेवत इक रंग।
नाकवास-बेसर लह्यौ, बसि मुकुतन के संग।।

सघन कुंज छाया सुखद, सीतल सुरभि समीर।
मनु ह्वै जातु अजौं वहै, उहि जमुना के तीर।।

सोहत ओढैं पीत पटु, स्याम सलौनैं गात ।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात।।

इहीं आस अटक्यौ रहतु, अलि गुलाब के मूल।
ह्वै है फेरि बसन्त ऋतु, इन डारनु वै फूल।।

को छूट्‌यौ इहि जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यौं ज्यौं सुरझि भज्यौ चहत, त्यौं त्यौं उरझत जात।।

बतरस–लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ ।।

नाचि अचानक ही उठै, बिनु पावस बन मोर।
जानति हौं नंदित करी, यह दिसि नन्दकिसोर।।

लिखन बैठि जाकी छबी गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

झीनै पट में झुलमुली झलकति ओप अपार ।
सुरतरु की मनु सिंधु मैं लसति सपल्लव डार।।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु ही सौं बात।।

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ मेरे हिय की बात ।।

कहत सबै बेंदी दियै अंकु दसगुनौ होतु।
तिय–लिलार बेंदी दियै, अगनितु बढतु उदोतु।।

डीठि न परतु समान–दुति कनक–कनक से गात।
भूषन कर करकस लगत, परसि पिछाने जात ।।

अंग अंग नग जगमगत, दीपसिखा सी देह ।
दिया बढाएँ हूँ रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।।

शब्दार्थ–

भव – संसार
लसति – बिलास करती है
सुरतरु – कल्पवृक्ष
गेह – घर
जग–बाइ – संसार की वायु (संसार का बुरा प्रभाव)
अनुरागी – प्रेमी
बूड़ै – डूबना
उदोतु – प्रकाश, शोभा
कनक – सोना
परसि – स्पर्श
पावस – वर्षा ऋतु
बतरस – बातचीत का आनंद
लुकाइ – छिपाना
नटि जाइ – मुकर जाती है
सलोने – सुंदर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'बिहारी सतसई' में किस रस की प्रधानता है –

(अ) शांत (ब) श्रृंगार
(स) वीर (द) हास्य ( )

2. बिहारी की काव्य शैली है –

(अ) मुक्तक काव्य शैली (ब) खण्ड काव्य शैली

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(स) गीति काव्य शैली (द) प्रबंध काव्य शैली ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'कब को टेरतु दीन–रट .... जगनाइक जग बाइ।' प्रस्तुत दोहे में कवि ने उलाहना देते हुए किस पर कटाक्ष किया है ?
2. किस लालच में गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुरली छिपा लेती हैं ?
3. श्री कृष्ण के आगमन पर वन के मोर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं ?
4. समान आभा के कारण नज़र न आने वाले नायिका के आभूषणों की पहचान किस प्रकार होती है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'जगत् के चतुर चितेरे को भी मूढ़ बनना पड़ा।' कवि ने ऐसा क्यों कहा ?
2. ''कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
   भरे भौन में करत है, नैननु ही सौं बात।।''
   प्रस्तुत दोहे के माध्यम से नायक–नायिका आँखों की चेष्टा के द्वारा हृदय के किन भावों को प्रकट कर रहे हैं ?
3. ''अंग अंग नग जगमगत दीपशिखा सी देह
   दिया बढाएँ हूँ रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।''
   प्रस्तुत दोहे में सखी नायक से नायिका की छवि प्रशंसा करते हुए क्या कहना चाहती है ?

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. ''कहत सबै बेंदी .... बढतु उदोतु।'' प्रस्तुत दोहे का भाव लिखिए।
2. ''कागद पर लिखत .... हिय की बात।'' दोहे की व्याख्या कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 5

वीररस के कवित्त : भूषण

जन्म – सन् 1613 ई.
मृत्यु – सन् 1715 ई.

रीतिकाल की शृंगार प्रधान काव्य–सरिता में वीररस की प्रबल धार बहाने वाले कवि भूषण का जन्म उत्तरप्रदेश में कानपुर के तिकवाँपुर गाँव में हुआ था। उनके पिता रत्नाकर त्रिपाठी थे। इनका मूल नाम घनश्याम था तथा भूषण इनकी उपाधि है। इन्हें छत्रपति शिवाजी तथा छत्रसाल महाराज के दरबार में विशेष सम्मान प्राप्त हुआ।

कवि भूषण की रचनाओं में शिवराजभूषण, छत्रसालदशक, शिवाबावनी, भूषण हजारा व भूषण उल्लास आदि का उल्लेख किया जाता है। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना शिवराजभूषण है। भूषण की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना, वीरता के उद्‌गार व ओज गुण का वैशिष्ट्य है। कवि की वाणी देशवासियों के लिए आज भी प्रेरणादायी है।

प्रस्तुत पाठ में कविवर भूषण के पाँच कवित्त लिए गए हैं। शिवाजी जब युद्ध के लिए प्रस्थान करते हैं तो संसार भर में खलबली मच जाती है। धूल के गर्द में सूर्य तारे जैसा लगने लगता है; समुद्र थाली में रखे पारे की तरह प्रतीत होता है। औरंगजेब के दरबार में समुचित सम्मान न पाकर क्रोध से उबलते शिवाजी का रौद्र लाल मुख देखकर औरंगजेब का मुख काला व उसके सिपाहियों का मुख भय से पीला पड़ जाता है। शेषनाग, विधाता(कर्तार) व यमराज के दायित्वों को असल में तो शिवाजी ही निभाते हैं। शिवाजी का शत्रुओं पर आधिपत्य ऐसा है जैसे इन्द्र का जंभासुर पर, बड़वानल का सागर पर, राम का रावण पर, वायु का बादलों पर, शंकर का कामदेव पर, परशुराम का सहस्रबाहु पर, दावाग्नि का वृक्षों पर, चीते का मृग–समूह पर, शेर का हाथियों पर, प्रकाश का अंधकार पर व श्रीकृष्ण का कंस पर है। इसी प्रकार कवि शिवाजी की तुलना गरुड़, सिंह, इन्द्र, बाज एवं सूर्य से करता है। कवि मानता है कि सूर्य के समान नवखण्ड भूमण्डल पर सर्वत्र शिवाजी का वर्चस्व है।

वीररस के कवित्त

साजि चतुरंग–सैन अंग में उमंग धारि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद–बिहद नगारन के
नदीनद मद गैबरन के रलत है।
ऐलफैल खैलभैल खलक में गैल गैल
गजन की ठैलपैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

थारा पर पारा पारावार यों हलत है।

सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग
ताहि खरो कियो छ–हजारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसीले गुसा धारि मन,
कीन्हो ना सलाम न बचन बोले सियरे।
भूषन भनत महाबीर बलकन लाग्यौ
सारी पातसाही के उड़ाय गए जियरे।
तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भए,
स्याहमुख नौरँग, सिपाह–मुख पियरे।

तेरे हीं भुजानि पर भूतल कौ भार
कहिबे कौं सेषनाग दिगनाग हिमाचल है.
तेरौ अवतार जग–पोषन–भरनहार,
कछु करतार कौ न ता मधि अमल है।
साहि–तनै सरजा समत्थ सिवराज कवि
भूषन कहत जीवौ तेरो ही सफल है।
तेरौ करबाल करै म्लेच्छन कौ काल
बिन काज होत काल बदनाम धरातल है।

इंद्र जिम जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन वारिवाह पर संभु रतिनाह पर
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर,
भूषन वितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम–अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
यौं मलेच्छ–बंस पर सेर सिवराज है।

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर
दावा नागजूह पर सिंह सिरताज को
दावा पूरहूत को पहारन के कूल पर
दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को
भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तम पर दावा रविकिरनसमाज को
पूरब पछाँह देस दच्छिन तें उत्तर लौं
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को

शब्दार्थ–

करबाल – तलवार, कटार साजि – सजी, सजना जंग – युद्ध
चतुरंग – हाथी, घोड़ा, पैदल व रथ सेना नाद –आवाज, शोर
सैल – पर्वत उलसत – उखड़ना पातशाही – बादशाहत
निरखी –देखकर स्याह–काला मजहब – धर्म
आबाद – फलना–फूलना दावा – प्रभुत्व मलेच्छ – मुगल
द्विजराज – परशुराम रतिनाह – कामदेव दिगनाग – दिशाओं के हाथी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'भनत' शब्द का अर्थ है –
(अ) कविता (ब) कहना
(स) सजना (द) खनकना ( )

2. कवि किसकी भुजाओं पर धरती का भार मानता है –
(अ) कछुए की (ब) शेषनाग की
(स) शिवाजी की (द) औरंगजेब की ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. भूषण के संकलित छंदों में कौनसा रस और कौनसा गुण है ?
2. कवि भूषण की दो रचनाओं के नाम बताइए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भूषण ने अँधेरे पर किसका अधिकार बताया है ?
2. सहस्रबाहु पर किसने विजय प्राप्त की थी ?
3. वितुण्ड पर किसका अधिकार होता है ?

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. पठित अंश के आधार पर सिद्ध कीजिए कि भूषण वीर रस के कवि थे।

व्याख्यात्मक प्रश्न –

सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. तेरे हीं भुजानि........................बदनाम धरातल है।
2. इन्द्र जिम जंभ .... सिवराज है।

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 6

उषा कविता : शमशेर बहादुर सिंह

जन्म – सन् 1911 ई.
मृत्यु – सन् 1993 ई.?

देहरादून में जन्मे शमशेर बहादुर सिंह को मात्र 8–9 वर्ष की उम्र में माँ का चिरवियोग सहना पड़ा। 18 वर्ष की उम्र में उनका विवाह हुआ मगर मात्र 6 वर्ष साथ निभाकर पत्नी भी टीबी से चल बसी। जीवन के अभावों ने उनके कवित्व को दुर्बल नहीं बनाया बल्कि धारदार बनाया।

बिम्बधर्मी कवि के रूप में विख्यात शमशेर की कविता में प्रगतिशील कवि की वैचारिकता तथा प्रयोगधर्मी कवि की शिल्प विधा का अनूठा संगम मिलता है। कवि द्वारा रचित सौन्दर्य के अनूठे चित्र पाठकों के मन को भाते हैं।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने, बात बोलेगी तथा काल तुझसे होड़ है मेरी। उन्होंने उर्दू–हिन्दी कोश का सम्पादन भी किया।

प्रस्तुत कविता उषा भोर के समय होने वाले सूर्योदय का अनूठा शब्द–चित्र है। सूर्योदय के दृश्यों को मनोहारी घरेलू बिम्बों में बदलकर कवि ने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया हैं। ये बिम्ब हमें गाँव की मोहक भोर एवं जीवन्त परिवेश का साक्षी बनाते हैं। भाषा, बिम्ब और लय – तीनों का मणिकांचन संयोग इस कविता में मिलता है। कवि प्रातःकालीन सूर्योदय का मूकद्रष्टा मात्र न बनकर भोर के जीवन्त परिवेश को जीवन के चिर परिचित बिम्बों में अभिव्यक्त कर स्रष्टा के रूप का अहसास कराता है।राख से लीपा हुआ चौका, बहुत काली सिल, स्लेट या लाल खड़िया चाक; ये हमारे सामान्यघरेलू परिवार के बिम्ब हैं. लेकिन इनमें अनूठा सौन्दर्य भी है।

उषा

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)

बहुत काली सिल ज़रा–से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो ।

और...
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

शब्दार्थ—

भोर – सवेरा पौ फटने से पूर्व का समय लीपा हुआ – पोता गया
चौका – रसोई घर का फर्श नील – नीला
सिल – रसोई घर में मसाला पीसने के काम आने वाला पत्थर
गौर – गोरी झिलमिल – चमकती हुई

वस्तुनिष्ठ प्रश्न—

1. 'उषा' कविता में है –
(अ) सूर्योदय का वर्णन (ब) सूर्यास्त का वर्णन
(स) बादलों का शब्द चित्र (द) सवेरे की लालिमा का वर्णन ( )

2. 'जादू टूटता है उषा का' में जादू का अर्थ है –
(अ) तमाशा (ब) खेल
(स) आकर्षण (द) भोर का सौन्दर्य ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

1. भोर का आकाश किसके समान नीला था ?
2. कवि ने नभ को राख से लीपा हुआ चौका क्यों कहा है ?
3. उषा का जादू टूटने का क्या तात्पर्य है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'लाल केसर' तथा 'लाल खडिया चाक' के माध्यम से कवि क्या व्यक्त करना चाहता है ?
2. 'उषा' कविता में कवि का क्या संदेश है ?
3. 'उषा' कविता की प्रमुख शिल्पगत विशेषता क्या है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निबंधात्मक प्रश्न –

1.शमशेर बहादुर सिंह की ''उषा'' कविता का प्रकृति वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. नील जल में या किसी की .... सूर्योदय हो रहा है।

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय –7

आत्म–परिचय, एक गीत : हरिवंश राय बच्चन

जन्म – सन् 1907 ई.
मृत्यु – सन् 2003 ई.

हालावाद के प्रवर्तक हरिवंश राय बच्चन उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवि रहे हैं। वे अपनी काव्य–यात्रा के प्रारम्भिक दौर में मध्ययुगीन फ़ारसी कवि उमर खय्याम के जीवन–दर्शन से बहुत प्रभावित रहे। उमर खय्याम की रुबाइयों से प्रेरित उनकी प्रसिद्ध कृति मधुशाला को कवि–मंच पर जबरदस्त लोकप्रियता मिली। कवि की विलक्षण प्रतिभा इश्क, मोहब्बत, पीड़ा जैसी रूमानियत से भरी हुई थी। वे परस्पर झगड़ने के बजाय प्यार को महत्त्व देते थे।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं – मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल–अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए पुराने झरोखे तथा टूटी–फूटी कड़ियाँ। इनके चार आत्मकथा खण्ड हैं– क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर तथा दशद्वार से सोपान तक। इनके द्वारा लिखित 'प्रवासी की डायरी' तथा अनुवाद ग्रंथ हैमलेट, जनगीता व मैकबेथ भी लोकप्रिय रहे।

यहाँ संगृहीत उनकी कविता आत्मपरिचय अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का बोध कराती है। सुख–दुःख को समभाव से स्वीकारते हुए जगजीवन से जुड़े रहकर जीने में ही आनन्द है। कवि स्नेह–सुरा का पान करके अपनी मस्ती में जीवन का गान गाता है। संसार की मौजों में मस्तभाव से बहना कवि को भाता है। अपनी मस्ती में वह नित नए जग का निर्माण करता है। दीवानगी का आलम यह है कि उसे अपने रुदन में भी नये राग, नये छंद का आभास होता है। जो अपने आपको पूरी तरह पहचान लेता है उसके लिए यहाँ वहाँ सर्वत्र मस्ती ही मस्ती होती है।

आत्म–परिचय

मैं जग–जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।

मैं स्नेह–सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते ,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

मैं निज उर के उदगार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न भाता मुझको,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख–दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव–सागर तरने को नाव बनाए,
मैं मन–मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय! किसी की याद लिए फिरता हूँ।

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं हैं, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना।।

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना–बना कितने जग रोज़ मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता।

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिसपर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खँडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना;
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना।

मैं दीवानों का वेश किये फिरता हूँ,
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ;
जिसको सुनकर जग झूम उठे लहराए,
मैं मस्ती का सन्देश लिए फिरता हूँ।।

शब्दार्थ—

जग जीवन का भार – सांसारिक उत्तरदायित्व, जिम्मेदारियाँ

झंकृत – संगीत के सुर निकलना,	स्नेह–सुरा – प्रेम की शराब
पान – पीना,	उद्‌गार – भाव,
दहा – जला,	उपहार – भेंट
उन्माद –मस्ती, पागलपन	अवसाद – दुख, निराशा
वैभव – ऐश्वर्य,	राग – गीत,
प्रासाद – महल,	निछावर – परित्याग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न—

1. 'साँसों के दो तार' प्रतीक है –
   (अ) जीवन (ब) जिज्ञासा
   (स) विवशता (द) उपेक्षा ( )
2. 'दिन का पंथी' में अलंकार है –
   (अ) उपमा (ब) रूपक
   (स) उत्प्रेक्षा (द) अनुप्रास ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न—

1. कवि ने जीवन के लिए किसे आवश्यक माना है ?
2. कवि स्नेह–सुरा का पान कैसे करता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'निज के उद्‌गार और उपहार' से कवि का क्या तात्पर्य है ?स्पष्ट कीजिए।
2. 'शीतल वाणी में आग' – के होने का क्या अभिप्राय है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. कवि ने स्वयं को दीवाना क्यों कहा है ?
4. 'मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ'' कहने से कवि का क्या आशय है ?

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. ''मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ .... भाग लिए फिरता हूँ।'' प्रस्तुत पद की व्याख्या करो।
2. ''मैं दीवानों का .... लिए फिरता हूँ।'' प्रस्तुत पद की व्याख्या करो।

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 8

कविता के बहाने, बात सीधी थी पर : कुँवर नारायण

जन्म – सन् 1927 ई.

नई कविता आन्दोलन के प्रमुख कवि कुँवर नारायण का नाम तीसरे तारसप्तक (1959 ई.) के अग्रगण्य कवियों में लिया जाता है। वे अपनी रचनाशीलता में इतिहास और मिथक के माध्यम से वर्तमान को देखते हैं।

उनका रचना–संसार व्यापक है। 1950 के आस–पास काव्य–लेखन की शुरुआत करने वाले कुँवर नारायण ने कविता के साथ साथ कहानियाँ, लेख व फिल्म समीक्षाएँ भी लिखीं। उनका कहना है– ''कविता मेरे लिए कोई भावुकता की हाय–हाय न होकर यथार्थ के प्रति एक प्रौढ़ प्रतिक्रिया की मार्मिक अभिव्यक्ति है।''

उनके प्रमुख कविता–संग्रह हैं – चक्रव्यूह, परिवेश :हम तुम, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं व इन दिनों। आत्मजयी तथा वाजश्रवा के बहाने उनके दो खण्ड काव्य हैं। आकारों के आसपास इनका कहानी संग्रह है। इनके अलावा आज और आज से पहले नामक समीक्षा ग्रंथ भी लिखा।

पाठ्य पुस्तक में संकलित कविता 'कविता के बहाने' भौतिकता एवं यांत्रिकता के दौर में कविता की महत्ता को दर्शाती है। कविता की उड़ान सीमातीत है। कविता का खिलना, उसकी महक भी सीमातीत है। बच्चों के असीम सपनों की तरह कविता का दायरा भी असीम है। जहाँ भी सृजनात्मक ऊर्जा होती है वहाँ सीमाओं के दायरे स्वतः टूट जाते हैं।

दूसरी कविता 'बात सीधी थी पर'भाषा की सहजता पर बल देती है। ज्यादा घुमावदार भाषा के चक्कर में कभी कभी सीधी बात भी उलझकर अग्राह्य बन जाती है। अच्छी बात या अच्छी कविता का सृजन सही व सहज शब्द से जुड़ना ही है।

कविता के बहाने

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर , उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने !
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने ?

कविता एक खेल है बच्चों के बहाने
बाहर भीतर
यह घर , वह घर
सब घर एक कर देने के माने
बच्चा ही जाने।

बात सीधी थी पर

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेढ़ी फँस गई ।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए–
लेकिन इससे भाषा के साथ साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई ।

सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाय
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्यों कि इस करतब पर मुझे
साफ सुनायी दे रही थी
तमाशाबीनों की शाबाशी और वाह वाह ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी ।

हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया ।
ऊपर से ठीकठाक
पर अन्दर से
न तो उसमें कसाव था
न ताकत ।
बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी,
मुझे पसीना पोंछती देख कर पूछा –
"क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ?"

शब्दार्थ–

चक्कर – उलझन	टेढ़ी फँसना – उलझ जाना
पेचीदा – पेंच के समान	बेतरह – अनावश्यक ढंग से
चूड़ी – प्रभाव	तमाशबीन – तमाशा देखने वाले
सहुलियत – सुविधा	बरतना – प्रयोग करना
कसाव – पकड़	पसीना पोंछना – परेशान होना

भाषा में बेकार घूमना – बात का आशय स्पष्ट न होना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'कविता के बहाने' कविता की तुलना किससे सार्थक मानी गई है –
   (अ) चिड़िया की उड़ान (ब) फूल का खिलना
   (स) बच्चे का खेलना (द) इनमें से कोई नहीं ( )
2. 'करतब' शब्द में है –
   (अ) प्रशंसा (ब) निन्दा
   (स) व्यंग्य (द) उपेक्षा ( )

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने' – का क्या अभिप्राय है ?
2. 'सब घर एक कर देने के माने बच्चा ही जाने' – का क्या आशय है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'कविता के बहाने' शीर्षक कविता का उद्देश्य क्या है ?
2. बिना मुरझाए कौन महकता है तथा क्यों ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भाषा के चक्कर में सीधी बात टेडी हो जाती है। समझाइए।
2. "कविता एक खेल है .... बच्चा ही जाने।" पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. "आखिरकार वही हुआ .... उसी जगह ठोंक दिया।" प्रस्तुत पद की व्याख्या कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 9

मेरा नया बचपन : सुभद्राकुमारी चौहान

जन्म – 1904 ई.
देहावसान– 1948 ई.

अपने समय की लोकप्रिय कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म प्रयाग में हुआ था तथा उनकी आरम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। साहित्य के प्रति उनकी रुचि बचपन से ही थी तथा 5 वर्ष की आयु में उन्होंने पहली कविता लिखी थी। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की तथा कई बार जेल भी गयीं। वे साहित्य और राजनीति में समान रूप से सफल रहीं।

मूलतः वे कवयित्री थीं तथा उनकी कविताओं में दो प्रवृत्तियाँ प्रमुख रूप से देखने को मिलती हैं—प्रथम राष्ट्रीय भावना की तो द्वितीय घरेलू जीवन की। उनकी राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त कविताओं पर समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रप्रेम तथा संस्कृति की गहरी छाप मिलती है। उनमें काव्य प्रतिभा नैसर्गिक थी इसलिए उनकी काव्य शैली की प्रमुख विशेषता यह है कि वे जटिल–से–जटिल विषय को सहज और सरल शब्दों में व्यक्त कर देती हैं। भाव और अभिव्यक्ति का इतना गहरा तादात्म्य बहुत कम रचनाकारों में मिलता है। इसलिए कोई भी भाव उनकी कविता में आरोपित नहीं लगता। बुन्देलखण्ड में गाये जाने वाले लोकगीत के छंद में 'झाँसी की रानी' जैसी ओजस्वी कविता उनकी प्रतिभा और दृष्टि दोनों की परिचायक है। इसीलिए अंग्रेज सरकार ने इस कविता को जब्त कर लिया था, पर यह लोगों को कंठस्थ थी। इस कविता की सरल किन्तु ओज भरी पंक्तियों ने हिन्दी भाषा–भाषी जनता को खूब प्रेरित किया था।

सुभद्राकुमारी चौहान ने कहानी और निबन्ध विधाओं में भी लिखा। 'बिखरे मोती' तथा 'उन्मादिनी' उनकी कहानियों के संकलन हैं। उनकी कहानियों में उदात्त आदर्शवाद को अभिव्यक्ति मिली है। सुभ्रदाकुमारी चौहान को उनकी कहानियों पर दो बार 'सेम्सरिया पुरस्कार' (हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से) मिला। उनके निबन्ध भी समसामयिक समस्याओं पर केन्द्रित हैं।

उनकी पहचान एक सजग कवयित्री के रूप में है जिसने राष्ट्रीय चेतना तथा हृदय की कोमल भावनाओं को सहजता से अभिव्यक्ति दी। शिल्प के लिए कोई विशेष आग्रह उनकी रचनाओं में नहीं मिलता।

'मेरा नया बचपन' कविता में जीवन की बाल्यावस्था को जिस सादगी और भाव प्रवणता के साथ सुभद्राकुमारी चौहान ने ढाला, वह उनकी विशिष्ट उपलब्धि है। बचपन को लेकर लिखी यह कविता अपनी तरह की दुर्लभ कविता है।

बचपन जीवन का सबसे सुन्दर समय होता है। जहाँ किसी प्रकार का तनाव नहीं होता। अपनी बेटी के साथ लेखिका का खोया हुआ बचपन पुनः लौट आता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मेरा नया बचपन

बार–बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।।
चिंता रहित खेलना–खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद।।
ऊँच–नीच का ज्ञान नहीं था, छूआ–छूत किसने जानी।
बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी।।
किए दूध के कुल्ले मैंने चूस अँगूठा सुधा पिया।
किलकारी किल्लोल मचा कर सूना घर आबाद किया।।
रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिलाते थे।
बड़े–बड़े मोती से आँसू जयमाला पहनाते थे।।
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़–पोंछ कर चूम–चूम कर गीले गालों को सुखा दिया।।
दादा ने चंदा दिखलाया नैन नीर–युत दमक उठे।
धुली हुई मुस्कान देखकर सबके चेहरे चमक उठे।।
वह सुख का साम्राज्य छोड़कर मैं मतवाली बड़ी हुई।
लुटी हुई, कुछ ठगी हुई–सी दौड़ द्वार पर खड़ी हुई।।
लाज भरी आँखें थीं मेरी, मन में उमंग रंगीली थी।
तान रसीली थी कानों में, मैं चंचल छैल छबीली थी।।
दिल में एक चुभन–सी थी, यह दुनिया अलबेली थी।
मन में एक पहेली थी मैं सबके बीच अकेली थी।।
मिला, खोजती थी जिसको हे बचपन! ठगा दिया तूने।
अरे जवानी के फँदे में मुझको फँसा दिया तूने।।
माना, मैंने, युवा काल का जीवन खूब निराला है।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का उदय मोहने वाला है।।
किंतु यह झंझट है भारी, युद्ध क्षेत्र संसार बना।
चिंता के चक्कर में पड़कर जीवन भी है भार बना।।
आजा बचपन एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली यह अपनी प्राकृत विश्रांति।।
वह भोली सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या आकर फिर मिटा सकेगा तू मेरे मन का संताप।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन–सी फूल उठी वह छोटी–सी कुटिया मेरी।।
माँ ओ! कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में मुझे खिलाने आई थी।।
पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर थी अह्लाद लालिमा, विजय गर्व था झलक रहा।
मैंने पूछा, यह क्या लायी?बोल उठी, ''माँ काओ।''
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से, मैंने कहा, ''तुम खाओ!''
पाया मैंने बचपन फिर से बचपन बेटी बन आया।।
उसकी मंजु मूर्ति देखकर मुझमें नवजीवन आया।
मैं भी उसके साथ खेलती–खाती हूँ, तुतलाती हूँ।।
मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।
जिसे खोजती थी बरसों से अब जाकर उसको पाया।।
भाग गया था मुझे छोड़कर वह बचपन फिर से आया।

शब्दार्थ –

बचपन – बाल्यावस्था	निर्भय – भयरहित	सुधा – अमृत
स्वच्छंद – बिना रोक टोक के	निराला – अनोखा	उमंग – उत्साह
आकांक्षा – इच्छा, अभिलाषा	पुरुषार्थ – प्रयोजन	निर्मल – स्वच्छ
अतुलित – जिसकी तुलना नहीं की जा सके		

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कवयित्री को बार–बार क्या याद आती है?

(अ) युवाकाल का जीवन (ब) बचपन की मधुर याद

(स) जीवन खूब निराला है (द) मन का संताप

2. बचपन में कवयित्री के रोने पर काम छोड़कर कौन आयी?

(अ) कवयित्री की सहेली (ब) कवयित्री की माँ

(स) कवयित्री की दादी (द) कवयित्री की बहन

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कवयित्री को बचपन में आँसू के मोती आज कैसे लगते है?
2. कवयित्री की बिटिया कवयित्री को क्या खिलाना चाह रही है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'किलकारी किल्लोल मचा कर सूना घर आबाद किया' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. 'नैन नीर–युत दमक उठे' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. 'मेरा नया बचपन' कविता का सारांश लिखिए।
2. जीवन में बचपन की क्या–क्या विशेषताएँ ऐसी हैं, जो हमें आज भी याद आती हैं?

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. 'ऊँच–नीच का ज्ञान नहीं .... सूना घर आबाद किया।' प्रस्तुत पद की व्याख्या कीजिए।
2. 'हुआ प्रफुल्लित हृदय ..... फिर से आया।' पद की व्याख्या कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 10

भय : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

लेखक परिचय –

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म सन् 1886 में हुआ। आचार्य शुक्ल हिंदी साहित्य के सर्वोत्कृष्ट गद्यकार हैं। उनका 'हिंदी साहित्य का इतिहास' अत्यंत प्रामाणिक ग्रंथ है। 'हिंदी शब्द सागर', 'भ्रमर गीत सार', 'जायसी ग्रंथावली', 'तुलसी साहित्य', आदि विविध ग्रंथों का उन्होंने संपादन किया। हिंदी की सैद्धांतिक समीक्षा के मानदण्डों की स्थापना के संदर्भ में शुक्ल जी का अप्रतिम योगदान रहा है। वे मूलतः आलोचक और विचारक थे। 1904 ई. से उनके निबंध 'सरस्वती' और 'आनन्द कादम्बिनी' आदि प्रमुख पत्रिकाओं में छपते रहे। प्रौढ़ निबंधों का संग्रह चिंतामणि भाग एक व दो प्रकाशित हुआ। चिंतामणि भाग 1 पर उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्राप्त हुआ।

'उत्साह', 'करुणा', 'क्रोध', 'श्रद्धा–भक्ति', 'लज्जा और ग्लानि', 'लोभ और प्रीति', 'घृणा', 'भय' आदि मनोविकारों संबंधी निबंधों में उनके मन और बुद्धि का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है। इन निबंधों के माध्यम से शुक्ल जी ने लोक की विविध परिस्थितियों के आचार–व्यवहार तथा अनेकानेक संघर्षों के बीच पड़े हुए मन की व्याख्या की है। सुख व दुःख की मूल प्रवृत्तियाँ ही जीवन को गतिशील बनाती हैं।

पाठ परिचय –

'भय' नामक मनोविकार दुःखात्मक संवर्ग का भाव है। मनुष्य जीवन में प्राणि जगत की सत्ता में सुख और दुःख मूल आधार हैं, मूल प्रवृत्ति हैं। शुक्लजी ने इस विचार–प्रधान निबंध में भय की अनुभूति को लोक–व्यवहार की दृष्टि से बड़ी सूक्ष्मता और विशदता से स्पष्ट किया है। जिस पर अपना वश न हो ऐसे कारण से पहुँचने वाले भावी अनिष्ट के निश्चय से जो दुःख होता है वह भय कहलाता है। छोटे बालक को, जिसमें यह निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती, भय कुछ भी नहीं होता। जब हमारी इंद्रियाँ दूर से आने वाली क्लेश कारिणी बातों का पता देने लगती हैं; तब हमारा अन्तःकरण भावी आपदा का निश्चय कराने लगता है; तब हमारा काम दुःख मात्र से नहीं चल सकता, बल्कि भागने या बचने की प्रेरणा करने वाले भय से चल सकता है।

इस प्रकार भाव या मनोविकार मानव जीवन के प्रेरक होते हैं। इनसे लोक कल्याण के व्यापक उद्देश्य की सिद्धि भी होती है। शुक्ल जी ने निबंध में भाव की केवल मनोवैज्ञानिक प्रामाणिकता ही सिद्ध नहीं की है, वरन् लोक व्यवहार और साहित्यिक अभिव्यक्ति के मध्य संगति भी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्थापित की है। कर्मक्षेत्र के चक्रव्यूह में जैसे सुखी होना प्रयत्न साध्य है वैसे ही निर्भय रहना भी। इस आवश्यकता से हम बच नहीं सकते।

मूल पाठ –

किसी आती हुई आपदा की भावना या दुःख के कारण के साक्षात्कार से जो एक प्रकार का आवेगपूर्ण अथवा स्तम्भ–कारक मनोविकार होता है उसी को भय कहते हैं। क्रोध दुःख के कारण पर प्रभाव डालने के लिए आकुल करता है और भय उसकी पहुँच से बाहर होने के लिए। क्रोध दुःख के कारण के स्वरूप–बोध के बिना नहीं होता। यदि दुःख का कारण चेतन होगा और यह समझा जाएगा कि उसने जान–बूझकर दुःख पहुँचाया है, तभी क्रोध होगा। पर भय के लिए कारण का निर्दिष्ट होना जरूरी नहीं; इतना भर मालूम होना चाहिए कि दुःख या हानि पहुँचेगी। यदि कोई ज्योतिषी किसी गँवार से कहे कि ''कल तुम्हारे हाथ–पाँव टूट जाएँगे'' तो उसे क्रोध न आएगा, भय होगा। पर उसी से यदि कोई दूसरा आकर कहे कि ''कल अमुक–अमुक तुम्हारे हाथ–पैर तोड़ देंगे'' तो वह तुरंत त्योरी बदल कर कहेगा कि ''कौन हैं हाथ–पैर तोड़ने वाले ? देख लूँगा।''

भय का विषय दो रूपों में सामने आता है – असाध्य रूप में और साध्य रूप में। असाध्य विषय वह है जिसका किसी प्रयत्न द्वारा निवारण असंभव हो या असंभव समझ पड़े। साध्य विषय वह है जो प्रयत्न द्वारा दूर किया या रखा जा सकता हो। दो मनुष्य एक पहाड़ी नदी के किनारे बैठे या आनंद से बातचीत करते चले जा रहे थे। इतने में सामने से भोर की दहाड़ सुनाई पड़ी। यदि वे दोनों उठकर भागने, छिपने या पेड़ पर चढ़ने आदि का प्रयत्न करें तो बच सकते हैं। विषय के साध्य या असाध्य होने की धारणा परिस्थिति की विशेषता के अनुसार तो होती ही है पर बहुत कुछ मनुष्य की प्रकृति पर भी अवलम्बित रहती है। क्लेश के कारण का ज्ञान होने पर उसकी अनिवार्यता का निश्चय अपनी विवशता या अक्षमता की अनुभूति के कारण होता है। यदि यह अनुभूति कठिनाइयों और आपत्तियों को दूर करने के अनभ्यास या साहस के अभाव के कारण होती है, तो मनुष्य स्तम्भित हो जाता है और उसके हाथ–पाँव नहीं हिल सकते। पर कड़े दिल का या साहसी आदमी पहले तो जल्दी डरता नहीं और डरता भी है तो संभल कर अपने बचाव के उद्योग में लग जाता है।

भय जब स्वभावगत हो जाता है तब कायरता या भीरुता कहलाता है और भारी दोष माना जाता है, विशेषतः पुरुषों में। स्त्रियों की भीरुता तो उसकी लज्जा के समान ही रसीकों के मनोरंजन की वस्तु रही है। पुरुषों की भीरुता की पूरी निंदा होती है। ऐसा जान पड़ता है कि पुराने जमाने से पुरुषों ने न डरने का ठेका ले रखा है। भीरुता के संयोजक अवयवों में क्लेश सहने की आवश्यकता और उसकी भाक्ति का अविश्वास प्रधान है। भात्रु का सामना करने से भागने का अभिप्राय यही होता है कि भागने वाला शारीरिक पीड़ा नहीं सह सकता तभी अपनी भाक्ति के द्वारा उस पीड़ा से अपनी भाक्ति का विश्वास नहीं रखता। यह तो बहुत पुरानी चाल की भीरुता हुई। जीवन के और अनेक व्यापारों में भी भीरुता दिखाई देती है। अर्थ हानि के भय से बहुत–से व्यापारी कभी–कभी किसी विशेष व्यवसाय में हाथ नहीं डालते, परास्त होने के भय से बहुत से पंडित कभी–कभी शास्त्रार्थ से

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मुँह चुराते हैं। इस प्रकार की भीरुता की तह में सहन करने की अक्षमता और अपनी भाक्ति का अविश्वास छिपा रहता है। भीरु व्यापारी में अर्थ हानि सहने की अक्षमता और अपने व्यवसाय कौशल पर अविश्वास तथा भीरु पंडित में मानहानि सहने की अक्षमता और अपने विद्या –बुद्धि–बल पर अविश्वास निहित है।

एक ही प्रकार की भीरुता ऐसी दिखाई पड़ती है जिसकी प्रशंसा होती है। वहाँ धर्म–भीरुता है। पर हम तो उसे भी कोई बड़ी प्रशंसा की बात नहीं समझते। धर्म से डरने वालों की अपेक्षा धर्म की ओर आकर्षित होने वाले हमें अधिक धन्य जान पड़ते हैं। जो किसी बुराई से यही समझकर पीछे हटते हैं कि उसके करने से अधर्म होगा, उसकी अपेक्षा वे कहीं श्रेष्ठ हैं जिन्हें बुराई अच्छी ही नहीं लगती। दुःख या आपत्ति की पूर्ण निश्चय न रहने पर उसकी संभावना–मात्र के अनुमान से जो आवेग–शून्य भय होता है, उसे आशंका कहते हैं। उसमें वैसी आकुलता नहीं होती। उसका संचार कुछ धीमा पर अधिक काल तक रहता है। घने जंगल से जाता हुआ यात्री चाहे रास्ते भर इस आशंका में रहे कि कहीं चीता मिल जाए, पर वहाँ बराबर चला चल सकता है। यदि उसे असली भय हो जाएगा तो वह या तो लौट जाएगा अथवा एक पैर आगे न रखेगा। दुखात्मक भावों में आशंका की वही स्थिति समझनी चाहिए जो सुखात्मक भावों में आशा की। अपने द्वारा कोई भयंकर काम किए जाने की कल्पना या भावना–मात्र से भी क्षणिक स्तम्भ के रूप में इस प्रकार के भय का अनुभव होता है। जैसे कोई किसी से कहे कि ''इस छत से कूद जाओ'' तो कूदना और न कूदना उसके हाथों में होते हुए भी वह कहेगा कि ''डर मालूम होता है।'' पर यह डर भी पूर्ण भय नहीं है।

क्रोध का अभाव दुःख के कारण पर डाला जाता है, इससे उसके द्वारा दुःख का निवारण यदि होता है तो सब दिन के लिए या बहुत दिनों के लिए। भय के द्वारा बहुत–सी अवस्थाओं में यह बात नहीं हो सकती। ऐसे सज्ञान प्राणियों के बीच जिनमें भाव बहुत काल तक संचित रहते हैं और ऐसे उन्नत समाज में जहाँ एक–एक व्यक्ति की पहुँच और परिचय का विस्तार बहुत अधिक होता है, प्रायः भय का फल भय के संचार–काल तक ही रहता है। जहाँ वह भय भूला कि आफत आई। यदि कोई क्रूर मनुष्य किसी बात पर आपसे बुरा मान गया और आपको मारने दौड़ा तो उस समय भय की प्रेरणा से आप भाग कर अपने को बचा लेंगे। पर संभव है कि उस मनुष्य का क्रोध जो आप पर था उसी समय दूर न हो, बल्कि कुछ दिन के लिए बैर के रूप में टिक जाए तो उसके लिए आपके सामने फिर आना कोई बड़ी बात नहीं होगी। प्राणियों की असभ्य दशा में ही भय से अधिक काम निकलता है, जबकि समाज का ऐसा गहरा संगठन नहीं होता है कि बहुत–से लोगों को एक–दूसरे का पता और उसके विषय में जानकारी रहती हो।

जंगली मनुष्यों के परिचय का विस्तार बहुत थोड़ा होता है। बहुत–सी ऐसी जंगली जातियाँ अब भी हैं, जिनमें कोई एक व्यक्ति 20–25 से अधिक आदमियों को नहीं जानता। अतः उसे 10–12 कोस पर ही रहने वाला यदि कोई जंगली मिले और मारने दौड़े तो वह भागकर उससे अपनी रक्षा उसी समय के लिए नहीं नहीं, बल्कि सब दिनों से कर सकता है। पर सभ्य, उन्नत और विस्तृत

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समाज में भय के द्वारा स्थायी रक्षा की उतनी संभावना नहीं होती। इसी से जंगली और असभ्य जातियों में भय अधिक होता है। जिससे वे भयभीत हो सकते हैं। उसी को वे श्रेष्ठ मानते हैं और उसी की स्तुति करते हैं। उसके देवी–देवता भय के प्रभाव से ही कल्पित होते हैं। किसी आपत्ति या दुःख से बचे रहने के लिए ही अधिकतर वे उसकी पूजा करते हैं। अति भय और भय कारक का सम्मान असभ्यता के लक्षण हैं। अशिक्षित होने के कारण अधिकांश भारतवासी भी भय के उपासक हो गए हैं। वे जितना सम्मान एक थानेदार का करते हैं, उतना किसी विद्वान का नहीं।

चलने–फिरने वाले बच्चों में, जिनमें भाव देर तक नहीं टिकते और दुःख परिहार का ज्ञान या बल नहीं होता, भय अधिक होता है। बहुत–से बच्चे तो किसी अपरिचित आदमी को देखते ही घर के भीतर भागते हैं। पशुओं में भी भय अधिक पाया जाता है। अपरिचित के भय में जीवन का कोई गूढ़ रहस्य छिपा जान पड़ता है। प्रत्येक प्राणी भीतरी आँख खुलते ही अपने सामने मानों एक दुःख–कारण पूर्ण संसार फैला हुआ पाता है जिसे क्रमशः कुछ अपने ज्ञान बल से और कुछ बाहुबल से थोड़ा–बहुत सुखमय बनाता चलता है। क्लेश और बाधा का ही सामान्य आरोप करते जीवन संसार में पैर रखता है। सुख और आनंद को वह सामान्य का व्यतिक्रम समझता है; विरल विशेष मानता है। इन विशेष से सामान्य की ओर जाने का साहस उसे बहुत दिनों तक नहीं होता। परिचय के उत्तरोत्तर अभ्यास के बल से अपने माता–पिता या नित्य दिखाई पड़ने वाले कुछ थोड़े–से और लोगों के ही संबंध में वह यह धारणा रखता है कि वे मुझे सुख पहुँचाते हैं और कष्ट न पहुँचाएँगे। जिन्हें वह नहीं जानता, जो पहले–पहल उसके सामने आते हैं, उनके पास वह बेधड़क नहीं चला जाता। बिल्कुल अज्ञात वस्तुओं के प्रति भी वह ऐसा ही करता है।

भय की इस वासना का परिहार क्रमशः होता चलता है। ज्यों–ज्यों वह नानारूपों से अभ्यस्त होता है त्यों–त्यों उसकी धड़क खुलती जाती है। इस प्रकार अपने ज्ञानबल, हृदयबल और शरीरबल की वृद्धि के साथ वह दुःख की छाया मानों हटाता चलता है। समस्त मनुष्य–जाति की सभ्यता के विकास का ही यही क्रम रहा है। भूतों का भय तो अब बहुत कुछ छूट गया है, पशुओं की बाधा भी मनुष्य के लिए प्रायः नहीं रह गई है; पर मनुष्य के लिए मनुष्य का भय बना हुआ है। इस भय के छूटने के लक्षण भी नहीं दिखाई देते। अब मनुष्यों के दुःख का कारण मनुष्य ही है। सभ्यता से अंतर केवल इतना ही पड़ा है कि दुःख–दान की विधियाँ बहुत गूढ़ और जटिल हो गई हैं। उसका क्षोभकारक रूप बहुत–से आवरणों के भीतर ढक गया है। अब इस बात की आशंका तो नहीं रहती है कि कोई जबरदस्ती आकर हमारे घर, खेत, बाग–बगीचे, रुपये–पैसे छीन न ले, पर इस बात का खटका रहता है कि कोई नकली दस्तावेजों, झूठे गवाहों और कानूनी बहसों के बल से इन वस्तुओं से वंचित न कर दे। दोनों बातों का परिणाम एक ही है।

सभ्यता की वर्तमान स्थिति में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से वैसा भय तो नहीं रहा जैसा पहले रहा करता था, पर एक जाति को दूसरी जाति से, एक देश को दूसरे देश से, भय के स्थायी कारण प्रतिष्ठित हो गए हैं। सबल और सबल देशों के बीच अर्थ–संघर्ष की, सबल और निर्बल देशों

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

के बीच अर्थ–शोषण की प्रक्रिया अनवरत चल रही है; एक क्षण का विराम नहीं है। इस सार्वभौम वणिग्वृत्ति से उसका अनर्थ कभी न होता यदि क्षात्रवृत्ति उसके लक्ष्य से अपना लक्ष्य अलग रखती। पर इस युग में दोनों का विलक्षण सहयोग हो गया है। वर्तमान अर्थोन्माद को शासन के भीतर रखने के लिए क्षात्रधर्म के उच्च और पवित्र आदर्श को लेकर छात्रसंघ की प्रतिष्ठा आवश्यक है।

जिस प्रकार सुखी होने का प्रत्येक प्राणी को अधिकार है, उसी प्रकार मुक्तातंक होने का भी। पर कर्म–क्षेत्र के चक्रव्यूह में पड़कर जिस प्रकार सुखी होना प्रयत्न–साध्य होता है उसी प्रकार निर्भय रहना भी। निर्भयता के संपादन के लिए दो बातें अपेक्षित हैं – पहली तो यह कि दूसरों के हमसे किसी प्रकार का भय या कष्ट न हो; दूसरी यह कि हमको कष्ट या भय पहुँचाने का साहस न कर सके। इनमें से एक का संबंध उत्कृष्ट शील से है और दूसरी का शक्ति और पुरुषार्थ से। इस संसार में किसी को न डराने से ही डरने की संभावना दूर नहीं हो सकती। साधु–से साधु प्रकृति वाले को क्रूर लोभियों से क्लेश पहुँचता है। अतः उसके प्रयत्नों को विफल या भय–संचार द्वारा रोकने की आवश्यकता से हम बच नहीं सकते।

शब्दार्थ –

निर्दिष्ट – नियत किया हुआ/ त्यौरी–टेढ़ी भृकुटी/ असाध्य–न होने योग्य, कठिन/ निवारण–हटाना, रोकना/ भीरुता–कायरता/ डरपोकपन/ अवयव–भाग, अंग/ आवेश–जोश, तैश/ सज्ञान–ज्ञान सहित/ विलक्षण–अनूठा/ संचित–एकत्रित/ व्यतिक्रम–बाधा, क्रम का उलटफेर/ विरल–बहुत कम, जो घना न हो, पतला/ अभ्यस्त–निपुण, जिसका अभ्यास किया गया हो/ क्षोभकारक–विचलित करने वाला/ दस्तावेज–व्यवहार संबंधी लेख/ आवरण–पर्दा, ढकना/ वणिग्वृत्ति–वैश्य वृत्ति/ क्षात्रवृत्ति–क्षत्रिय धर्म।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. दुःख या आपत्ति का पूर्ण निश्चय न होने पर कौन–सा मनोभाव उत्पन्न होता है ?
   (क) भय (ख) क्रोध
   (ग) लज्जा (घ) आशंका ( )
2. ''कल तुम्हारे हाथ–पाँव टूट जाएँगे'' ऐसा वाक्य सुनकर क्या अनुभूत होगा ?
   (क) क्रोध (ख) निराशा
   (ग) भय (घ) उत्साह ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. साहसी व्यक्ति कठिनाई में फँस जाने पर क्या करता है ?
2. भय क्या है ?
3. क्रोध और भय में क्या अंतर है ?
4. भय भीरुता में कब बदल जाता है ?
5. ऐसी कौन–सी भीरुता है, जिसकी प्रशंसा होती है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. आशंका और भय में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. व्यापारी द्वारा नया व्यापार शुरू न करने, पंडित का शास्त्रार्थ में भाग न लेने का मूल कारण क्या हो सकता है ?
3. भय की अधिकता किसमें रहती है ?
4. सभ्य और असभ्य प्राणियों के भय में क्या अंतर है ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. दुःख की छाया को हटाने के लिए व्यक्ति किन बलों का उपयोग करता है ? और कैसे?
2. सभ्यता से अंतर केवल इतना पड़ा है कि दुःख–दान की विधियाँ बहुत गूढ़ और जटिल हो गई हैं।'' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. भय के साध्य और असाध्य दोनों रूपों को सोदाहरण समझाइए।
4. मनुष्य के भय की वासना का परिहार कैसे होता है ?
5. निर्भयता के लिए शुक्ल जी ने क्या उपाय बताए हैं ?
6. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) 'धर्म से डरने.............अच्छी ही नहीं लगती।'
   (ख) 'भय नामक मनोविकार ....भय से चल सकता है।'

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय –11

बाज़ार दर्शन : जैनेंद्र कुमार

जन्म – सन् 1905 ई.
मृत्यु – सन् 1988 ई.

जैनेन्द्र कुमार को हिन्दी के मनोवैज्ञानिक कथा साहित्य का जन्मदाता कहा जाता है। उन्होंने हिन्दी उपन्यास और कहानियों को नयी दिशा दी। वे गंभीर चिंतक भी रहे हैं। गांधीवादी विचारधारा को उन्होंने गहराई से आपने आत्मसात किया है।

परख, अनाम स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्द्धन और मुक्तिबोध उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनके कहानी संग्रह हैं– वातायन, एक रात, दो चिड़िया, फाँसी, नीलम देश की राजकन्या तथा पाज़ेब। उनके विचार–प्रधान निबन्ध प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वादय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच–विचार तथा समय और हम उनकी बहुमुखी प्रतिभा के परिचायक हैं।

जीवन के प्रश्नों को सुलझाने में जैनेन्द्र की दृष्टि व्यापक रही है। मुंशी प्रेमचन्द ने उन्हें भारत का गोर्की कहकर महिमामण्डित किया था।

प्रस्तुत निबन्ध बाज़ार दर्शन में बढ़ती उपभोक्तावादी परम्परा एवं बाज़ारवाद पर गहरा मंथन किया गया है। लेखक यह मानता है कि बाज़ार हमारी आवश्यकता की पूर्ति के लिए है; यह विक्रेता और क्रेता दोनों के मन में संतोष व तृप्ति के भाव जगाता है; लेकिन उपभोक्तावादी परम्परा ने आज बाज़ार को अपनी आर्थिक सम्पन्नता के दंभ–प्रदर्शन का साधन बना दिया है। हम बिना आवश्यकता के अकारण ही बाज़ार से अनाप–शनाप वस्तुएँ खरीदते हैं तो इससे बाज़ार में कपट बढ़ता है, कृत्रिम अभाव बनता है और महंगाई बढ़ती है। आज ग्राहक और विक्रेता दोनों ही कपटपूर्ण व्यवहार से हमारे विनिमय और अर्थतंत्र को क्षति पहुँचा रहे हैं। आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह अर्थव्यवस्था के लिए घातक है। धन का दुरुपयोग व दम्भ हानिकारक है। बाज़ार हमारी संतुष्टि के लिए होता है न कि असंतोष, तृष्णा व ईर्ष्या–वृद्धि के लिए।

बाज़ार दर्शन

एक बार की बात कहता हूँ। मित्र बाज़ार गए तो थे कोई एक मामूली चीज लेने पर लौटे तो एकदम बहुत–से बंडल पास थे।

मैंने कहा – यह क्या?

बोले – यह जो साथ थीं।

उनका आशय था कि यह पत्नी की महिमा है। उस महिमा का मैं कायल हूँ। आदिकाल से इस विषय में पति से पत्नी की ही प्रमुखता प्रमाणित है। और यह व्यक्तित्व का प्रश्न नहीं, स्त्रीत्व का प्रश्न है। स्त्री माया न जोड़े, तो क्या मैं जोड़ूँ?फिर भी सच सच है और वह यह कि इस बात में पत्नी की ओट ली जाती है। मूल में एक और तत्त्व की महिमा सविशेष है। वह तत्त्व है मनीबेग, अर्थात् पैसे की गरमी या एनर्जी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पैसा पावर है। पर उसके सबूत में आस–पास माल–टाल न जमा हो तो क्या वह खाक पावर है! पैसे को देखने के लिए बैंक–हिसाब देखिए, पर पाल–असबाब मकान–कोठी तो अनदेखे भी दीखते हैं। पैसे की उस 'पर्चेजिंग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है।

लेकिन नहीं। लोग संयमी भी होते हैं। वे फ़िज़ूल सामान को फ़िज़ूल समझते हैं। वे पैसा बहाते नहीं हैं और बुद्धिमान होते हैं। बुद्धि और संयमपूर्वक वह पैसे को जोड़ते जाते हैं, जोड़ते जाते हैं। वह पैसे की पावर को इतना निश्चय समझते हैं कि उसके प्रयोग की परीक्षा उन्हें दरकार नहीं है। बस खुद पैसे के जुड़ा होने पर उनका मन गर्व से भरा फूला रहता है।

मैंने कहा – यह कितना सामान ले आए!

मित्र ने सामने मनीबेग फैला दिया, कहा – यह देखिए। सब उड़ गया, अब जो रेल–टिकट के लिए भी बचा हो!

मैंने तब तय माना कि और पैसा होता और सामान आता। वह सामान जरूरत की तरफ देखकर नहीं आया, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के अनुपात में आया है।

लेकिन ठहरिए। इस सिलसिले में एक और भी महत्त्व का तत्त्व है, जिसे नहीं भूलना चाहिए। उसका भी इस करतब में बहुत–कुछ हाथ है। वह महत्व है, बाज़ार।

मैंने कहा – यह इतना कुछ नाहक ले आए!

मित्र बोले – कुछ न पूछो। बाज़ार है कि शैतान का जाल है?ऐसा सजा–सजाकर माल रखते हैं कि बेहया ही हो जो न फँसे।

मैंने मन में कहा, ठीक। बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है?मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाज़ार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफी नहीं है। और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है। ओह!

कोई अपने को न जाने तो बाज़ार का यह चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े। विकल क्यों, पागल। असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है।

एक और मित्र की बात है। यह दोपहर के पहले के गए–गए बाज़ार से कहीं शाम की वापिस आए। आए तो खाली हाथ!

मैंने पूछा – कहाँ रहे?

बोले – बाज़ार देखते रहे।

मैंने कहा – बाज़ार को देखते क्या रहे?

बोले – क्यों?बाज़ार –

तब मैंने कहा – लाए तो कुछ नहीं!

बोले – हाँ। पर यह समझ न आता था कि न लूँ तो क्या? सभी कुछ तो लेने को जी होता था। कुछ लेने का मतलब था शेष सब–कुछ को छोड़ देना। पर मैं कुछ भी नहीं छोड़ना चाहता था। इससे मैं कुछ भी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नहीं ले सका।

मैंने कहा – खूब!

पर मित्र की बात ठीक थी। अगर ठीक पता नहीं है कि क्या चाहते हो तो सब ओर की चाह तुम्हें घेर लेगी। और तब परिणाम त्रास ही होगा, गति नहीं होगी, न कर्म।

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फ़ैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को जरूर सेंक मिल जाता है। पर इससे अभिमान की गिल्टी की ओर खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी?

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा–सा उपाय है। वह यह कि बाज़ार जाओ तो मन खाली न हो। मन खाली हो, तब बाज़ार न जाओ। कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाज़ार भी फैला–का–फैला ही रह जायगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाज़ार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ–न–कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाज़ार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

यहाँ एक अंतर चीन्ह लेना बहुत जरूरी है। मन खाली नहीं रहना चाहिए, इसका मतलब यह नहीं है कि वह मन बंद रहना चाहिए। जो बंद हो जायगा, वह शून्य हो जायगा। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। शेष सब अपूर्ण है। इससे मन बंद नहीं रह सकता। सब इच्छाओं का निरोध कर लोगे, यह झूठ है। और अगर 'इच्छानिरोधस्तपः' का ऐसा ही नकारात्मक अर्थ हो तो वह तप झूठ है। वैसे तप की राह रेगिस्तान को जाती होगी, मोक्ष की राह वह नहीं है। ठाट देकर मन को बंद कर रखना जड़ता है। लोभ का यह जीतना नहीं है कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो! यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार। आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा?और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दीखना बंद हो जायगा?क्या आँख बंद करके ही हम सपने नहीं लेते हैं?और वे सपने क्या चैन–भंग नहीं करते हैं?इससे मन को बंद कर डालने की कोशिश तो अच्छी नहीं। वह अकारथ है। यह तो हठवाला योग है। शायद हठ–ही–हठ है, योग नहीं है। इससे मन कृश भले हो जाय और पीला और अशक्त जैसे विद्वान का ज्ञान। वह मुक्त ऐसे नहीं होता। इससे वह व्यापक की जगह संकीर्ण और विराट् की जगह क्षुद्र होता है। इसलिए उसका रोम–रोम मूँदकर बंद तो मन को करना नहीं चाहिए। वह मन पूर्ण कब है?हम में पूर्णता होती तो परमात्मा से अभिन्न हम महाशून्य ही न होते?अपूर्ण हैं, इसी से हम हैं। सच्चा ज्ञान सदा इसी अपूर्णता के बोध को हम में गहरा करता है। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अतः उपाय कोई वही हो सकता है

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जो बलात् मन को रोकने को न कहे, जो मन को भी इसलिए सुने क्योंकि वह अप्रयोजनीय रूप में हमें नहीं प्राप्त हुआ है। हाँ, मनमानेपन की छूट मन को न हो, क्योंकि वह अखिल का अंग है, खुद कुल नहीं है।

पड़ोस में एक महानुभाव रहते हैं जिनको लोग भगत जी कहते हैं। चूरन बेचते हैं। यह काम करते, जाने उन्हें कितने बरस हो गए हैं। लेकिन किसी एक भी दिन चूरन से उन्होंने छः आने पैसे से ज्यादे नहीं कमाए। चूरन उनका आस–पास सरनाम है। और खुद खूब लोकप्रिय हैं। कहीं व्यवसाय का गुर पकड़ लेते और उस पर चलते तो आज खुशहाल क्या मालामाल होते! क्या कुछ उनके पास न होता! इधर दस वर्षों से मैं देख रहा हूँ, उनका चूरन हाथों–हाथ बिक जाता है। पर वह न उसे थोक देते हैं, न व्यापारियों को बेचते हैं। पेशगी आर्डर कोई नहीं लेते। बँधे वक्त पर अपनी चूरन की पेटी लेकर घर से बाहर हुए नहीं कि देखते–देखते छह आने की कमाई उनकी हो जाती है। लोग उनका चूरन लेने को उत्सुक जो रहते हैं। चूरन से भी अधिक शायद वह भगतजी के प्रति अपनी सद्भावना का देय देने को उत्सुक रहते हैं। पर छह आने पूरे हुए नहीं कि भगतजी बाकी चूरन बालकों को मुफ्त बाँट देते हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ है कि कोई उन्हें पच्चीसवाँ पैसा भी दे सके! कभी चूरन में लापरवाही नहीं हुई है, और कभी रोग होता भी मैंने उन्हें नहीं देखा है।

और तो नहीं, लेकिन इतना मुझे निश्चय मालूम होता है कि इन चूरनवाले भगतजी पर बाज़ार का जादू नहीं चल सकता।

कहीं आप भूल न कर बैठिएगा। इन पंक्तियों को लिखने वाला मैं चूरन नहीं बेचता हूँ। जी नहीं, ऐसी हलकी बात भी न सोचिएगा। न ही यह समझिएगा कि लेख के किसी भी मान्य पाठक से उस चूरन वाले को श्रेष्ठ बताने की मैं हिम्मत कर सकता हूँ। क्या जाने उस भोले आदमी को अक्षर–ज्ञान तक भी है या नहीं। और बड़ी बातें तो उसे मालूम क्या होंगी। और हम–आप न जाने कितनी बड़ी–बड़ी बातें जानते हैं। इससे यह तो हो सकता है कि वह चूरन वाला भगत हम लोगों के सामने एकदम नाचीज आदमी हो। लेकिन आप पाठकों की विद्वान् श्रेणी का सदस्य होकर भी मैं यह स्वीकार नहीं करना चाहता हूँ कि उस अपदार्थ प्राणी को वह प्राप्त है जो हम में से बहुत कम को शायद प्राप्त है। उस पर बाज़ार का जादू वार नहीं कर पाता। माल बिछा रहता है, और उसका मन अडिग रहता है। पैसा उससे आगे होकर भीख तक माँगता है कि मुझे लो; लेकिन उसके मन में पैसे पर दया नहीं समाती। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। ऐसे आदमी के आगे क्या पैसे की व्यंग्य–शक्ति कुछ भी चलती होगी?क्या वह शक्ति कुंठित रहकर सलज्ज ही न हो जाती होगी?

पैसे की व्यंग्य–शक्ति की सुनिए। वह दारुण है। मैं पैदल चल रहा हूँ कि पास ही धूल उड़ाती निकल गई मोटर। वह क्या निकली मेरे कलेजे को कौंधती एक कठिन व्यंग्य की लीक ही आर–से–पार हो गई। जैसे किसी ने आँखों में उँगली देकर दिखा दिया हो कि देखो, उसका नाम है मोटर, और तुम उससे वंचित हो! यह मुझे अपनी ऐसी विडंबना मालूम होती है कि बस पूछिए नहीं। मैं सोचने को हो आता हूँ कि हाय, ये ही माँ–बाप रह गए थे जिनके यहाँ मैं जन्म लेने को था! क्यों न मैं मोटरवालों के यहाँ हुआ! उस व्यंग्य में इतनी शक्ति है कि जरा में मुझे अपने सगों के प्रति कृतघ्न कर सकती है।

लेकिन क्या लोकवैभव की यह व्यंग्य–शक्ति उस चूरन वाले अकिंचित्कर मनुष्य के आगे चूर–चूर होकर ही नहीं रह जाती?चूर–चूर क्यों, कहो पानी–पानी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तो वह क्या बल है जो इस तीखे व्यंग्य के आगे ही अजेय ही नहीं रहता, बल्कि मानो उस व्यंग्य की क्रूरता को ही पिघला देता है?

उस बल को नाम जो दो; पर वह निश्चय उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता–फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं। मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखूँ और प्रतिपादन करूँ। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ; लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उसी बल को सच्चा बल मानकर बात की जाय तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।

एक बार चूरन वाले भगतजी बाज़ार चौक में दीख गए। मुझे देखते ही उन्होंने जय–जयराम किया। मैंने भी जयराम कहा। उनकी आँखें बंद नहीं थीं और न उस समय वह बाज़ार को किसी भाँति कोस रहे मालूम होते थे। राह में बहुत लोग, बहुत बालक मिले जो भगतजी द्वारा पहचाने जाने के इच्छुक थे। भगतजी ने सबको ही हँसकर पहचाना। सबका अभिवादन लिया और सबको अभिवादन किया। इससे तनिक भी यह नहीं कहा जा सकेगा कि चौक–बाज़ार में होकर उनकी आँखें किसी से भी कम खुली थीं। लेकिन भौंचक्के हो रहने की लाचारी उन्हें नहीं थी। व्यवहार में पसोपेश उन्हें नहीं था और खोए–से खड़े नहीं वह रह जाते थे। भाँति–भाँति के बढ़िया माल से चौक भरा पड़ा है। उस सबके प्रति अप्रीति इस भगत के मन में नहीं है। जैसे उस समूचे माल के प्रति भी उनके मन में आशीर्वाद हो सकता है। विद्रोह नहीं, प्रसन्नता ही भीतर है, क्योंकि कोई रिक्त भीतर नहीं है। देखता हूँ कि खुली आँख, तुष्ट और मग्न, वह चौक–बाजार में से चलते चले जाते हैं। राह में बड़े–बड़े फैन्सी स्टोर पड़ते हैं, पर पड़े रह जाते हैं। कहींभगत नहीं रुकते। रुकते हैं तो एक छोटी, पंसारी की दुकान पर रुकते हैं। वहाँ दो–चार अपने काम की चीज ली, और चले आते हैं। बाज़ार से हठ–पूर्वक विमुखता उनमें नहीं हैं; लेकिन अगर उन्हें जीरा और काला नमक चाहिए तो सारे चौक–बाज़ार की सत्ता उनके लिए तभी तक है, तभी तक उपयोगी है, जब तक वहाँ जीरा मिलता है। जरूरत–भर जीरा वहाँ से ले लिया कि फिर सारा चौक उनके लिए आसानी से नहीं के बराबर हो जाता है। वह जानते हैं कि जो उन्हें चाहिए वह है जीरा नमक। बस इस निश्चित प्रतीति के बल पर शेष सब चाँदनी चौक का आमंत्रण उन पर व्यर्थ होकर बिखरा रहता है। चौक की चाँदनी दाएँ–बाएँ भूखी–की–भूखी फैली रह जाती है, क्योंकि भगतजी को जीरा चाहिए वह तो कोने वाली पंसारी की दुकान से मिल जाता है और वहाँ से सहज भाव में ले लिया गया है। इसके आगे आस–पास अगर चाँदनी बिछी रहती है तो बड़ी खुशी से बिछी रहे, भगत जी उस बेचारी का कल्याण ही चाहते हैं।

यहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। ओर जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति–शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाज़ार का बाज़ाररूपन बढ़ाते हैं, जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी। इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई–भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे ग्राहक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक–दूसरे को ठगने की घात में हों। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दीखता है और यह बाजार का, बल्कि इतिहास का; सत्य माना जाता है। ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान–प्रदान नहीं होता; बल्कि शोषण होने लगता है। तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए बिडंबना है और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है, जो उसका शास्त्र बना हुआ है; वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा हैं। वह मायावी शास्त्र है। वह अर्थशास्त्र अनीति–शास्त्र है।

शब्दार्थ–

असबाब – सामान
दरकार – जरूरत
परिमित– सीमित
पेशगी – अग्रिम
नाचीज़ – महत्त्वहीन
दारुण –भयंकर
अकिंचित्कर – अर्थहीन
स्पृहा – इच्छा
पसोपेश – असमंजस

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. लेखक ने बाज़ार की असली कृतार्थता बताई है–
   (अ) अभाव जाग्रत करना।
   (ब) आवश्यकता के समय काम आना।
   (स) अधिकाधिक धन कमाना
   (द) अनाप–शनाप सामान खरीदना। ( )
2. भगतजी ने कभी चूरन बेचकर छह आने से ज्यादा नहीं कमाए, क्योंकि–
   (अ) उनका चूरन और अधिक नहीं बिकता था
   (ब) वे आधुनिक मार्केटिंग नहीं जानते थे
   (स) इससे अधिक परिश्रम वे नहीं कर सकते थे
   (द) वे संतोषी थे इसलिए और अधिक कमाना ही नहीं चाहते थे ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लेखक के अनुसार बाज़ार का जादू किस राह से काम करता है ?
2. लेखक ने किस समय बाज़ार न जाने की सलाह दी है ?
3. चूरन वाले भगतजी का जीवन हमें क्या शिक्षा देता है ?
4. पैसे की 'परचेज–पावर' से आप क्या समझते हैं ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1.जो लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं ? उनसे बाज़ार पर क्या प्रतिकूल असर पड़ता है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. हमें बाज़ार से वस्तुएँ खरीदते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. बाज़ार दर्शन निबन्ध में लेखक ने बाज़ार का सही उपयोग करने के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखने पर बल दिया है ?आप बाज़ार का सही उपयोग किस प्रकार करेंगे ?

2. उपभोक्तावाद से प्रभावित समाज में उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने के लिए आप क्या सुझाव देना चाहेंगे ?

भाषा–सम्बन्धी प्रश्न –

1. तिरस्कार शब्द तिरः+कार से बना है। यह विसर्ग सन्धि है। विसर्ग सन्धि के निम्न शब्दों का सन्धि विच्छेद कीजिए –

   भास्कर, पुरस्कार, निस्सार, निर्बल, निर्जन, वृहस्पति

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय –12

मजदूरी और प्रेम : सरदार पूर्ण सिंह

जन्म – सन् 1881 ई.
मृत्यु – सन् 1931 ई.

सरदार पूर्ण सिंह हिन्दी के मूर्धन्य निबन्धकार थे। हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू के मर्मज्ञ विद्वान सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों में हृदय के सच्चे उद्‌गार, आध्यात्मिकता व चमत्कारिकता की भरमार मिलती है। वे पेशे से शिक्षक होने के कारण अध्यापक पूर्ण सिंह के नाम से भी प्रसिद्ध थे।

सरदार पूर्ण सिंह ने हिन्दी में कुल छः निबन्ध लिखे जो इस प्रकार हैं– 'सच्ची वीरता', 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम', 'अमरीका का मस्ताना योगी वाल्ट विटमैन', 'कन्यादान' और 'पवित्रता'। अपने इन छः निबन्धों से ही सरदार पूर्ण सिंह जी ने हिन्दी गद्य साहित्य के क्षेत्र में अपना गौरवपूर्ण स्थान बना लिया है।

सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों में उदाहरण, दृष्टान्त व उद्‌बोधन शक्ति अत्यन्त प्रभावशाली हैं। विचारों की मौलिकता, भावों की गहनता, शैली की सजीवता और भाषा की शक्तिमत्ता की दृष्टि से उनके भावात्मक निबन्ध अद्वितीय हैं। चित्रात्मकता और प्रवाह पूर्णता इनका विशिष्ट गुण है। शब्द चयन में लाक्षणिकता का गुण विद्यमान है।

प्रस्तुत निबन्ध 'मजदूरी और प्रेम' में मेहनतकश लोगों के श्रम और उसके सच्चे मूल्य की विवेचना की गई है। किसान का खेती करना, गडरिये का भेड़ चराना या किसी मजदूर द्वारा किए गए कार्य का मूल्य केवल पैसे से नहीं आंका जा सकता। इन श्रमशील लोगों की साधना, महानता व त्याग का मूल्य उनके प्रति प्रेम व सम्मान व्यक्त करके ही चुकाया जा सकता है। हमारा यह कर्तव्य बनता है कि इनके प्रति श्रद्धा एवं स्नेह का भाव अपने हृदय में रखे।
ईश्वर के सच्चे प्रतिनिधि वही हैं जो कठोर श्रम करते हैं तथा सज्जनता और ईमानदारी से जीवन व्यतीत करते हैं।

मजदूरी और प्रेम

हल चलाने वाले का जीवन

हल चलाने वाले और भेड़ चराने वाले प्रायः स्वभाव से ही साधु होते हैं। हल चलाने वाले अपने शरीर का हवन किया करते हैं। खेत उनकी हवनशाला है। उनके हवनकुण्ड की ज्वाला की किरणें चावल के लंबे और सुफेद दानों के रूप में निकलती हैं। गेहूँ के लाल–लाल दाने इस अग्नि की चिनगारियों की डालियाँ–सी हैं। मैं जब कभी अनार के फूल और फल देखता हूँ तब मुझे बाग के माली का रुधिर याद आ जाता है। उसकी मेहनत के कण जमीन में गिरकर उगे हैं और हवा तथा प्रकाश की सहायता से मीठे फलों के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रूप में नजर आ रहे हैं। किसान मुझे अन्न में, फूल में, फल में आहुति देता हुआ सा दिखाई पड़ता है। कहते हैं, ब्रह्माहुति से जगत् पैदा हुआ है। अन्न पैदा करने में किसान भी ब्रह्मा के समान है। खेती उसके ईश्वरी प्रेम का केंद्र है। उसका सारा जीवन पत्ते–पत्ते में, फूल–फूल में, फल–फल में बिखर रहा है। वृक्षों की तरह उसका भी जीवन एक प्रकार का मौन जीवन है। वायु, जल, पृथ्वी, तेज और आकाश की निरोगता इसी के हिस्से में है। विद्या यह नहीं पढ़ा; जप और तप यह नहीं करता; सन्ध्या–वन्दनादि इसे नहीं आते; ज्ञान, ध्यान का इसे पता नहीं; मंदिर, मस्जिद, गिरजे से इसे कोई सरोकार नहीं; केवल साग–पात खाकर ही यह अपनी भूख निवारण कर लेता है। ठंडे चश्मों और बहती हुई नदियों के शीतल जल से यह अपनी प्यास बुझा लेता है। प्रातःकाल उठकर यह अपने हल–बैलों को नमस्कार करता है और हल जोतने चल देता है। दोपहर की धूप इसे भाती है। इसके बच्चे मिट्टी ही में खेल–खेलकर बड़े हो जाते हैं। इसको और इसके परिवार को बैल और गाँवों से प्रेम है। उनकी यह सेवा करता है। पानी बरसाने वाले के दर्शनार्थ आँखें नीले आकाश की ओर उठती हैं। नयनों की भाषा में यह प्रार्थना करता है। सायं और प्रातः, दिन और रात विधाता इसके हृदय में अचिन्तनीय और अद्‌भुत आध्यात्मिक भावों की वृष्टि करता है। यदि कोई इसके घर आ जाता है तो यह उनको मृदु वचन, मीठे जल और अन्न से तृप्त करता है। धोखा यह किसी को नहीं देता। यदि इसको कोई धोखा दे भी दे, तो इसका इसे ज्ञान नहीं होता; क्योंकि इसकी खेती हरी–भरी है; गाय इसकी दूध देती है; स्त्री इसकी आज्ञाकारिणी है; मकान इसका पुण्य और आनंद का स्थान है। पशुओं को चराना, नहलाना, खिलाना–पिलाना, उसके बच्चों की अपने बच्चों की तरह सेवा करना, खुले आकाश के नीचे उसके साथ रातें गुजार देना क्या स्वाध्याय से कम है?दया, वीरता और प्रेम जैसा इन किसानों में देखा जाता है, अन्यत्र मिलने का नहीं। गुरु नानक ने ठीक कहा है –''भोले भाव मिलें रघुराई'', भोले–भाले किसानों को ईश्वर अपने खुले दीदार का दर्शन देता है। उनकी फूस की छतों में से सूर्य और चंद्रमा छन–छनकर उनके बिस्तरों पर पड़ते हैं। ये प्रकृति के जवान साधु हैं। जब कभी मैं इन बे–मुकुट के गोपालों के दर्शन करता हूँ, मेरा सिर स्वयं ही झुक जाता है। जब मुझे किसी फकीर के दर्शन होते हैं तब मुझे मालूम होता है कि नंगे सिर, नंगे पाँव, एक टोपी सिर पर, एक लँगोटी कमर में, एक काली कमली कंधे पर, एक लंबी लाठी हाथ में लिए हुए गौवों का मित्र, बैलों का हमजोली, पक्षियों का हमराज, महाराजाओं का अन्नदाता, बादशाहों को ताज पहनाने और सिंहासन पर बिठाने वाला, भूखों और नंगों को पालने वाला, समाज के पुष्पोद्यान का माली और खेतों का वाली जा रहा है।

गड़रिये का जीवन

एक बार मैंने एक बुड्ढे गड़रिये को देखा। घना जंगल है। हरे–हरे वृक्षों के नीचे उसकी सुफेद ऊन वाली भेड़ें अपना मुँह नीचे किए हुए कोमल–कोमल पत्तियाँ खा रही हैं। गड़रिया बैठा आकाश की ओर देख रहा है। ऊन कातता जाता है। उसकी आँखों में प्रेम–लाली छाई हुई है। वह नीरोगता की पवित्र मदिरा से मस्त हो रहा है। बाल उसके सारे सुफेद हैं और क्यों न सुफेद हों?सुफेद भेड़ों का मालिक जो ठहरा। परन्तु उसके कपोलों से लाली फूट रही है। बरफानी देशों में वह मानो विष्णु के समान क्षीरसागर में लेटा है। उसकी प्यारी स्त्री उसके पास रोटी पका रही है। उसकी दो जवान कन्याएँ उसके साथ जंगल–जंगल भेड़ चराती घूमती हैं। अपने माता–पिता और भेड़ों को छोड़कर उन्होंने किसी और को नहीं देखा। मकान इनका

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बेमकान है, घर इनका बेघर हे, ये लोग बेनाम और बेपता हैं।

किसी के घर में न घर कर बैठना इस दारे फानी में।
ठिकाना बेठिकाना और मकाँ बर ला–मकाँ रखना।।

इस दिव्य परिवार को कुटी की जरूरत नहीं। जहाँ जाते हैं, एक घास की झोपड़ी बना लेते हैं। दिन को सूर्य, रात को तारागण इनके सखा हैं।

गड़रिये की कन्या पर्वत के शिखर के ऊपर खड़ी सूर्य का अस्त होना देख रही है। उनकी सुनहली किरणें इसके लिए लावण्यमय मुख पर पड़ रही हैं। यह सूर्य को देख रही है और वह इसको देख रहा है।

हुए थे आँखों के कल इशारे इधर हमारे उधर तुम्हारे।
चले थे अश्कों के क्या फवारे इधर हमारे उधर तुम्हारे।।

बोलता कोई भी नहीं। सूर्य उसकी युवावस्था की पवित्रता पर मुग्ध है और वह आश्चर्य के अवतार सूर्य की महिमा के तूफान में पड़ी नाच रही है।

इनका जीवन बर्फ की पवित्रता से पूर्ण और वन की सुगंधि से सुगंधित है। इनका मुख, शरीर और अंतःकरण सुफेद, इनकी बर्फ, पर्वत और भेड़ें सुफेद। अपनी सुफेद भेड़ों में यह परिवार शुद्ध सुफेद ईश्वर के दर्शन करता है।

जो खुदा को देखना हो तो मैं देखता हूँ तुमको।
मैं देखता हूँ तुमको जो खुदा को देखना हो।।

भेड़ों की सेवा ही इनकी पूजा है। जरा एक भेड़ बीमार हुई, सब परिवार पर विपत्ति आई। दिन–रात उसके पास बैठे काट देते हैं। उसे अधिक पीड़ा हुई तो इन सब की आँखें शून्य आकाश में किसी को देखने लग गईं। पता नहीं ये किसे बुलाती हैं। हाथ जोड़ने तक की इन्हें फुरसत नहीं। पर हाँ, इन सब की आँखें किसी के आगे शब्द–रहित संकल्प–रहित मौन प्रार्थना में खुली हैं। दो रातें इसी तरह गुजर गईं। इनकी भेड़ अब अच्छी है। इनके घर मंगल हो रहा है। सारा परिवार मिलकर गा रहा है। इतने में नीले आकाश पर बादल घिरे और झम–झम बरसने लगे। मानो प्रकृति के देवता भी इनके आनंद से आनंदित हुए। बूढ़ा गड़रिया आनंद–मत्त होकर नाचने लगा। वह कहता कुछ नहीं, रग–रग उसकी नाच रही है। पिता को ऐसा सुखी देख दोनों कन्याओं ने एक–दूसरे का हाथ पकड़कर पहाड़ी राग अलापना आरम्भ कर दिया। साथ ही धम–धम थम–थम नाच की उन्होंने धूम मचा दी। मेरी आँखों के सामने ब्रह्मानंद का समां बाँध दिया। मेरे पास मेरा भाई खड़ा था। मैंने उससे कहा – ''भाई, अब मुझे भी भेड़ें दो।'' ऐसे ही मूक जीवन से मेरा भी कल्याण होगा। विद्या को भूल जाऊँ तो अच्छा है। मेरी पुस्तकें खो जायँ तो उत्तम है। ऐसा होने से कदाचित् इस वनवासी परिवार की तरह मेरे दिल के नेत्र खुल जायँ और मैं ईश्वरीय झलक देख सकूँ। चन्द्र और सूर्य की विस्तृत ज्योति में जो वेदगान हो रहा है उसे इस गड़रिये की कन्याओं की तरह मैं सुन तो न सकूँ, परंतु कदाचित् प्रत्यक्ष देख सकूँ। कहते हैं, ऋषियों ने भी इनको देखा ही था, सुना न था। पंडितों की ऊटपटाँग बातों से मेरा जी उकता गया है। प्रकृति की मंद–मंद हँसी में ये अनपढ़ लोग ईश्वर के हँसते हुए ओंठ देख रहे हैं। पशुओं के अज्ञान में गंभीर ज्ञान छिपा हुआ है। इन लोगों के जीवन में अद्भुत आत्मानुभव भरा हुआ है। गड़रिये के परिवार की प्रेम–मजदूरी का मूल्य कौन दे सकता है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मजदूर की मजदूरी

आपने चार आने पैसे मजदूर के हाथ में रखकर कहा – ''यह लो दिन भर की अपनी मजदूरी।'' वाह क्या दिल्लगी है! हाथ, पाँव, सिर, आँखें इत्यादि सब के सब अवयव उसने आपको अर्पण कर दिए। ये सब चीजें उसकी तो थीं ही नहीं, ये तो ईश्वरीय पदार्थ थे। जो पैसे आपने उसको दिए वे भी आपके न थे। वे तो पृथ्वी से निकली हुई धातु के टुकड़े थे; अतएव ईश्वर के निर्मित थे। मजदूरी का ऋण तो परस्पर की प्रेम–सेवा से चुकता होता है। अन्न–धन देने से नहीं। वे तो दोनों ही ईश्वर के हैं। अन्न–धन वही बनाता है, जल भी वही देता है। एक जिल्दसाज ने मेरी एक पुस्तक की जिल्द बाँध दी। मैं तो इस मजदूर को कुछ भी न दे सका। परंतु उसने उम्र भर के लिए एक विचित्र वस्तु मुझे दे डाली। जब कभी मैंने उस पुस्तक को उठाया, मेरे हाथ जिल्दसाज के हाथ पर जा पड़े। पुस्तक देखते ही मुझे जिल्दसाज याद आ जाता है। वह मेरा आमरण मित्र हो गया है, पुस्तक हाथ में आते ही मेरे अंतःकरण में रोज भरतमिलाप का सा समां बँध जाता है।

गाढ़े की एक कमीज को एक अनाथ विधवा सारी रात बैठकर सीती है, साथ ही साथ वह अपने दुख पर रोती भी है –दिन को खाना न मिला। रात को भी कुछ मयस्सर न हुआ। अब वह एक–एक टाँके पर आशा करती है कि कमीज कल तैयार हो जायेगी; तब कुछ तो खाने को मिलेगा। जब वह थक जाती है तब ठहर जाती है। सुई हाथ में लिए हुए है, कमीज घुटने पर बिछी हुई है, उसकी आँखों की दशा उस आकाश की जैसी है जिसमें बादल बरसकर अभी–अभी बिखर गए हैं। खुली आँखें ईश्वर के ध्यान में लीन हो रही हैं। कुछ काल के उपरांत ''हे राम'' कहकर उसने फिर सीना शुरू कर दिया। इस माता और इस बहन की सिली हुई कमीज मेरे लिए मेरे शरीर का नहीं – मेरी आत्मा का वस्त्र है। इसका पहनना मेरी तीर्थ–यात्रा है। इस कमीज में उस विधवा के सुख–दुःख, प्रेम और पवित्रता के मिश्रण से मिली हुई जीवनरूपिणी गंगा की बाढ़ चली जा रही है। ऐसी मजदूरी और ऐसा काम – प्रार्थना, सन्ध्या और नमाज से क्या कम है?शब्दों से तो प्रार्थना हुआ नहीं करती। ईश्वर तो कुछ ऐसी ही मूक प्रार्थनाएँ सुनता है और तत्काल सुनता है।

प्रेम–मजदूरी

मुझे तो मनुष्य के हाथ से बने हुए कामों में उनकी प्रेममय पवित्र आत्मा की सुगंध आती है। राफेल आदि के चित्रित चित्रों में उनकी कला–कुशलता को देख इतनी सदियों के बाद भी उनके अंतःकरण के सारे भावों का अनुभव होने लगता है। केवल चित्र का ही दर्शन नहीं, किंतु साथ ही उसमें छिपी हुई चित्रकार की आत्मा तक के दर्शन हो जाते हैं; परन्तु यंत्रों की सहायता से बने हुए फोटो निर्जीव से प्रतीत होते हैं। उनमें और हाथ के चित्रों में उतना ही भेद है जितना कि बस्ती ओर श्मशान में।

हाथ की मेहनत से चीज में जो रस भर जाता है वह भला लोहे के द्वारा बनाई हुई चीज में कहाँ! जिस आलू को मैं स्वयं बोता हूँ, मैं स्वयं पानी देता हूँ, जिसके इर्द–गिर्द की घास–पात खोदकर मैं साफ करता हूँ उस आलू में जो रस मुझे आता है वह टीन में बंद किए हुए अचार मुरब्बे में नहीं आता। मेरा विश्वास है कि जिस चीज में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं, उसमें उसके हृदय का प्रेम और मन की पवित्रता सूक्ष्म रूप से मिल जाती है और उसमें मुर्दे को जिंदा करने की शक्ति आ जाती है। होटल में बने हुए भोजन यहाँ नीरस होते हैं क्योंकि वहाँ मनुष्य मशीन बना दिया जाता है; परंतु अपनी प्रियतमा के हाथ से बने हुए रूखे–सूखे भोजन में कितना रस होता है जिस मिट्टी के घड़े को कंधों पर उठाकर, मीलों दूर से उसमें मेरी प्रेममग्न

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रियतमा ठंडा जल भर लाती है, उस लाल घड़े का जल जब मैं पीता हूँ तब जल क्या पीता हूँ, अपनी प्रेयसी के प्रेमामृत को पान करता हूँ। जो ऐसा प्रेमप्याला पीता हो उसके लिए शराब क्या वस्तु है?प्रेम से जीवन सदा गदगद रहता है। मैं अपनी प्रेयसी की ऐसी प्रेम–भरी, रस–भरी, दिल–भरी सेवा का बदला क्या कभी दे सकता हूँ?

उधर प्रभात ने अपनी सुफेद किरणों से अँधेरी रात पर सुफेदी–सी छिटकाई इधर मेरी प्रेयसी, मैना अथवा कोयल की तरह अपने बिस्तर से उठी। उसने गाय का बछड़ा खोला; दूध की धारा से अपना कटोरा भर लिया। गाते–गाते अन्न को अपने हाथों से पीसकर सुफेद आटा बना लिया। इस सुफेद आटे से भरी हुई छोटी–सी टोकरी सिर पर; एक हाथ में दूध से भरा हुआ लाल मिट्टी का कटोरा, दूसरे हाथ में मक्खन की हाँड़ी। जब मेरी प्रिया घर की छत के नीचे इस तरह खड़ी होती है तब वह छत के ऊपर की श्वेत प्रभा से भी अधिक आनन्ददायक, बलदायक, बुद्धिदायक जान पड़ती है। उस समय वह उस प्रभा से अधिक रसीली, अधिक रँगीली, जीती–जागती, चैतन्य और आनन्दमयी प्रातःकालीन शोभा–सी लगती है। मेरी प्रिया अपने हाथ से चुनी हुई लकड़ियों को अपने दिल से चुराई हुई एक चिनगारी से लाल अग्नि में बदल देती है। जब वह आटे को छलनी से छानती है तब मुझे उसकी छलनी के नीचे एक अद्‌भुत ज्योति की लौ नजर आती है। जब वह उस अग्नि के ऊपर मेरे लिए रोटी बनाती है तब उसके चूल्हे के भीतर मुझे तो पूर्व दिशा की नभोलालिमा से भी अधिक आनन्ददायिनी लालिमा देख पड़ती है। यह रोटी नहीं, कोई अमूल्य पदार्थ है। मेरे गुरु ने इसी प्रेम से संयम करने का नाम योग रखा है। मेरा यही योग है।

मजदूरी और कला

आदमियों की तिजारत करना मूर्खों का काम है। सोने और लोहे के बदले मनुष्य को बेचना मना है। आजकल भाप की कलों का दाम तो हजारों रुपया है; परंतु मनुष्य कौड़ी के सौ–सौ बिकते हैं! सोने और चाँदी की प्राप्ति से जीवन का आनंद नहीं मिल सकता। सच्चा आनंद तो मुझे मेरे काम से मिलता है। मुझे अपना काम मिल जाय तो फिर स्वर्गप्राप्ति की इच्छा नहीं, मनुष्य–पूजा ही सच्ची ईश्वर–पूजा है। मंदिर और गिरजे में क्या रखा है? ईंट, पत्थर, चूना कुछ ही कहो – आज से हम अपने ईश्वर की तलाश मंदिर, मस्जिद, गिरजा और पोथी में न करेंगे। अब तो यही इरादा है कि मनुष्य की अनमोल आत्मा में ईश्वर के दर्शन करेंगे यही आर्ट है – यही धर्म है। मनुष्य और मनुष्य की मजदूरी का तिरस्कार करना नास्तिकता है। बिना काम, बिना मजदूरी, बिना हाथ के कला–कौशल के विचार और चिंतन किस काम के! सभी देशों के इतिहासों से सिद्ध है कि निकम्मे पादरियों, मौलवियों, पण्डितों और साधुओं का, दान के अन्न पर पला हुआ ईश्वर–चिंतन अंत में पाप, आलस्य और भ्रष्टाचार में परिवर्तित हो जाता है। जिन देशों में हाथ और मुँह पर मजदूरी की धूल नहीं पड़ने पाती वे धर्म और कला–कौशल में कभी उन्नति नहीं कर सकते। पद्‌मासन निकम्मे सिद्ध हो चुके हैं। वही आसन ईश्वर–प्रप्ति करा सकते हैं जिनसे जोतने, बोने, काटने और मजदूरी का काम लिया जाता है। लकड़ी, ईंट और पत्थर को मूर्तिमान करने वाले लुहार, बढ़ई, मेमार तथा किसान आदि वैसे ही पुरुष हैं जैसे कवि, महात्मा और योगी आदि। उत्तम से उत्तम और नीच से नीच काम, सबके सब प्रेम–शरीर के अंग हैं।

निकम्मे रहकर मनुष्यों की चिन्तन–शक्ति थक गई है। बिस्तरों और आसनों पर सोते और बैठे–बैठे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मन के घोड़े हार गए हैं। सारा जीवन निचुड़ चुका है। स्वप्न पुराने हो चुके हैं। आजकल की कविता में नयापन नहीं। उसमें पुराने जमाने की कविता की पुनरावृत्ति मात्र है। इस नकल में असल की पवित्रता और कुँवारेपन का अभाव है। अब तो एक नए प्रकार का कला–कौशलपूर्ण संगीत–साहित्य संसार में प्रचलित होने वाला है। यदि वह न प्रचलित हुआ तो मशीनों के पहियों के नीचे दबकर हमें मरा समझिए। यह नया साहित्य मजदूरों के हृदय से निकलेगा। उन मजदूरों के कंठ से यह नई कविता निकलेगी जो अपना जीवन आनंद के साथ खेत की मेड़ों का, कपड़े के तागों का, जूते के टाँकों का, लकड़ी की रगों का, पत्थर की नसों का भेदभाव दूर करेंगे। हाथ में कुल्हाड़ी, सिर पर टोकरी, नंगे सिर और नंगे पाँव, धूल से लिपटे और कीचड़ से रंगे हुए ये बेजबान कवि जब जंगल में लकड़ी काटेंगे तब लकड़ी काटने का शब्द इनके असभ्य स्वरों से मिश्रित होकर वायुयान पर चढ़ दसों दिशाओं में ऐसा अद्‌भुत गान करेगा कि भविष्य के कलावन्तों के लिए वही ध्रुपद और मल्हार का काम देगा। चरखा कातने वाली स्त्रियों के गीत संसार के सभी देशों के कौमी गीत होंगे। मजदूरों की मजदूरी ही यथार्थ पूजा होगी। कलारूपी धर्म की तभी वृद्धि होगी। तभी नए कवि पैदा होंगे, तभी नए औलियों का उद्‌भव होगा। परंतु ये सब के सब मजदूरी के दूध से पलेंगे। धर्म, योग, शुद्धाचरण, सभ्यता और कविता आदि के फूल इन्हीं मजदूर–ऋषियों के उद्यान में प्रफुल्लित होंगे।

मजदूरी और फकीरी

मजदूरी और फकीरी का महत्व थोड़ा नहीं। मजदूरी और फकीरी मनुष्य के विकास के लिए परमावश्यक है। बिना मजदूरी किए फकीरी का उच्च भाव शिथिल हो जाता है; फकीरी भी अपने आसन से गिर जाती है; बुद्धि बासी पड़ जाती है। बासी चीजें अच्छी नहीं होतीं। कितने ही, उम्र भर बासी बुद्धि और बासी फकीरी में मग्न रहते हैं; परंतु इस तरह मग्न होना किस काम का?हवा चल रही है; जल बह रहा है; बादल बरस रहा है; पक्षी नहा रहे हैं; फूल खिल रहे हैं; घास नई, पेड़ नए, पत्ते नए – मनुष्य की बुद्धि और फकीरी ही बासी! ऐसा दृश्य तभी तक रहता है जब तक बिस्तर पर पड़े–पड़े मनुष्य प्रभात का आलस्य सुख मनाता है। बिस्तर से उठकर जरा बाग की सैर करो, फूल की सुगंध लो, ठंडी वायु में भ्रमण करो, वृक्षों के कोमल पल्लवों का नृत्य देखो तो पता लगे कि प्रभात–समय जागना बुद्धि और अंतःकरण को तरोताजा करना है और बिस्तर पर पड़े रहना उन्हें बासी कर देना है। निकम्मे बैठे हुए चिंतन करते रहना, अथवा बिना काम किए शुद्ध विचार का दावा करना, मानो सोते–सोते खर्राटे मारना है। जब तक जीवन के अरण्य में पादरी, मौलवी, पंडित और साधु–संन्यासी, हल, कुदाल और खुरपा लेकर मजदूरी न करेंगे तब तक उनका आलस्य जाने का नहीं, तब तक उनका मन और उनकी बुद्धि, अनन्त काल बीत जाने तक मलिन मानसिक जुआ खेलती ही रहेगी। उनका चिंतन बासी, उनका ध्यान बासी, उनकी पुस्तकें बासी, उनका लेख बासी, उनका विश्वास बासी और उनका खुदा भी बासी हो गया है। इसमें संदेह नहीं कि इस साल के गुलाब के फूल भी वैसे ही हैं जैसे पिछले साल के थे। परंतु इस साल वाले ताजे हैं। इनकी लाली नई है, इनकी सुगंध भी इन्हीं की अपनी है। जीवन के नियम नहीं पलटते; वे सदा एक ही से रहते हैं। परंतु मजदूरी करने से मनुष्य को एक नया और ताजा खुदा नजर आने लगता है।

गेरुए वस्त्रों की पूजा क्यों करते हो?गिरजे की घंटी क्यों सुनते हो? रविवार क्यों मनाते हो? पाँच वक्त की नमाज क्यों पढ़ते हो? त्रिकाल संध्या क्यों करते हो? मजदूर के अनाथ नयन, अनाथ आत्मा और

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनाश्रित जीवन की बोली सीखो। फिर देखोगे कि तुम्हारा यही साधारण जीवन ईश्वरीय भजन हो गया।

मजदूरी तो मनुष्य के समष्टि–रूप का व्यष्टि–रूप परिणाम है, आत्मा रूपी धातु के गढ़े हुए सिक्के का नकदी बयाना है, जो मनुष्यों की आत्माओं को खरीदने के वास्ते दिया जाता है। सच्ची मित्रता ही तो सेवा है। उससे मनुष्यों के हृदय पर सच्चा राज्य हो सकता है। जाति–पाँति, रूप–रंग और नाम–धाम तथा बाप–दादे का नाम पूछे बिना ही अपने–आपको किसी के हवाले कर देना प्रेम–धर्म का तत्व है। जिस समाज में इस तरह के प्रेम–धर्म का राज्य होता है उसका हर कोई हर किसी को बिना उसका नाम–धाम पूछे ही पहचानता है; क्योंकि पूछने वाले का कुल और उसकी जात वहाँ वही होती है जो उसकी, जिससे कि वह मिलता है। वहाँ सब लोग एक ही माता–पिता से पैदा हुए भाई–बहन हैं। अपने ही भाई–बहनों के माता–पिता का नाम पूछना क्या पागलपन से कम समझा जा सकता है? यह सारा संसार एक कुटुम्बवत् है। लँगड़े, लूले, अन्धे और बहरे उसी मौरूसी घर की छत के नीचे रहते हैं जिसकी छत के नीचे बलवान्, नीरोग और रूपवान् कुटुंबी रहते हैं। मूढ़ों और पशुओं का पालन–पोषण बुद्धिमान, सबल और नीरोग ही तो करेंगे। आनंद और प्रेम की राजधानी का सिंहासन सदा से प्रेम और मजदूरी के ही कंधों पर रहता आया है। कामनासहित होकर भी मजदूरी निष्काम होती है; क्योंकि मजदूरी का बदला ही नहीं। निष्काम कर्म करने के लिए जो उपदेश दिए जाते हैं उनमें अभावशील वस्तु सुभावपूर्ण मान ली जाती है। पृथ्वी अपने ही अक्ष पर दिन–रात घूमती है। यह पृथ्वी का स्वार्थ कहा जा सकता है। परंतु उसका यह घूमना सूर्य के इर्द–गिर्द घूमना तो है और सूर्य के इर्द–गिर्द घूमना सूर्यमंडल के साथ आकाश में एक सीधी लकीर पर चलना है। अन्त में, इसको गोल चक्कर खाना सदा ही सीधा चलना है। इसमें स्वार्थ का अभाव है। इसी तरह मनुष्य की विविध कामनाएँ उसके जीवन को मानो उसके स्वार्थरूपी धुरे पर चक्कर देती हैं; परन्तु उसका जीवन अपना तो है ही नहीं, वह तो किसी आध्यात्मिक सूर्यमंडल के साथ की चाल है और अन्ततः यह चाल जीवन का परमार्थ रूप है। स्वार्थ का यहाँ भी अभाव है, जब स्वार्थ कोई वस्तु ही नहीं तब निष्काम और कामनापूर्ण कर्म करना दोनों ही एक बात हुई। इसलिए मजदूरी और फकीरी का अन्योन्याश्रय संबंध है।

मजदूरी करना जीवनयात्रा का आध्यात्मिक नियम है। जोन ऑफ आर्क (Joan of Arc) की फकीरी और भेड़ें चराना, टाल्सटाय का त्याग और जूते गाँठना, उमर खैयाम का प्रसन्नतापूर्वक तंबू सीते फिरना, खलीफा उमर का अपने रंग महलों में चटाई आदि बुनना, ब्रह्मज्ञानी कबीर और रैदास का शूद्र होना, गुरु नानक और भगवान श्रीकृष्ण का मूक पशुओं को लाठी लेकर हाँकना – सच्ची फकीरी का अनमोल भूषण है।

शब्दार्थ–

निवारण – निवृत्ति, छुटकारा	दीदार – दर्शन
मुग्ध–मोहित	अलापना – बोलना
इर्द–गिर्द – आसपास	मौरूसी– पैतृक
ध्रुपद और मलार – संगीत के राग विशेष	गेरुए–जोगिया, भगवा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1.लेखक पूर्णसिंह ने किन–किन व्यक्तियों को साधु कहा है –

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(अ) शिक्षक व विद्यार्थी (ब) किसान व भेड़पालक

(स) मजदूर व व्यापारी (द) छात्र व नेता ( )

2.''उसे पीड़ा हुई तो इन सबकी आँखें शून्य आकाश की ओर देखने लगी।'' यहाँ लेखक ने 'उसे' सर्वनाम का प्रयोग किसके लिए किया है –

(अ) किसान (ब) गडरिया

(स) बीमार भेड़ (द) गरीब महिला ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1.''ऐसा काम प्रार्थना, संध्या और नमाज से क्या कम है ?'' लेखक ने किस काम की ओर संकेत किया है ?

2. लेखक जब अनार के फूल और फल देखता है तो उसे किसकी यादआती है ?

3.लेखक ने किसान को किसके समान बताया है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1.लेखक की दृष्टि में मजदूरी का भुगतान किस रूप में किया जाना चाहिए ?

2.लेखक ने किसे बेघर,बेनाम और बेपता कहा है और क्यों ?

3. लेखक को जिल्दसाज कब याद आता है और क्यों ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1.श्रम के महत्त्व पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

2.'किसान का जीवन त्याग और मेहनत का जीवन है।' इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

भाषा–सम्बन्धी प्रश्न –

जंगल–जंगल, माता–पिता, पुष्पोद्यान, हाथ–पाँव, आनन्दमग्न, मंद–मंद, आमरण, ब्रह्माहुति आदि सामासिक पद हैं। इनके समास–विग्रह कर समास का नाम भी लिखिए

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 13

सफल प्रजातंत्रवाद के लिए आवश्यक बातें : डॉ. भीमराव अम्बेडकर

जन्म – सन् 1891 ई.
मृत्यु – सन् 1956 ई.

भारतीय संविधान के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान देने वाले महान नेता डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म मध्यप्रदेश के एक छोटे से गाँव महू में हुआ। आपके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल और माता का नाम भीमाबाई था। कई सामाजिक और वित्तीय बाधाओं का मुकाबला करते हुए शैक्षिक उन्नति करते रहे और डॉक्टरेट तक की उपाधि प्राप्त की।

उन्होंने जातिगत भेदभाव का डटकर विरोध किया और समतामूलक समाज व प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना में विशेष योगदान दिया। स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री रहे तथा संविधान के प्रारूप को संसद में स्वीकृत कराया।

इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं–द कास्ट्स इन इंडिया,देयर मेकेनिज्म, जेनेसिस एंड डेवलपमेंट,द अनटचेबल्स, हू आर दे?, हू आर द शूद्राज, बुद्धा एंड हिज धम्मा, थाट्स ऑन लिंग्युस्टिक स्टेट्स, द प्रॉब्लम ऑफ़ द रुपी, द एबोलुशन ऑफ़ प्रोविंशियल फ़ायनांस इन ब्रिटिश इंडिया, द राइज एंड फ़ॉल ऑफ़ द हिंदू वीमैन ,एनीहिलेशन ऑफ़ कास्ट आदि। इनका सम्पूर्ण वाङ्मय भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय द्वारा 'बाबासाहब अम्बेड़कर सम्पूर्ण वाङ्मय' नाम से 21 खण्डों में प्रकाशित हो चुका है।

पाठ परिचय

पाठ्य पुस्तक में चयनित सफल प्रजातंत्रवाद के लिए आवश्यक बातें भाषण में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने परिपक्व राजनीतिक मंथन और भारत में लोकतंत्र की मज़बूती के लिए आवश्यक उपायों पर बेबाक विचार व्यक्त किए हैं। प्रजातंत्र में चुनी हुई सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह होना चाहिए तथा बहुमत को अल्पमत के प्रति अधिक संवेदनशील होने की जरूरत है। लेखक ने दूसरे देशों की स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्पराओं से प्रेरणा ग्रहण करने तथा भारत में विधायिकाओं में अधिक जवाबदेही व संयत चर्चा की आवश्यकता पर बल दिया है। डॉ. अम्बेडकर द्वारा प्रजातंत्र की सफलता हेतु दिए गए सुझाव आज भी प्रासंगिक हैं।

सफल प्रजातंत्रवाद के लिए आवश्यक शर्तें

यह स्वीकृत मत है कि प्रजातंत्रवादी शासन व्यवस्था में जो सत्तारूढ़ हैं, उन्हें प्रत्येक पांचवें वर्ष लोगों के पास जाना चाहिए और उनसे पूछना चाहिए कि क्या उनकी सम्मति में वे इस योग्य हैं कि उन्हें सत्तारूढ़ रहने दिया जाए ताकि वे उनके हितों का संरक्षण कर सकें, उनके सौभाग्य को बना सकें और

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उनकी आरक्षा कर सकें। प्रजातंत्र का केवल इतने से ही संतोष नहीं होता कि प्रत्येक पांचवें वर्ष सरकार की रोक–थाम की जा सके और इस बीच के समय में कोई सरकार को कुछ भी न कह–सुन सके। प्रजातंत्रवाद चाहता है कि न केवल पाँच वर्ष की समाप्ति पर सरकार का निषेध किया जा सके, बल्कि ऐसी भी व्यवस्था होनी चाहिए कि सरकार के विरुद्ध किसी भी समय और तुरन्त निषेधात्मक कार्रवाई की जा सके। अब यदि आपको मेरे कहने का आशय स्पष्ट हो तो प्रजातंत्रवाद का मतलब है कि किसी भी आदमी को सदैव शासन करते रहने का अधिकार नहीं। यह शासन करने का अधिकार लोगों की स्वेच्छा पर निर्भर करता है उस अधिकार को लोकसभा भवन में ही चेलेंज किया जा सकता है। आप देखे कि विरोधी पक्ष का होना कितना आवश्यक है। विरोधी पक्ष के होने का मतलब है कि सरकार हमेशा हथौड़े के नीचे रहती है। जो लोग सरकारी पार्टी में नहीं हैं, उन लोगों की दृष्टि में भी प्रत्येक सरकारी कार्य का औचित्य सिद्ध होना चाहिए। दुर्भाग्यवश हमारे देश में नाना कारणों से मेरी सम्मति में प्रधान कारण सरकारी विज्ञापनों से मिलने वाली आय हो सकती है– सरकारी पक्ष का कहीं ज्यादा प्रचार होता है। विरोधी पक्ष का बहुत कम। विरोधी पक्ष समाचारपत्रों के लिए किसी आय का साधन नहीं बन सकते। शासक दल के सदस्यों के भाषणों से समाचारपत्रों के अन्तिम पृष्ठों के भी अन्त में कहीं जाकर जगह पाते हैं। मैं प्रजातन्त्रवाद की आलोचना नहीं कर रहा हूँ। प्रजातन्त्रवाद की सम्यक् सफलता के लिए विरोधी पक्ष का होना एक अनिवार्य शर्त है।

क्या आप जानते हैं कि इंग्लैण्ड में विरोधी–पक्ष के लिए न केवल स्थान है, बल्कि विरोधी–पक्ष के कार्य को चालू रखने के लिए विरोधी–पक्ष के नेता को सरकारी खजाने से वेतन दिया जाता है। उसे एक सेक्रेटरी दिया जाता है। उसे कई सांकेतिक लेखक तथा दूसरे कर्मचारी दिये जाते हैं। लोकसभा भवन में उसके लिए पृथक् एक कमरा रहता है, जिसमें वह अपना कार्य चलाता है। इसी प्रकार आप देखेंगे कि कैनेडा में भी जिस प्रकार प्रधानमंत्री वेतन प्राप्त करता है उसी प्रकार विरोधी–पक्ष का नेता भी वेतन प्राप्त करता है। इन दोनों देशों के लोग सोचतें हैं–"कि कोई न कोई होना चाहिए जो सरकार की गलतियों की की ओर भी अंगुली निर्देश कर सके। वे चाहते हैं कि सरकारी गलतियाँ बताने का कार्य सतत निरन्तर होता रहना चाहिए। इसलिए वे विरोधी पक्ष के नेता पर रुपया खर्च करना बेकार नहीं समझते।

मैं समझता हूँ, कि एक तीसरी शर्त भी है जो प्रजातन्त्रवाद की सफलता की पूर्व–आवश्यकता है। वह यह है कि कानून तथा शासन की दृष्टि से सभी समान होने चाहिए। यद्यपि ऐसे छुटपुट अवसर गिनाए जा सकते हैं, जहाँ कानून की समान दृष्टि नहीं रही है, तो भी मैं नहीं समझता कि इस समय मुझे कानून की दृष्टि में समानता के बारे में कुछ बहुत अधिक कहना चाहिए; लेकिन शासन की दृष्टि में समानता की बात महत्त्वपूर्ण है। आपमें से बहुत से लोगों के लिए यह सम्भव है कि या तो ऐसी घटनाएं याद कर सकें, या ऐसी घटनाओं की कल्पना कर सकें जबकि शासनारूढ़ पार्टी अपनी पार्टी के सदस्यों के हित में ही शासन करती प्रतीत हुई हो। कुछ भी हो, मैं इस प्रकार की कितनी ही घटनाएं याद कर सकता हूँ। आप कल्पना करें कि एक कानून है जो कहता है कि कोई भी आदमी बिना लाइसेंस के किसी विशेष वस्तु का व्यापार नहीं कर सकता। क्योंकि कानून सबके लिए एक समान है, इसलिए कोई भी उस कानून पर आपत्ति नहीं उठा सकता। उस कानून विशेष में कहीं कुछ भी पक्षपात नहीं है; लेकिन हम एक कदम आगे जायें और देखें कि जब कोई आदमी किसी अफसर या मंत्री के पास किसी वस्तु–विशेष का व्यापार करने के लिए लाइसेंस माँगने जाता है। मैं नहीं जानता लेकिन लगता है कि एकदम सम्भव है। सम्भव है कि मिनिस्टर सबसे पहले

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उसकी टोपी की ओर देखे कि वह किस रंग की टोपी पहने हुए है?यदि वह ऐसी टोपी पहने हुए है कि जो उसे अच्छी लगती है तो उसे निश्चय हो जाता है कि वह उसकी पार्टी का आदमी है। अब एक दूसरा आदमी जाता है, जो दूसरी तरह की पोशाक पहने हुए है, या दूसरी पार्टी का है। वह मिनिस्टर पहले आदमी को लाइसेंस दे देता है, दूसरे को इन्कार कर देता है। शासन की दृष्टि में दोनों आदमी लाइसेंस लेने के समान रूप से अधिकारी हैं। किसी सुविधा विशेष का दिया–लिया जाना एक छोटी सी बात है और इसका प्रभाव सम्भवतः थोड़े से लोगों पर ही पड़ता है। अब हम एक कदम और आगे बढ़ें और देखे कि जब ऐसा भेदभाव शासन में प्रविष्ट हो जाता है तब क्या होता है? मान लीजिए कि किसी पार्टी के किसी सदस्य ने कोई अपराध किया है। उसके विरुद्ध काफी गवाही है। उस पर मुकदमा चल रहा है। अब उस इलाके में उस पार्टी का मुखिया मजिस्ट्रेट के पास जाता है और जाकर कहता है कि इस आदमी पर मुकदमा चलाना ठीक नहीं, क्योंकि यह पार्टी का आदमी है, या आगे बढ़कर यह भी कहता है–''यदि आप मेरी बात नहीं मानेंगे तो मैं इस बात की सूचना मिनिस्टर को दे दूंगा और यहाँ से आपका तबादला अन्यत्र करा दूंगा।'' आप कल्पना कर ही सकते हैं, कि इससे सारी शासन–व्यवस्था में अव्यवस्था और आपा–धापी का साम्राज्य हो जायेगा। किसी समय अमेरिका में यही हाल था। उस समय की शासन–पद्धति 'विकृत–पद्धति'के नाम से प्रसिद्ध है। जब एक पार्टी शासनारूढ़ होती थी तो पहली पार्टी द्वारा नियुक्त सभी कर्मचारियों को उनके पदों से पृथक् कर देती थी, यहाँ तक कि क्लर्कों और चपरासियों तक को भी निकाल बाहर किया जाता था। उन सबकी जगह नई पार्टी के नये आदमी नियुक्त किये जाते थे। वास्तव में काफी वर्षों तक अमेरिका में कहने–सुनने लायक किसी भी तरह की शासन–व्यवस्था नहीं थी। बाद में यह बात स्वयं उनकी समझ में आ गई कि प्रजातन्त्रवाद के हित में यह ठीक नहीं है। उन्होंने इस 'विकृत–पद्धति' को बदल दिया।

ताकि शासन–व्यवस्था शुद्ध बनी रहे, न्यायसंगत रहे, और राजनीति से दूर रहे, इसलिए इंगलैण्ड के लोगों ने 'राजनीतिक कार्यालय' और 'सिविल–कार्यालय' में भेद कर दिया है। 'सिविल–कर्मचारी' स्थायी रूप से बने रहतें हैं। कोई भी पार्टी शासनारूढ़ हो, यह सभी पार्टियों की आज्ञानुसार कार्य करने वाले होते हैं। इनके कार्य में कोई मिनिस्टर हस्तक्षेप नहीं करता। जब हमारे देश में ब्रिटेन के लोगों का शासन था, तो यहाँ भी यही बात प्रचलित थी। मुझे स्पष्ट रूप में एक अनुभव याद आ रहा है जो मुझे उस समय हुआ जब मैं 'गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया' का 'मेम्बर' था। आप ध्यान देंगे तो आप देखेंगे कि लगभग हर वाइसराय के नाम दिल्ली में कोई–न–कोई 'स्ट्रीट' या क्लब है। ऐसे एक ही वाइसराय या गवर्नर जनरल हैं, जिनके नाम पर कोई 'स्ट्रीट' या और कोई दूसरी संस्था नहीं है, और उस गवर्नर जनरल का नाम है लार्ड लिनलिथगो। उसका प्राइवेट सैक्रेटरी मेरा मित्र था। उस समय पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट मेरे पास था और ऐसे बहुत से काम थे जो मेरी ही देख–रेख में हो रहे थे। वह आया और धीरे से मुझे कहा–''मेरे प्रिय डॉक्टर! क्या आप लार्ड लिनलिथगो के नाम पर किसी संस्था या कार्य का नामकरण नहीं कर सकते?'' उसने कहा–'' यह बुरी तरह खटकता है कि सभी का नाम है। केवल उनका ही नाम नहीं है।''

मैंने कहा–''मैं विचार करूँगा'' । उन दिनों मैं जमुना के ऊपर एक बाँध बनवाने पर विचार कर रहा था, ताकि गरमी के मौसम में दिल्ली के लोगों को पानी का कष्ट न हो।क्योंकि गरमी के दिनों में नदी सूख जाती है। मैंने अपने सैक्रेटरी को, जिसका नाम एच.सी.परायर था और जो एक यूरोपियन था, कहा–''परायर महाशय! वायसराय के सैक्रेटरी ने मुझे यह बात कही है। क्या तुम समझते हो, कि इस सम्बन्ध में हम कुछ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कर सकते हैं?''

आप क्या समझते हैं कि उसने उत्तर दिया होगा। उसका जवाब था–''महोदय, हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए।'' आज मुझे लगता है कि किसी का ऐसा उत्तर देना असम्भवप्रायः है। मिनिस्टर की इच्छा के प्रतिकूल किसी अफसर का कुछ कहना, आज मुझे एकदम असम्भव लगता है; लेकिन उन दिनों यह सम्भव था क्योंकि ब्रिटेन की तरह हमने भी बुद्धिमतापूर्ण फैसला कर रखा था कि सरकार की शासन–व्यवस्था में दखल नहीं देना चाहिए। सरकार का काम है पॉलिसी या नीति तय कर देना। उसका यह काम नहीं कि शासन–व्यवस्था में हस्तक्षेप करे या पक्षपात से काम ले। यह बात महत्त्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि अब हम उस परम्परा से दूर हटते जा रहे हैं और कहीं ऐसा न हो कि हम इस मर्यादा का एकदम परित्याग कर दें।

मेरे मत के अनुसार प्रजातन्त्रवाद के सफल संचालन के लिए जो चौथी शर्त आवश्यक है वह है कि हम 'विधान–सम्बन्धी नैतिकता' का पालन करें। बहुत से लोगों के मन में विधान के लिए बड़ा उत्साह है। मैं उन लोगों में से हूँ जो वर्तमान विधान को एकदम फेंक देने के लिए तैयार हैं कम से कम नये सिरे से इसकी रचना करने के लिए। लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि हमारे विधान में कानूनी–व्यवस्था तो है, लेकिन जिस चीज को हम 'विधान–सम्बन्धी नैतिकता' कहते हैं, उसका अस्थि–पंजर मात्र है। इंगलैण्ड में यह बात विधान की मर्यादा कहलाती हैं और लोगों को खेल के नियमों का पालन करना ही चाहिए। एक–दो बातें जो इस समय मुझे याद आ रही हैं, मैं आपको बताऊँ। आपको याद होगा कि जब तेरह अमरीकी उपनिवेशों ने बगावत की, तो उस समय उनका नेता वाशिंगटन था। यह कहने से कि वाशिंगटन उनका 'नेता' था, अमरीकी जीवन में जो उसका वास्तविक स्थान था, हमें स्पष्ट नहीं होता। वाशिंगटन उनका 'देवता' था, वाशिंगटन उनका 'भगवान' था। यदि आप उसका जीवन–चरित्र और इतिहास पढ़ें तो आपको मालूम होगा कि विधान की रचना होने पर वाशिंगटन ही अमेरिका का प्रथम 'प्रेसिडेण्ट' चुना गया था।जब उसकी अवधि समाप्त हो गई, तो क्या हुआ? उसने दूसरी बार प्रेसिडेण्ट के पद के लिए खड़े होने से इंकार कर दिया। मुझे इसमें कुछ भी संदेह नहीं है कि यदि वाशिंगटन दस बार भी प्रेसिडेण्ट पद के लिए खड़ा हुआ होता तो वह हर बार सर्वसम्मति से निर्विरोध चुना जाता। लेकिन दूसरी बार उसने खड़ा होने से इंकार कर दिया। जब उससे इसका कारण पूछा गया तो उसका उत्तर था– ''प्रियवर! आप भूल गये हैं कि हमने इस विधान को किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बनाया है। हमने यह विधान इसलिए बनाया है कि हम कोई वंशपरम्परागत राजा नहीं चाहते थे, हम कोई पैतृक शासन नहीं चाहते थे। हम कोई अनन्य शासक या डिक्टेटर भी नहीं चाहते थे। यदि इंगलैण्ड के राजा की अधीनता त्याग कर, आप लोग इस देश में आकर भी, मुझको ही प्रतिवर्ष, प्रति कालविभाग अपना प्रेसिडेण्ट बनाये रहने लगे, मेरी ही पूजा करने लगे तो आपके सिद्धान्तों का क्या होगा? जब आप मुझे ही इंगलैण्ड के राजा का स्थानापन्न बना देते हैं, तब आप क्या कह सकते हैं कि आपने उसके अधिकार के प्रति विद्रोह किया है?'' उसने कहा–''आपका मेरे प्रति जो विश्वास है,जो भक्ति–भाव है उसके कारण आप चाहे मुझ पर दूसरी बार प्रेसिडेण्ट बनने के लिए दबाव डालने पर मजबूर हों, लेकिन जब मैंने ही इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है, कि हमें वंशानुगत शासन नहीं चाहिए, तो मुझे आपकी भक्ति–भावना के वशीभूत होकर भी दूसरी बार खड़ा नहीं होना चाहिए।'' अन्त में लोगों ने उन्हें कम–से –कम एक ही बार और खड़े होने के लिए राजी कर लिया। उन्होंने मान लिया; लेकिन जब तीसरी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बार, वे फिर आग्रह करने गए तो उसने धत्ता बता दिया।

मैं आपको एक दूसरा उदाहरण दूँ। आप आठवें एडवर्ड ड्यूक ऑफ विण्डसर को जानते हैं, जिनका सम्पूर्ण चरित्र क्रमशः 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में छपा है। मैं गोलमेज कॉन्फ्रेंस में गया था। उस समय वहाँ बड़ा भारी विवाद चल रहा था। प्रश्न यही था कि क्या राजा को अपनी पसन्द की किसी सामान्य स्थिति की औरत से शादी करने का अधिकार है, जबकि वह यह भी नहीं चाहता कि वह औरत 'रानी' मानी जाए, अथवा उसे इतनी भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं है और उसे ऐसा करने के लिए सिंहासन का त्याग ही करना पड़ेगा? श्री बाल्डविन बादशाह के उस औरत से शादी करने का विरोधी था। वह किसी तरह राजी नहीं हो सकता था। उसने कहा–''यदि तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो तुम्हें राजगद्दी छोड़ देनी पड़ेगी।'' हमारा मित्र चर्चिल आठवें एडवर्ड का मित्र था। वह उसे उत्साहित कर रहा था। उस समय मजदूर–दल विरोधी दल में था। उनका बहुमत न था। मुझे अच्छी तरह याद है कि मजदूर दल ने इस बात पर गम्भीरता से विचार किया था कि क्या यह अच्छा न होगा कि इसी बात को लेकर श्री बाल्डविन को हराने की कोशिश की जाय, क्योंकि राजा के प्रति वफादर होने के कारण अनुदार दल के बहुत से लोग उनका साथ देने के लिए तैयार हो सकते थे। लेकिन मुझे याद है कि स्वर्गीय प्रो. लास्की ने 'हेराल्ड' में कई लेख लिखकर मजदूर–दल के किसी ऐसे प्रयास की निन्दा की। उन्होंने कहा– ''हमारी यह परम्परागत मर्यादा है कि बादशाह को प्रधानमंत्री की सलाह माननी ही चाहिए। यदि हम इस प्रश्न को खड़ा करके श्री बाल्डविन को हरा देंगे तो ऐसा करना हमारी गलती होगी क्योंकि ऐसा करने से बादशाह को ही बल मिलेगा।'' मजदूर–दल ने उनकी सलाह मानी और कुछ नहीं किया।

यदि आप अंग्रेजों का इतिहास पढ़ें तो आपको ऐसे बहुत से उदाहरण मिलेंगे जब दल विशेष के नेता किसी एक गलत बात को लेकर अपने विपक्षी दल को कमजोर कर सकते थे; लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि वे जानते थे कि इससे उनके विधान को नुकसान पहुँचेगा और प्रजातन्त्र की हानि होगी।

प्रजातन्त्र की सफलता के लिए एक और बात है जो अत्यन्त आवश्यक है और वह यह है कि अल्पमत पर बहुमत का अत्याचार न हो। अल्पमत का हमेशा यह विश्वास बना रहना चाहिए कि यद्यपि शासन की बागडोर बहुमत के हाथ में है तो भी अल्पमत को हानि नहीं पहुँच रही है और अल्पमत पर कोई अनुचित प्रहार नहीं किया जा रहा है। यह एक ऐसी बात है कि जिसका ब्रिटेन की पार्लियामेंट में बहुत खयाल रखा जाता है। आपमें से काफी लोंगों को इंग्लैंड के 1831 के चुनावों के परिणाम याद होंगे। उस समय श्री रैमजे मैकडानल्ड ने मजदूर–दल से त्यागपत्र दे दिया था और एक 'राष्ट्रीय सरकार' की स्थापना की थी। चुनाव आया तो जिस मजदूर–दल के मैं समझता हूँ 150 सदस्य थे, 650 की कुल सदस्य संख्या में से केवल 50 रह गए। श्री बाल्डविन प्रधानमंत्री बने। तब मैं वहीं था; लेकिन मैंने एक बार भी कहीं यह नहीं सुना कि मजदूर–दल के इन 50 जनों के अल्पमत ने जो कि अनुदार दल के बहुमत की तुलना में बहुत ही अल्पमत था– कभी इस बात की शिकायत भी की हो, कि उन्हें उनके बोलने के उचित अधिकार से वंचित रखा गया या विरोध करने का अवसर नहीं दिया गया अथवा प्रस्ताव उपस्थित करने की सुविधा नहीं दी। अब जरा आप अपनी पार्लियामेंट की ओर देखें। यह जो विरोधी–पक्ष के लोग लगातार निन्दा का प्रस्ताव या कार्य स्थगित करने का प्रस्ताव लाते रहते हैं, मैं उसका समर्थन नहीं करता; लेकिन तब भी, आपने इस बात की ओर ध्यान दिया होगा कि चाहे निदा का प्रस्ताव हो, या चाहे कार्य स्थगित करने का प्रस्ताव हो, शायद

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ही कभी किसी प्रस्ताव पर विचार–विमर्श हुआ होगा। मुझे इससे काफी आश्चर्य हो रहा है। जब मैं ब्रिटेन की पार्लियामेंट के वाद–विवाद की रिपोर्ट पढ़ता हूँ तो मुझे एक अवसर नहीं दिखाई देता, जब अध्यक्ष ने किसी कार्य के स्थगित करने के प्रस्ताव पर विचार करने की अनुमति न दी हो। हाँ, यदि सरकारी आज्ञा ही हो, तो दूसरी बात है। जब मैं बम्बई विधानसभा का सदस्य था, तो हमारे मित्रों में से कुछ– श्री मोरारजी, श्री मुंशी तथा खरे और दूसरे कुछ लोग सत्तारूढ़ थे। उन्होंने एक भी बार किसी 'काम रोको' प्रस्ताव पर चर्चा नहीं होने दी। या तो हमारे मित्र श्री मावलंकर जो उस समय अध्यक्ष (स्पीकर)थे, उसे 'विधान–बाह्य' कहकर सहायक हो जाते थे, या जैसा उन्होंने स्वीकार किया, मिनिस्टर 'विरोध' कर देते थे। आप जानते हैं, कि जब एक मिनिस्टर 'विरोध' कर देता है, तब क्या करना होता है। जब एक मिनिस्टर 'विरोध' कर देता है, तो भी आदमी 'काम–रोको' प्रस्ताव लाता है, उसमें जो भी नियमित संख्या होती है, तदनुसार तीस या चालीस हस्ताक्षर उपस्थित करने पड़ते हैं। यह हो सकता है कि यदि सरकार इस बात का निश्चय कर ले, कि वह ऐसे सब 'काम रोको' प्रस्ताव, जो ऐसे लोगों की ओर से उपस्थित किये जाते हैं जो 4, 5, 6, जैसी अल्पसंख्या में लोकसभा के सदस्य हैं, तो अल्पमत रखने वाली जातियों या वर्गों को कभी भी ऐसा अवसर न मिलेगा कि वे अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कर सकें। इसका परिणाम क्या होता है?इन अल्पमतों में इस प्रकार की विधान विरोधी विद्रोही भावना पैदा होने लगती है। इसलिए यह आवश्यक है कि बहुमत कोई ऐसा काम न करे जिससे अल्पमत के प्रति उसका निरंकुश व्यवहार कहा जा सके।

मैं एक ही बात कहूँगा और उसके बाद अपना भाषण बन्द कर दूंगा। मैं समझता हूँ, कि प्रजातन्त्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि समाज नैतिक नियमों का पालन करे। कुछ ऐसा हुआ है कि राजनीतिशास्त्र के आचार्यों ने शायद प्रश्न के इस पहलू पर कभी विचार ही नहीं किया है। उनकी दृष्टि में 'नीतिपरायण' होना एक बात है और 'राजनीति' दूसरी। आप 'राजनीति' सीख सकते हैं, लेकिन 'नीति' के विषय में कोरे अज्ञानी बने रह सकते हैं, मानो 'राजनीति' बिना 'नीति' के ही सफल हो सकती हो। मुझे तो यह एक आश्चर्य में डालने वाली स्थापना मालूम देती है। तो प्रजातन्त्र में होता क्या है?हम एक स्वतंत्र सरकार में प्रजातंत्र की चर्चा प्रायः करते हैं। 'स्वतन्त्र सरकार' से हमारा क्या अभिप्राय होता है?इसका मतलब है कि जीवन के विशाल क्षेत्र में लोग बिना कानून के हस्तक्षेप के अपना रोज का कारोबार चला सकते हैं और यदि कानून बनाना पड़े तो कानून बनाने वाले का यह विश्वास है, कि वह समाज–विशेष इतना सदाचार–परायण अवश्य होगा कि उसमें उस कानून का पालन हो सके। जिस एक आदमी ने प्रजातंत्र के इस पहलू पर भी ध्यान दिया है, वह मैं समझता हूँ, कि लास्की महाशय हैं। अपने एक ग्रंथ में उन्होंने स्पष्ट लिखा है–" कि प्रजातंत्र में यह मानकर चला जाता है कि समाज नीतिपरायण है। यदि समाज नीतिपरायण न हो तो प्रजातन्त्रवाद टिका नहीं रह सकता, जैसा इस समय हमारे अपने देश में हो रहा है।"

अन्तिम बात, मेरे मत के अनुसार जिसके बिना प्रजातन्त्र का काम नहीं चल सकता, वह है कि लोगों में 'सार्वजनिक अन्तरात्मा' हो। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ–न–कुछ 'अन्याय' हर देश में होता है। लेकिन 'अन्याय' की मात्रा समान नहीं है। कुछ देशों में 'अन्याय' का प्रभाव बहुत अधिक है। कुछ ऐसे भी हैं जो 'अन्याय' के बोझ से एकदम पिसे जा रहे हैं। बिना किसी कठिनाई के हम इंग्लैण्ड के यहूदियों की बात ले सकते हैं। इन लोगों को कुछ ऐसे अन्यायों को सहन करना पड़ा है, जिन्हें ईसाइयों को कभी सहन नहीं करना पड़ा। इसका परिणाम यही हुआ कि इस अन्याय के विरुद्ध केवल यहूदी लोगों को ही संघर्ष करना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पड़ा। इंग्लैण्ड के ईसाइयों ने कभी मदद नहीं की। वास्तव में वे तो इसे पसन्द करते थे। वास्तविक बात तो यह है कि वह इस 'अन्याय' को पसन्द करते थे। इंग्लैण्ड के एक ही आदमी ने यहूदियों की सहायता की। वह आदमी इंग्लैण्ड का बादशाह था। यह बात असाधारण लगेगी; लेकिन इसका कारण भी असाधारण था, और वह यह था– पुराने ईसाई कानून के अनुसार कोई यहूदी बच्चा अपने मृत पिता की जायदाद का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता था। किसी और कारण से नहीं केवल एक इसी कारण से कि वह यहूदी था, ईसाई नहीं था। जो भी बची–खुची सम्पत्ति हो, राज्य की ओर से उसका हकदार राजा होने के कारण, वह सम्पत्ति राजा के अधिकार में चली जाती थी। राजा को यह सब अच्छा लगता था। वह प्रसन्न था। जब किसी मृत यहूदी की संतान अपना प्रार्थना पत्र लिए राजा के पास पहुँचती थी, तो राजा उनके मृत पिता की जायदाद में से थोड़ा सा कुछ उनको दे देता था और शेष अपने लिए रख लेता था; लेकिन जैसा मैंने कहा कि कभी किसी अंग्रेज ने यहूदियों की मदद नहीं की और यहूदियों को अपनी मुक्ति के लिए स्वयं संघर्ष करना पड़ा। 'सार्वजनिक अन्तरात्मा के होने या न होने का यह एक उदाहरण है। 'सार्वजनिकअन्तरात्मा' उस अन्तरात्मा को कह सकते हैं, कि जो हर अन्याय को देखकर विचलित हो उठती है। वह इस बात की परवाह नहीं करती कि उस अन्याय का शिकार किसे होना पड़ रहा है? इसका मतलब हुआ कि चाहे उसे व्यक्तिगत रूप से उन 'अन्याय'से कष्ट होता हो, या न होता हो, जो कोई भी उस 'अन्याय' का भाजन हो उसे उस 'अन्याय' से मुक्ति दिलाने के लिए उसके कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हो जाती है।

आप अफ्रीका का उदाहरण लें, एकदम ताजा उदाहरण। वहाँ जो लोग कष्ट पा रहे हैं वे 'भारतीय' हैं। क्या नहीं हैं? श्वेत चमड़ी वालों को कुछ असुविधा नहीं है। तो भी रेवरेण्ड स्काट– जो स्वयं श्वेत चमड़ी वाला है– इस 'अन्याय' के विरुद्ध अपनी पूरी ताकत खर्च कर रहा है। पिछले दिनों मैंने पढ़ा है कि बहुत से लड़के–लड़कियों ने जो स्वयं श्वेत जातियों के है–भी दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के संघर्ष में भाग लिया है। यही 'सार्वजनिक–अन्तरात्मा' कहलाती है। मैं कोई ऐसी बात नहीं कहना चाहता आपको व्यर्थ चोट पहुँचे। लेकिन कभी–कभी मैं सोचता हूँ कि हम कितने भुलक्कड़ हैं। हम दक्षिण अफ्रीका की चर्चा करते हैं। मैं अपने मन में सोचता रहा हूँ, कि हम जो दक्षिण अफ्रीका की पृथक्करण की नीति के विरुद्ध इतना बाय–बेला मचाते हैं, जानते हैं कि हमारे हर गाँव में दक्षिण अफ्रीका है। वह वहाँ है– हमें केवल जाकर उसे देखने की जरूरत है। हर गाँव में दक्षिण अफ्रीका है, लेकिन तब भी मैंने शायद ही किसी को देखा हो जो स्वयं 'दलित वर्ग' का न हो लेकिन तब भी 'दलित वर्ग' का पक्ष लेकर उठ खड़ा हो। क्यों?क्योंकि यहाँ 'सार्वजनिक अन्तरात्मा' नहीं है। यदि यही होता रहा तो हम 'अपने में और अपने भारत में' ही कैदी बने रहेंगे। अल्पमत वाले जो इस अन्याय के तले पिस रहे हैं, बहुमत वालों से कभी किसी प्रकार की सहायता न प्राप्त करेंगे, जिससे वे इस अन्याय से मुक्त हो सकेंगे। इन सबसे भी विद्रोह की भावना बढ़ती है, जिससे फिर प्रजातन्त्रवाद को खतरा पैदा हो जाता है।

जो कुछ मैंने कहा, वह कोई ऐसे पिटे–पिटाये स्थिर सिद्धान्त नहीं हैं, जिनका किसी राजनीति–शास्त्रज्ञ ने आविष्कार किया हो। भिन्न–भिन्न देशों के राजनीतिक इतिहासों का अध्ययन करने से मेरे अपने मन पर जो संस्कार पड़ा– यह सब उसी का चित्र–मात्र है।

मेरा विश्वास है कि 'प्रजातंत्र' को बनाये रखने के लिये ये अत्यन्त आवश्यक शर्तें हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ–

प्रजातंत्र– वह शासन पद्धति जिसमें प्रजा शासक चुनती है।

सत्तारूढ़ – शासन पर बैठे

संरक्षण –निगरानी, देखरेख

सैक्रेटरी – सचिव

प्रेसिडेण्ट – राष्ट्रपति

पार्लियामेण्ट – संसद

विचलित – चंचल, अस्थिर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1.लेखक के अनुसार प्रजातंत्र में किसी व्यक्ति को शासन करने का अधिकार तब तक है, जब तक कि–

(अ) वह स्वयं छोड़ना न चाहे (ब) पाँच वर्ष न हो जाय

(स) जब तक लोगों की इच्छा हो (द) अगले चुनाव न हो ( )

2.लेखक ने विरोधी पक्ष का महत्त्व माना है कि –

(अ) वह सरकार का विरोध करने के लिए होता है

(ब) वह सरकार की स्वेच्छाचारिता पर नियंत्रण हेतु होता है

(स) वह सरकार के कार्य में अड़चन के लिए होता है

(द) वह निष्क्रिय होता है ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सत्तारूढ़ से आप क्या समझते हैं ?

2. किसी समय सरकार बदलते ही सरकारी कर्मचारी बदलने अथवा हटा देने की परम्परा किस देश में थी ?

3.जब 13 अमेरिकी उपनिवेशों ने बगावत की तब उनका नेता कौन था ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1.जार्ज वाशिंगटन ने तीसरी बार अमेरिकी राष्ट्रपति बनने से इंकार क्यों कर दिया?

2.सार्वजनिक अन्तरात्मा से आप क्या समझते हैं?अम्बेडकरजी ने इसे किस प्रकार प्रजातंत्र की रक्षा के लिए आवश्यक बताया?

3. इंग्लैण्ड में विरोधी पक्ष के लिए क्या–क्या सहूलियत व सुविधाएँ हैं?

निबंधात्मक प्रश्न –

1.डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अनुसार सफल प्रजातंत्र के लिए किन–किन बातों पर ध्यान देना जरूरी है ?

2.भारत में प्रजातंत्र की कौन–कौनसी कमियाँ आपको नज़र आती हैं; इनके निराकरण के लिए आप क्या करना चाहेंगे ?

पाठ से आगे–

• पंचायती राज में प्रजातंत्र की प्रथम पाठशाला 'ग्राम–सभा' होती है। आप अपनी ग्राम–सभा, ग्राम–पंचायत, पंचायत समिति व जिला परिषद के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

•• राजस्थान में विधानसभा चुनाव किस प्रकार होता है ? आप वयस्क मताधिकार व मतदान का अधिकार के प्रति कितने जागरूक हैं ? चर्चा कर लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय – 14

ठेले पर हिमालय : धर्मवीर भारती

जन्म – सन् 1926 ई.
मृत्यु – सन् 1997 ई.

धर्मवीर भारती का जन्म अतारसुइया, इलाहाबाद में हुआ था। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने काव्य, उपन्यास, नाटक, कहानी, निबन्ध तथा आलोचना सभी विधाओं में सृजन किया। साप्ताहिक पत्रिका धर्मयुग का सम्पादन कर वे काफी लोकप्रिय हुए। इससे पूर्व भारती इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक व कुछ समय तक साप्ताहिक संगम के सम्पादक भी रह चुके थे।

उनकी रचनाओं में मध्यम वर्ग के जीवन–संघर्ष, भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम मूल्य तथा लोकजीवन की सजीव झाँकी मिलती है। उनकी मुख्य रचनाओं में गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा तथा ग्यारह सपनों का देश (उपन्यास), ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी व आद्यन्त (काव्य), मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग व बंद गली का आख़िरी मकान (कहानी संग्रह), अंधायुग (पद्य नाटक), ठेले पर हिमालय, कहनी अनकहनी व पश्यन्ती (निबंध संग्रह) प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त उन्होंने रेखाचित्र, आलोचना, एकांकी, नाटक, संस्मरण तथा यात्रा–विवरण विधा में भी उल्लेखनीय सृजन कर पाठकों का दिल जीता।

प्रस्तुत निबंध ठेले पर हिमालय में लेखक ने कौसानी के पर्वतीय क्षेत्र में हिमालय की प्राकृतिक छटा, शांति, स्तब्धता और बर्फीली चोटियों के नैसर्गिक सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन किया है। सोमेश्वर की घाटी में बसा कौसानी हमें स्विट्जरलैण्ड का आभास कराता है। ठेले पर लदी बर्फ की सिल्लियाँ देखकर कवि के स्मृति–पटल में कौसानी का वह स्वर्णिम सौन्दर्य सजीव हो उठता है जिसमें बादलों के बीच नीले आकाश की चाँदनी भरी रातें, केसरमय होती घाटी की संध्या और बर्फानी दिवस समस्त शाप, ताप, संघर्ष और अन्तर्द्वन्द्व से मुक्त करने वाले होते हैं। निबन्ध को पढ़ते हुए पाठक के चित्त में यह सौन्दर्य प्रत्यक्ष मूर्तिमान हो उठता है।

ठेले पर हिमालय

'ठेले पर हिमालय' –खासा दिलचस्प शीर्षक है न। और यकीन कीजिए, इसे बिलकुल ढूँढ़ना नहीं पड़ा। बैठे–बिठाये मिल गया। अभी कल की बात है, एक पान की दूकान पर मैं अपने एक गुरुजन उपन्यासकार मित्र के साथ खड़ा था कि ठेले पर बर्फ की सिलें लादे हुए बर्फ वाला आया। ठण्डे, चिकने चमकते बर्फ से भाप उड़ रही थी। मेरे मित्र का जन्म–स्थान अल्मोड़ा है, वे क्षण–भर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए–खोए से ही बोले, 'यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है।' और तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया, 'ठेले पर हिमालय'। पर आपको इसलिए बता रहा हूँ कि अगर आप नए कवि हों तो भाई, इसे ले जायें और इस शीर्षक पर दो–तीन सौ पंक्तियाँ, बेडौल, बेतुकी लिख डालें–शीर्षक मौजूँ है, और अगर नई कविता से नाराज हों, सुललित गीतकार हों तो भी गुंजाइश है, इस बर्फ को डाँटे, उतर आओ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ऊँचे शिखर पर बन्दरों की तरह क्यों चढ़े बैठे हो?ओ नये कवियो! ठेले पर लदो। पान की दूकानों पर बिको।

ये तमाम बातें उसी समय मेरे मन में आयीं और मैंने अपने गुरुजन मित्र को बतायीं भी। वे हँसे भी, पर मुझे लगा कि वह बर्फ कहीं उनके मन को खरोंच गई है और ईमान की बात यह है कि जिसने 50 मील दूर से भी बादलों के बीच नीले आकाश में हिमालय की शिखर–रेखा को चांद तारों से बात करते देखा है, चाँदनी में उजली बर्फ को धुँधली हलके नीले जाल में दूधिया समुद्र की तरह मचलते और जगमगाते देखा है, उसके मन पर हिमालय की बर्फ एक ऐसी खरोंच छोड़ जाती है जो हर बार याद आने पर पिरा उठती है। मैं जानता हूँ, क्योंकि वह बर्फ मैंने भी देखी है।

सच तो यह है कि सिर्फ बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हम लोग कौसानी गए थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी। कोसी से एक सड़क अल्मोड़े चली जाती है, दूसरी कौसानी। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नाम–निशान नहीं, सूखे–भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाये हुए टेढ़े मेढ़े रास्ते पर अल्मोड़े का एक नौसिखिया और लापरवाह ड्राइवर जिसने बस के तमाम मुसाफिरों की ऐसी हालत कर दी कि जब हम कोसी पहुँचे तो सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे। कौसानी जाने वाले सिर्फ हम दो थे, वहाँ उतर गए। बस अल्मोड़े चली गई। सामने के एक टीन के शेड में काठ की बेंच पर बैठकर हम वक्त काटते रहे। तबीयत सुस्त थी और मौसम में उमस थी। दो घण्टे बाद दूसरी लॉरी आकर रुकी और जब उसमें से प्रसन्न बदन शुक्ल जी को उतरते देखा तो हम लोगों की जान में जान आई। शुक्ल जी जैसा सफ़र का साथी पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है। उन्होंने हमें कौसानी आने का उत्साह दिलाया था और खुद तो कभी उनके चेहरे पर थकान या सुस्ती दीखी ही नहीं, पर उन्हें देखते ही हमारी भी सारी थकान काफूर हो जाया करती थी।

पर शुक्ल जी के साथ यह नई मूर्ति कौन है?लम्बा–दुबला शरीर, पतला–साँवला चेहरा, एमिल जोला–सी दाढ़ी, ढीला–ढाला पतलून, कंधे पर पड़ी हुई ऊनी जर्किन, बगल में लटकता हुआ जाने थर्मस या कैमरा या बाइनाकुलर। और खासी अटपटी चाल थी बाबूसाहब की। यह पतला–दुबला मुझ जैसा ही सींकिया शरीर और उस पर आपका झूमते हुए आना। मेरे चेहरे पर निरंतर घनी होती हुई उत्सुकता को ताड़कर शुक्ल जी ने कहा –"हमारे शहर के मशहूर चित्रकार हैं सेन, अकादमी से इनकी कृतियों पर पुरस्कार मिला है। उसी रुपए से घूमकर छुट्टियाँ बिता रहे हैं। थोड़ी ही देर में हम लोगों के साथ सेन घुल मिल गया, कितना मीठा था हृदय से वह! वैसे उसके करतब आगे चलकर देखने में आए।

कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल–कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे–छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी! हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे–छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी–कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं–कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी–मेढ़ी, ऊपर–नीचे रेंगती हुई कँकरीली पीठ वाले अजगर–सी सड़क पर धीरे–धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों–ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब–सी निराशा छाती जा रही थी–अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोह है। गांधी जी ने यहीं अनासक्ति योग लिखा था और कहा था कि स्विट्ज़रलैण्ड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी–कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों–ज्यों कौसानी नजदीक आता गया त्यों–त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अन्त में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर, झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा–सा, बिलकुल उजड़ा–सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम–निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति–सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रखी है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल–लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद–सफेद पत्थरों की कतार और इधर उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियों–सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँ, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात् हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए। धीरे धीरे मेरी निगाहों ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत और नदियाँ और वन, क्षितिज के धुँधलेपन में, नीले कोहरे में धुल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास अनुभव किया, उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं। कुछ देर उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात् फिर एक हलका–सा विस्मय का धक्का मन को लगा। इन धीरे–धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन चीज है जो अटल है। यह छोटा–सा बादल के टुकड़े–सा और कैसा अजब रंग है इसका, न सफेद, न रुपहला, न हलका नीला... पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या?बर्फ तो नहीं है। हाँ जी। बर्फ नहीं है तो क्या है?अकस्मात् बिजली–सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वतसम्राट हिमालय है, इन बादलों ने उसे ढाँक रखा है, वैसे वह क्या सामने है, उसका एक कोई छोटा–सा बाल स्वभाव वाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा, ''बरफ। वह देखों!'' शुक्ल जी, सेन, सभी ने देखा, पर अकस्मात वह फिर लुप्त हो गया। लगा, उसे बाल–शिखर जान किसी ने अंदर खींच लिया। खिड़की से झाँक रहा है, कहीं गिर न पड़े।

पर उस एक क्षण के हिम दर्शन ने हममें जाने क्या भर दिया था। सारी खिन्नता, निराशा, थकावट सब छूमन्तर हो गई। हम सब आकुल हो उठे। अभी ये बादल छँट जायेंगे और फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा–निरावृत्त... असीम सौंदर्यराशि हमारे सामने अभी–अभी अपना घूँघट धीरे से खिसका देगी और... और तब?और तब?सचमुच मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था। शुक्ल जी शांत थे, केवल मेरी ओर देखकर कभी–कभी मुस्करा देते थे, जिसका अभिप्राय था, 'इतने अधीर थे, कौसानी आया भी नहीं और मुँह लटका

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिया। अब समझे यहाँ का जादू?' डाक बँगले के खानसामे ने बताया कि, ''आप लोग बड़े खुशकिस्मत हैं साहब। 14 टूरिस्ट आकर हफ्ते भर पड़ रहे, बर्फ नहीं दीखी। आज तो आपके आते ही आसार खुलने के हो रहे हैं।''

सामान रख दिया गया। पर, सभी बिना चाय पिये सामने के बरामदे में बैठे रहे और एकटक सामने देखते रहे। बादल धीरे–धीरे नीचे उतर रहे थे और एक–एक कर नए–नए शिखरों की हिम–रेखाएँ अनावृत हो रही थीं। और फिर सब खुल गया। बाईं ओर से शुरू होकर दायीं ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिमशिखरों की ऊबड़–खाबड़, रहस्यमयी, रोमांचक श्रृंखला। हमारे मन में उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थीं यह अगर बता पाता तो यह खरोंच, यह पीर ही क्यों रह गई होती। सिर्फ एक धुँधला–सा संवेदन इसका अवश्य था कि जैसे बर्फ की सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठण्डी–ठण्डी भाप लगती है, वैसे ही हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है और सारे संघर्ष, सारे अंतर्द्वन्द्व,सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं। क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे शमित करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था। और अकस्मात् एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी–कितनी पुरानी है यह हिमराशि! जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ है। कुछ विदेशियों ने इसीलिए हिमालय की इस बर्फ को कहा है–चिरंतन हिम (एटर्नल स्नो)। सूरज ढल रहा था और सुदूर शिखरों पर दर्रे, ग्लेशियर, ढाल, घाटियों का क्षीण आभास मिलने लगा था। आतंकित मन से मैंने यह सोचा था कि पता नहीं इन पर कभी मनुष्य का चरण पड़ा भी है या नहीं या अनंत काल से इन सूने बर्फ ढँके दर्रों में सिर्फ बर्फ के अंधड़ हू–हू करते हुए बहते रहे हैं।

सूरज डूबने लगा और धीरे–धीरे ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी। बर्फ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी पीली हो गईं। अँधेरा होने लगा तो हम उठे और मुँह–हाथ धोने और चाय पीने में लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो जिसे अंदर ही अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों।

थोड़ी देर में चाँद निकला और हम फिर बाहर निकले... इस बार सब शांत था। जैसे हिम सो रहा हो। मैं थोड़ा अलग आरामकुर्सी खींचकर बैठ गया। यह मेरा मन इतना कल्पनाहीन क्यों हो गया है?इसी हिमालय को देखकर किसने–किसने क्या–क्या नहीं लिखा और यह मेरा मन है कि एक कविता तो दूर, एक पंक्ति, हाय, एक शब्द भी तो नहीं जानता। पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है इस हिमसम्राट के समक्ष। पर धीरे–धीरे लगा कि मन के अंदर भी बादल थे जो छँट रहे हैं। कुछ ऐसा उभर रहा है जो इन शिखरों की ही प्रकृति का है....कुछ ऐसा जो इसी ऊँचाई पर उठने की चेष्टा कर रहा है ताकि इनसे इन्हीं के स्तर पर मिल सके। लगा, यह हिमालय बड़े भाई की तरह ऊपर चढ़ गया है, और मुझे–छोटे भाई को–नीचे खड़ा हुआ, कुंठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है, स्नेह भरी चुनौती भी दे रहा है – हिम्मत है?ऊँचे उठोगे?

और सहसा सन्नाटा तोड़कर सेन रवींद्र की कोई पंक्ति गा उठा और जैसे तन्द्रा टूट गई। और हम सक्रिय हो उठे – अदम्य शक्ति, उल्लास, आनंद जैसे हम में छलक पड़ रहा था। सबसे अधिक खुश था सेन, बच्चों की तरह चंचल, चिड़ियों की तरह चहकता हुआ। बोला, ''भाई साहब, हम तो बंडरस्ट्रक हैं कि यह

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भगवान का क्या–क्या करतूत इस हिमालय में होता है। इस पर हमारी हँसी मुश्किल से ठण्डी हो पाई थी कि अकस्मात् वह शीर्षासन करने लगा। पूछा गया तो बोला, ''हम नए पर्सपेक्टिव से हिमालय देखेगा।'' बाद में मालूम हुआ कि वह बंबई की अत्याधुनिक चित्रशैली से थोड़ा नाराज है और कहने लगा, ''ओ सब जीनियस लोग शीर का बल खड़ा होकर दुनिया को देखता है। इसी से हम भी शीर का बल हिमालय देखता है।''

दूसरे दिन घाटी में उतरकर 12 मील चलकर हम बैजनाथ पहुँचे जहाँ गोमती बहती है। गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी। पता नहीं, उन शिखरों पर कब पहुँचूँ, पर उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भरकर भेंटा, उसमें डूबा रहा।

आज भी उसकी याद आती है तो मन पिरा उठता है। कल ठेले के बर्फ को देखकर वे मेरे मित्र उपन्यासकार जिस तरह स्मृतियों में डूब गए उस दर्द को समझता हूँ और जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हँसता हूँ तो वह उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है। वे बर्फ की ऊँचाइयाँ बार–बार बुलाती हैं, और हम हैं कि चौराहों पर खड़े, ठेले पर लदकर निकलने वाली बर्फ को ही देखकर मन बहला लेते हैं। किसी ऐसे ही क्षण में, ऐसे ही ठेलों पर लदे हिमालयों से घिरकर ही तो तुलसी ने नहीं कहा था ...कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो... मैं क्या कभी ऐसे भी रह सकूँगा वास्तविक हिमशिखरों की ऊँचाइयों पर?और तब मन में आता है कि फिर हिमालय को किसी के हाथ संदेशा भेज दूँ... नहीं बंधु... आऊँगा। मैं फिर लौट–लौट कर वहीं आऊँगा। उन्हीं ऊँचाइयों पर तो मेरा आवास है। वहीं मन रमता है... मैं करूँ तो क्या करूँ?

शब्दार्थ–

यक़ीन – विश्वास — सुललित – अत्यन्त सुन्दर

तमाम–सम्पूर्ण, पूरा — नौसिखिया– नव शिक्षित

सींकिया–सींक जैसा पतला — सुकुमार – कोमल

शमित – शांत किया हुआ — शिखर – पहाड़ की चोटी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1.नैनीताल से कोसी जाने वाली सड़क को लेखक ने कैसी बताया है–

(अ) सुन्दर–साफ़ व आरामदायक (ब) सीधी व सपाट

(स) ऊँची और मजेदार (द) ऊबड़–खाबड़ और कष्टप्रद ( )

2.शुक्लजी के साथ एमिल जोला–सी दाढ़ी वाला युवक कौन था–

(अ) कवि (ब) चित्रकार

(स) लेखक (द) संगीतकार ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लेखक का मित्र ठेले पर बर्फ देखकर खोया–खोया सा क्यों हो गया ?

2. लेखक ने किससे मिलने पर यह कहा कि उन जैसा साथी तो सफ़र में पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है ?

3.लेखक की सारी निराशा व खिन्नता कब दूर हुई ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1.त्रिताप कौन–कौन से होते हैं?हिमालय की शीतलता से वे कैसे दूर हो गए?

2.हिमालय के पर्वतीय सौन्दर्य में स्नोफाल किस प्रकार पर्यटकों को अधिक आकर्षित करता है ?

3. लेखक ने कौसानी गाँव में डूबते सूरज का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1.पर्वतीय क्षेत्रों के प्राकृतिक सौन्दर्य पर एक लेख लिखिए।

2.पर्यटन का हमारे जीवन में क्या महत्व है ?

भाषा की बात–

कुछ देर बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात् फिर एक हलका–सा विस्मय का धक्का मन को लगा ; यह एक मिश्र वाक्य है। मिश्र वाक्य किसे कहते हैं तथा यह कितने प्रकार से बनते हैं ?

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय — 15

तौलिये : उपेन्द्रनाथ अश्क

जन्म – सन् 1910 ई.
मृत्यु – सन् 1996 ई.

उर्दू में लेखन–यात्रा प्रारम्भ करने वाले उपेन्द्रनाथ अश्क हिन्दी में लेखन हेतु मुंशी प्रेमचन्द की प्रेरणा से अग्रसर हुए। राष्ट्रीय आन्दोलन के झंझावाती दौर में उनकी रचनाधर्मिता का विकास हुआ।

उन्होंने कहानी, काव्य, नाटक, एकांकी, संस्मरण, आलोचना एवं अनुवाद इन सभी विधाओं में भरपूर कलम चलाई। नाटक एवं एकांकी विधा को नये आयाम देने वाले अश्कजी ने जनजीवन में व्याप्त रूढ़िवादिता, जड़ता एवं आडम्बरों पर निर्ममतापूर्वक प्रहार करके मानसिक भावों व अन्तर्द्वन्द्वों का बखूबी चित्रण किया है।

उपेन्द्रनाथ अश्क की प्रमुख रचनाएँ हैं –गिरती दीवारें, शहर में घूमता आईना, गर्म राख, सितारों के खेल (उपन्यास), सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ, जुदाई की शाम के गीत, काले साहब, पिंजरा (कहानी संग्रह), लौटता हुआ दिन, बड़े खिलाड़ी, जय पराजय, स्वर्ग की झलक, भँवर (नाटक), अंधी गली, मुखड़ा बदल गया, चरवाहे (एकांकी संग्रह) एक दिन आकाश ने कहा, प्रातःप्रदीप, दीप जलेगा, बरगद की बेटी, उर्म्मियाँ (काव्य) मंटो मेरा दुश्मन, फिल्मी जीवन की झलकियाँ (संस्मरण) अन्वेषण की सहयात्रा तथा हिन्दी कहानी : एक अंतरंग परिचय (आलोचना) आदि।

प्रस्तुत एकांकी तौलिये में शिष्टाचार, सभ्यता व तहज़ीब के नाम पर फैल रहे आडम्बर व खोखलेपन को बखूबी अभिव्यक्त किया गया है। हमारी जीवन–शैली में कृत्रिमता व दिखावटीपन पसरता जा रहा है। रिश्तों की प्रगाढ़ता शिथिल होती जा रही है। स्वच्छता व सलीका पसंदगी का दिखावा हमारी आत्मीयता पर बोझस्वरूप है। इन दिखावों में रिश्तों की गर्माहट लुप्त होती जा रही है। सहजता एवं सरलता से जीवन जीने में जो खुशी एवं आनन्द मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। जीवन का रहस्य बाह्य तड़क– भड़क में नहीं बल्कि अन्तर की दृढ़ता में है।

तौलिये

पात्र : वसन्त, चिन्ती, मधु, मंगला, सुरो
स्थान : नई दिल्ली

(पर्दा वसन्त के ड्राइंगरूम में उठता है। ड्राइंगरूम न बहुत बड़ा है, न छोटा। बहुत सजा हुआ भी नहीं है। वसन्त एक अढ़ाई सौ मासिक पाता है। पर नई दिल्ली के अढ़ाई सौ........। लेकिन वह फर्म का मैनेजर है, इसलिए टेलीफोन लगा है,इसलिए कमरा भी सजा है– बाई दीवार के साथ एक मेज़ लगी है,उस पर काग़ज़–पत्रों के अतिरिक्त टेलीफोन रखा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मेज़ के इधर एक दरवाज़ा है, जो अन्दर कमरे में जाता है। मेज़ के उस ओर कोने में एक अँगीठी है, किन्तु आग शायद इसमें नहीं जलती, क्योंकि अँगीठी का कपड़ा अत्यन्त सुन्दर है,उस पर सजावट की चीज़ें भी रखी हुई हैं–वैसी ही जैसी मध्यवर्गीय घरों में होती है– लेकिन वे बिखरी नहीं हैं और करीने से लगी हुई हैं। दो पीतल के गुलदान दूसरी वस्तुओं के अतिरिक्त अँगीठी के दोनों कोनों पर रखे हुए हैं। इसी अँगीठी के कपड़े की लम्बी झालर को छूता हुआएक रेडियो सेट, नीचे एक छोटी–सी मेज़ पर रखा है, जिसके मेज़पोश का डिजाइन अँगीठी के कपडे से मैच करता है और मधु की सुरुचि का पता देता है।

अँगीठी के ऊपर दीवार पर एक कैलेण्डर लटक रहा है–जिससे कि मेज़ पर बैठे हुए व्यक्ति के ऐन सामने पड़े। कैलेण्डर को एक नज़र देखने से मालूम होता है कि नवम्बर का महीना है।

अँगीठी के बराबर एक दरवाज़ा है जो रसोई में जाता है। इस दरवाज़े से जरा हटकर सामने की दीवार के साथ एक बेंत के कौच का सेट है। इसके आगे एक तिपाई पड़ी है। सेट की गद्दियाँ सुन्दर और सुरुचिपूर्ण हैं और तिपाई का कवर अँगीठी के कपड़े से मैच करता है।

सामने, दीवार के बाई ओर, कौच से जरा हटकर एक दरवाज़ा है जो स्नानगृह को जाता है।

बाई दीवार के साथ शृंगार की मेज़ लगी है जिससे वसन्त और मधु दोनों अपने टायलेट का काम ले लेते हैं। इसके ऊपर खूँटियों पर तौलिए टंगे है। मेज के दोनों ओर एक–दो कुर्सियां पड़ी हैं। दाई दीवार में इधर को एक दरवाज़ा है जो बाहर जाता है।

पर्दा उठते समय हम वसन्त को श्रृंगार की मेज पर बैठे हजामत बनाते देखते हैं। वास्तव में वह हजामत बना चुका है और तौलिए से मुँह पोंछ रहा है। तभी रसोई के दरवाजे से स्वेटर बुनती हुई मधु प्रवेश करती है।)

मधु : यह फिर आपने मदन का तौलिया उठा लिया। मैं कहती हूँ आप....

वसन्त : (मुँह पोंछते–पोंछते रुककर) ओह! यह कमबख्त तौलिए! मुझे ध्यान ही नहीं रहता। बात यह है (हंसता है) कि मदन के तौलिएँ छोटे हैं और हजामत...।

मधु : (चिढ़कर) और हजामत के तौलिए कैसे हैं? जी! जरा आँख खोलकर देखिए हजामत के तौलिए कितने रंगीन हैं बीसियों तो धारियाँ पड़ी हुई हैं उनमें और मदन के कितने सादे और......।

वसन्त : लेकिन रोएँदार तो ....।

मधु : (व्यंग से) दोनों हैं। जी! आँखे बन्द करके आदमी दोनों का अन्तर बता सकता है। मैं कहती हूँ....।

वसन्त : (निरुत्तर होकर) वास्तव में मेरा ध्यान दूसरी ओर था। लाओं, मुझे हजामत का तौलिया दे दो। कहाँ है?मुझे दिखाई ही नहीं दिया।

मधु : (खूँटी पर टँगा तौलिया उठाकर) यह तो टँगा है सामने फिर भी.....।

वसन्त :मैंने ऐनक उतार रखा है और ऐनक के बिना तुम जानती हो हमारी दुनिया.....। (खिसियानी हँसी हँसता है।)

मधु : जी, आपकी दुनिया ! जाने आप किस दुनिया में रहते हैं। अब तो ऐनक नहीं। ऐनक हो तो कौन–सा आपको कुछ दिखाई देता है।

(मुँह फुला धम से कौच में धँस जाती है। और चुपचाप स्वेटर बुनने लगती लगती है। वसन्त हजामत का सामान रखता है फिर अचानक उसकी ओर देखकर)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वसन्त : तुमने फिर मुँह फुला लिया। नाराज़ हो गई हो ?

मधु : (व्यंग से हँसकर) नहीं मैं नाराज नहीं।

वसन्त : तुम्हारा खयाल है कि मैं इतना मूर्ख हूँ जो यह भी नहीं पहचान सकता?

मधु : (उसी तरह हँसकर) मैं कब कहती हूँ ?

वसन्त : (सामान वैसे ही छोड़कर कुर्सी को उसकी ओर घुमाते हुए) मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि अपने भावों को छिपा लेने की निपुणता तुम्हें प्राप्त नहीं। तुम्हारी उपेक्षा, तुम्हारा क्रोध, तुम्हारी समस्त भावनाएँ तुम्हारी आकृति पर प्रतिबिम्बित हो जाती हैं। तुम्हें मेरी आदतें बुरी लगती हैं, पर मैंने तुम्हें अँधेरे में नहीं रखा। अपने सम्बन्ध में, अपने स्वभाव के सम्बन्ध में, सब कुछ बता दिया था। मैंने अपने सब पत्ते...... ।

मधु : मेज़ पर रख दिये थे। (उसी तरह व्यंग से हँसकर) मैं कब इन्कार करती हूँ?

वसन्त : तुम्हारी यह हँसी कितनी विषैली है। इसी तरह विष घोल–घोलकर तुमने अपने स्वास्थ्य का सत्यानाश कर लिया है।

मधु : (चुप रहती है)।

वसन्त : मैं तुम्हें किस प्रकार विश्वास दिलाऊँ कि मैं स्वयं सफ़ाई का बड़ा भारी समर्थक हूँ।

मधु : (हँसती है) इसमें क्या सन्देह है?

वसन्त : और मुझे स्वयं गन्दगी पसन्द नहीं।

मधु : (सिर्फ हँसती है)।

वसन्त : पर मैं तुम्हारी तरह 'अरिस्टोक्रेटिक'(Aristocratic) वातावरण में नहीं पला और मुझे नज़ाकतें नहीं आती। हमारे घर में सिर्फ एक तौलिया होता था और हम छहों भाई उसे काम में लाते थे।

मधु : आप मुझे अरेस्टोक्रेट' कहकर मेरा उपहास करते हैं। मैं कब कहती हूँ, दस–दस तौलिये हों।

वसन्त : दस और किस तरह होते हैं?नहाने का अलग। हजामत बनाने का अलग। हाथ–मुँह पोंछने का अलग। और फिर तुम्हारे और मदन के .... ।

मधु : (पहलू बदलकर) लेकिन मैं पूछती हूँ, इसमें दोष क्या है?जब हम खरीद सकते हैं तो क्यों न दस–दस तौलिये रखें। कल, परमात्मा न करे, हम इस योग्य न रहें, तो मैं आपको दिखा दूँ कि किस तरह ग़रीबी में भी सफ़ाई रखी जा सकती है–तौलिये न सही, खादी के अँगौछे सही–कुछ भी रखा जा सकता है। लेकिन जिस तौलिए से किसी दूसरे ने बदन पोंछा हो, उससे किस प्रकार कोई अपना शरीर पोंछ सकता है?

वसन्त : मैं कहता हूँ, हम छःह भाई एक ही तौलिए से बदन पोंछते रहे।

मधु : लेकिन बीमारी........ ।

वसन्त : हममें से किसी को कभी कोई बीमारी नहीं हुई।

मधु :पर चर्म रोग.......... ।

वसन्त : तुम्हें और मदन को तो कोई बीमारी नहीं...और फिर रोग इस तरह नहीं बढ़ता। रोग बढ़ता है कमज़ोरी से, जब हमारे शरीर में रोग से लोहा लेनेवाले लाल कीटाणु कम हो जाते हैं, तब। चूहा सैदनशाह की बात जानती हो?

मधु : चूहा सैदनशाह.........!

वसन्त : शिकार करने के विचार से कुछ अफ़सर चूहा सैदनशाह गये। उनमें अमेरिका के राक–फ़ैलर–ट्रस्ट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

के कुछ डाक्टर भी थे। लंच के समय उन्हें पानी की आवश्यकता पड़ी। बैरे ने आकर बताया कि गाँव में कोई कुआँ नहीं, लोग जौहड़ का पानी पीते हैं। डाक्टरों को विश्वास न आया। क्योंकि जौहड़ का पानी मैला चीकट था। ऐसी कोई ही बीमारी होगी, जिसके कीड़े उस पानी में न हो। और चूहा सैदनशाह के जाट हृष्ट–पुष्ट, लम्बतड़ंगे...... ।

मधु : तो क्या आप चाहते हैं, हम जौहड़ का पानी पीना शुरू कर दें ?(हँसती है)

वसन्त : (उठकर कमरे में घूमता हुआ) तुम इस बात पर अपनी विषाक्त हँसी बिखेर सकती हो,(उसके सामने रुककर) तुम्हें मालूम हो कि अमेरिका के डाक्टर वहीं रहे। एक जाट के रक्त का उन्होंने विश्लेषण किया। मालूम हुआ कि उसमें रोग का मुक़ाबला करनेवाले लालकीटाणु रोग की मदद करनेवाले कीटाणुओं से कहीं ज्यादा हैं। तब उन्होंने वहाँ के लोगों की खुराक का निरीक्षण किया। पता चला कि वे अधिकतर दही और लस्सी का प्रयोग करते हैं और दही में बहुत–सी बीमारियों के कीटाणुओं को मारने की शक्ति है। बीमारी का मुक़ाबला इन नज़ाकतों और नफ़ासतों से नहीं होता बल्कि शरीर में ऐसी शक्ति
पैदा करने से होतो है, जो रोग के आक्रमण का प्रतिविरोध कर सके। (फिर घूमने लगता है)

मधु : मैंने चूहा सैदनशाह की बात सुन ली। मैले तौलियों से शरीर में लाल कीटाणु फैलें या श्वेत, मुझे इससे मतलब नहीं। मैं तो इतना जानती हूँ कि बचपन ही से मुझे सफ़ाई पसन्द है। मामा जी............ ।

वसन्त : (मेज़ के कोने का सहारा लेकर) तुमने फिर अपने मामा और मौसा की कथा छेड़ी। माना वे विलायत हो आये हैं,किंतु इसका यह मतलब तो नहीं कि जो वे कहते हैं वह वेदवाक्य है। उस दिन तुम्हारे मौसा आये थे, उन्होंने हाथ धोये तो मैंने कहीं भूल से तौलिया पेश कर दिया। (मधु के पास जाकर) उन्होंने दाँत निपोर दिये (नकल उतारते हुए) ''मैं किसी दूसरे के तौलिए से हाथ नहीं पोंछता''–और वे अपने रूमाल से हाथ पोंछने लगे। मैं पूछता हूँ अगर वे उस तौलिए से हाथ पोंछ लेते तो उन्हें कौन–सी बीमारी चिमट जाती ?

मधु : अब यह तो......... ।

वसन्त : और तुम्हारे मामाजी.........(वापस जाकर फिर मेज़ पर बैठ जाता है) तुम्हारे जाने के एक दिन बाद मैं उनके यहाँ गया। रात वहीं रहा। दूसरे दिन मुझे सीधे दफ़्तर आना था। कहने लगे–''हजामत यहीं बना लो।'' मैंने कहा – ''मैं एक दिन छोड़कर हजामत बनाता हूँ, मुझे कोई ऐसी जरूरत नहीं।'' जब उन्होंने अनुरोध किया तो मैंने कहा–''अच्छा बनाये लेता हूँ।'' तब वे एक निकृष्ट–सा रेज़र ले आये और कहने लगे (नकल उतारते हुए) –''मैं अपने रेज़र से किसी दूसरे को हजामत नहीं बनाने देता, इसीलिए मैंने मेहमानों के लिए दूसरा रेज़र रख छोड़ा है''– क्रोध के मारे मेरा रक्त खौल उठा, अपने आपको रोककर मैंने केवल इतना कहा–'' रहने दीजिए मैं घर जाकर शेव कर लूँगा।''

मधु : मामा जी......... ।

वसन्त : (अपनी बात जारी रखते हुए) इस पर शायद उन्हें महसूस हुआ कि मुझे उनकी बात बुरी लगी और उन्होंने मुझे अपने ही रेज़र से हजामत बनाने पर विवश कर दिया; किन्तु मेरे हजामत बनाने के बाद मेरे ही सामने ब्लेड़ उन्होंने लान में फेंक दिया और नौकर से कहा कि रेज़र को Sterilise कर लाये (नकल उतारते हुए) मामा जी..... ।

मधु : मैं कहती हूँ, आप उनके स्वभाव से परिचित नहीं, आपको बुरा लगा। स्वच्छता की भावना भी काव्य और कला ही की भाँति..... ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वसन्त : (आवेग में उसके पास आकर) क्यों काव्य और कला को अपनी इस घृणा में घसीटती हो। तुम्हसरे ऐसे वातावरण में पले हुए सब लोगों की नफ़ासत में नफ़रत की भावना काम करती है–शरीर से, गन्दगी से, जीवन से नफ़रत की!

मधु : (चुप रहती है)

वसन्त : और मुझे जीवन से घृणा नहीं। मुझे शरीर से भी घृणा नहीं और मैं सच कह दूँ, मुझे गन्दगी से भी घृणा नहीं।

मधु : (हँसती है) तो फिर कूड़ों के ढेरों पर बैठिए !

वसन्त : (फिर कुर्सी पर जा बैठता है और कुर्सी को और समीप ले आता है) मुझे गन्दगी से घृणा नहीं; किन्तु मैं गन्दगी पसन्द नहीं करता– बड़ा नाजुक–सा फ़र्क़ है। यदि हमें जीवन का सामना करना है तो रोज़ गन्दगी से दो–चार होना पड़ेगा, फिर इससे घृणा कैसी ?जिन ग़रीबों को तुम अपने बरामदे के फ़र्श पर भी पाँव न रखने दो, मैं उनके पास घंटों बैठ सकता हूँ।

मधु : (हँसती है)

वसन्त : और मैंने ऐसे गंदे इलाकों में जीवन के निरन्तर कई वर्ष बिताये हैं, जहाँ तुम्हारी स्वच्छता की सनक तुम्हें गुज़रने तक न दे। समझीं!

मधु : (वहीं बैठे और वैसे ही स्वेटर बुनते हुए) पर अब तो आप विपन्न नहीं। अब तो आप गंदे इलाक़ों में नहीं रहते। विपन्नता की विवशता को मैं समझ सकती हूँ किन्तु गंदेपन का स्वभाव मेरी समझ से दूर की वस्तु है।

वसन्त : तो तुम्हारे विचार से मैं स्वभाव से गंदा हूँ।

मधु : (उसी विषैली हँसी के साथ) मैं कब कहती हूँ।

वसन्त : (खड़ा हो जाता है) ऐसे दिन मुझ पर आये हैं, जब एक बनियान पहने मुझे कई दिन गुज़र जाते थे। उसे धोने तक का अवकाश न मिलता था और अब मैं दिन में दो बार बनियान बदल लेता हूँ। अगर यह गंदेपन की आदत है तो..... ।

मधु : (उसी हँसी के साथ) मैं कब कहती हूँ ?

वसन्त : स्वच्छता बुरी नहीं, पर तुम तो हर चीज को सनक की हद तक पहुँचा देती हो, और सनक से मुझे चिढ़ है।(फिर कमरे में घूमने लगता है) बनियानों और तौलियों की कैद मैंने मान ली, किंतु यदि मैं गलती से बनियान न बदल पाऊँ, या गलत तौलिया ले लूँ तो इसका यह मतलब तो नहीं कि मैं स्वभाव से गंदा हूँ और मेरे इस स्वभाव पर तुम्हें मुँह फुलाकर बैठ जाना या अपनी विषैली हँसी बिखेरना चाहिए!

मधु : (चुप रहती है)

वसन्त : (रेडियो के पास से) तुमने अपने आपको इन मिथ्या बन्धनों में इतना जकड़ लिया है कि मेरा ज़रा सा खुलापन भी तुम्हें अखरता है। अपने सिद्धान्तों को तुमने सनक की हद तक पहुँचा दिया है। ऊषी और निम्मो......

मधु : (बुनना छोड़ देती है) आपने फिर ऊषी और निम्मो की बात चलाई। ऊषी और निम्मो....... ।

वसन्त : (हँसते हुए) कल मिल गई बाज़ार में। मैंने पूछा–''निम्मो आई नहीं, तुम इतने दिनों से।'' कहने लगीं–''हमको चची से डर लगता है।''(हँसता है)

मधु : (उसी विषैली हँसी के साथ) मैं उन्हें खा जो जाती हूँ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वसन्त : (तिपाई के पास से) खाओगी तो तुम क्या, पर वे बच्चियाँ हैं..... ।

मधु : बच्चियाँ !(व्यंग्य से हँसती है) ।

वसन्त : (उसके व्यंग्य को सुना–अनसुना करके तिपाई पर बैठते हुए) हँसना उनका स्वभाव है। वे हँसेगी तो बेबात की बात पर हँसेगी और तुम्हारा ऐटीकेट– बस दबे–दबे घुटे–घुटे फिरो– ऊँह! (बेज़ारी से सिर हिलाकर उठता है) जो आदमी जी भर खा–पी नहीं सकता। हँस–हँसा नहीं सकता, वह जीवन में कर ही क्या सकता है। चिन्ताओं और आपत्तियों के बन्ध नही क्या कम हैं जो जीवन को शिष्टाचार की बेड़ियों से जकड़ दिया जाए– यह न करो, वह न करो; ऐसे न बोलो, वैसे न बोलो– इन आदेशों का कहीं अन्त भी है।

मधु : (चुप रहती है)

वसन्त : और फिर तुम्हारे इस शिष्टाचार में वह स्निग्धता कहाँ है? तुम्हारे आने से पहले मैं, देव और नारायण एक ही लिहाफ़ में बैठ जाते थे। ज़रा कल्पना तो करो– सर्दियों की सुबह या शाम, एक ही चारपाई पर, एक ही रज़ाई घुटनों पर ओढ़े, चार–पाँच मित्र बैठे हैं। गप्पें चल रही हैं। सुख–दुःख की बातें हो रही हैं। वहीं चाय आ जाती है। साथ–साथ बातें होती हैं, साथ–साथ चुस्कियाँ लगती हैं– इस कल्पना में कितना आनन्द है, कितनी स्निग्धता है। अब मित्र आते हैं। अलग–अलग कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। एक दूसरे पर बोझ मालूम होता है। (जोश से) चिड़िया तक तो फटकने नहीं देतीं तुम बिस्तर के पास। मैं तो इस तकल्लुफ़ में घुटा जाता हूँ। (जाकर कुर्सी पर बैठ जाता है और हजामत का सामान ठीक से रखने लगता है।)

मधु : मैं तकल्लुफ़ स्वयं पसन्द नहीं करती। पर जब दूसरों को सफ़ाई का कुछ भी खयाल न हो तो विवश हो इससे काम लेना पड़ता है। आप ही बताइए– कितने लोग हैं, जिन्हें सफ़ाई की आदत है ?कितने हैं जो हमारी तरह पाँव धोकर रज़ाइ में बैठते हैं ?

वसन्त : (वहीं से) पाँव धोने की मुसीबत रज़ाई में बैठने का लुत्फ़ ही किरकिरा कर देती है।

मधु : कुत्ता भी बैठता है तो दुम हिलाकर बैठता है। मनुष्य स्वभाव से ही स्वच्छता का प्रेमी है। मैं गंदे लोगों से घृणा करती हूँ।

(फिर स्वेटर बुनने लगती है।)

वसन्त : (मुड़कर) घृणा– यही तो मैं कहता हूँ। तुम्हें मुझसे घृणा है, मेरे स्वभाव से घृणा है। तुम्हारा वातावरण मेरे वातावरण से घृणा करता है।

मधु : (उसी विषैली हँसी के साथ) यह आप कह सकते हैं।

वसन्त : तुम्हें मेरी हर एक बात से घृणा है– मेरे खाने–पीने से, उठने–बैठने से, हँसने–बोलने से– मैं जब हँसता हूँ , सीना फुलाकर हँसता हूँ और इसीलिए ऊषी और निम्मो..... ।

मधु : (स्वेटर को फेंककर) आपने फिर ऊषी और निम्मो की कथा छेड़ी। मुझे हँसना बुरा नहीं लगता। पर समय–कुसमय का भी ध्यान होना चाहिए। उस दिन पार्टी में आते ही ऊषी ने मेरे कान पर चुटकी ले ली और निम्मो ने मेरी आँखें बन्द कर ली। कोई समय था उस तरह हँसी–मज़ाक का। मुझे हँसी–मज़ाक से घृणा नहीं, अशिष्टता से घृणा है।

वसन्त : ऊषी.....

मधु : परले सिरे की अशिष्ट और असभ्य लड़की है। मदन की वर्षगांठ के दिन वे सब आए थे। निम्मो इतनी चंचल लड़की है, पर वह तो बैठ गई एक ओर, यह नवाबज़ादी सेंडल समेत आ बैठी मेरे सामने टाँगे पसारे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

और उसके गंदे सेंडल– मेरी साड़ी के बिलकुल समीप आ गए। आप इस अशिष्टता को शौक से पसन्द करें मैं तो इसे कदापि पसन्द नहीं कर सकती। जिसे बैठने, उठने,बोलने का सलीका नहीं, वह मनुष्य क्या पशु है।

वसन्त : (गरजकर) पशु! तो तुम मुझे पशु समझती हो?तुम मनुष्य की प्राकृतिक भावनाओं को बाँधकर रखना चाहती हो कठिन सिद्धान्तों की बेड़ियों में। ताकि उसकी रूह ही मर जाए। मुझे यह सब पसन्द नहीं और इसलिए तुम मुझसे घृणा करती हो। तुम्हारी इस विषाक्त हँसी में, मैं जानता हूँ, कितनी घृणा छिपी है और मुझे डर है कि किसी दिन मैं सचमुच पशु न बन जाऊँ। अभी मेरा जी चाहा था कि इस ज़लील से तौलिए को उठाकर बाहर फेंक दूँ और.... और....मेरा जी चाहा करता है कि मैं तुम्हारी इस हँसी का गला घोंट दूँ। घृणा– तुम मेरी हर बात से घृणा करती हो– मुझे पशु समझती हो!

मधु : (स्वेटर उठाते हुए भरे गले से) आप नाहक हर बात को अपनी ओर ले जाते हैं। अपनी कल्पना से मेरे दिल में वे बातें देखते हैं, जो मैं स्वप्न में भी नहीं सोचती। मुझे आपसे घृणा है या नहीं, इसे मैं ही जानती हूँ; पर आपको मुझसे जरूर घृणा है। आपने मुझसे शादी कर ली, मैं जानती हूँ। क्यों कर ली, यह भी जानती हूँ। लेकिन विवाह के लिए आपका तैयार हो जाना, यह नहीं बताता कि आपको मुझसे नफ़रत नहीं। इसका क्रोध चाहे अब आप मेरी सफ़ाई पर निकालें, चाहे मेरी पोशाक या मेरे स्वभाव पर!

वसन्त : तुम.....

मधु : मेरा ख़याल था, मैं आपको सुख पहुँचा सकूँगी। आपके अव्यवस्थित जीवन को व्यवस्था सिखा दूँगी, किन्तु मैं देखती हूँ कि मेरे समस्त प्रयास विफ़ल हैं....आपको इस गन्दगी, इस अव्यवस्था में सुख मिलता है। आपको मेरी व्यवस्था, मेरी सफ़ाई बुरी लगती है। मैं आपकी दुनिया में न रहूँगी। मैं आज ही चली जाऊँगी।

(उठ खड़ी होती है–टेलीफ़ोन की घंटी बजती है। वसन्त जल्दी से जाकर चोंगा उठाता है।)

वसन्त : हैलो, हैलो, जी, जी!

मधु : (नौकरानी को आवाज़ देते हुए) मंगला !

मंगला : (स्नानगृह की ओर के दरवाजे से आती है) जी बीबी जी !

मधु : मेरा बिस्तर तैयार कर और मेरा ट्रंक इस कमरे में ले आ।

मंगला : बीबी जी आप.......

मधु : मैं जो कहती हूँ उठा ला।

(मंगला चली जाती है। वसन्त ''जी, जी बहुत अच्छा!'' कहते हुए चोंगा रख देता है और हँसता हुआ आता है।)

वसन्त : मैं कहता हूँ तुम अपना सामान बाँधने की सोच रही हो, पहले मेरा सामान तो ठीक कर दो। मुझे पहली गाड़ी से बनारस जाना है। अभी साहब ने आदेश दिया है। अपना सामान बाद में बाँधना। (हँसता है।)

(पर्दा गिरता है)

(कुछ क्षण बाद पर्दा फिर उठता है। कमरा वही है। सामान भी वही है, सिर्फ इतना अन्तर है कि जहाँ मेज़ थी, वहाँ एक पलंग बिछा हैऔर टेलीफोन उसके सिरहाने एक तिपाई पर रखा है। मेज़, ड्रेसिंग टेबुल की जगह चला गया है और शृंगार की मेज़, अपनी कुर्सी के साथ दाएँ कोने में सरक गई है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पलंग पर मधु लिहाफ़ घुटनों पर लिये दीवार के सहारे अन्यमनस्क–सी आधी बैठी, आधी लेटी है।
कुछ क्षण बाद वह कैलेण्डर की ओर देखती है। उसकी दृष्टि का अनुसरण करते ही मालूम होता है कि जनवरी का महीना है और नया साल चढ़ गया है। जिसका मतलब यह है कि मधु को हम दो महीने बाद देख रहे हैं।
बाहर का दरवाज़ा खुला है और तीखी हवा अन्दर आ रही है। लिहाफ़ को कंधों तक खींचते हुए मधु नौकरानी को आवाज़ देती है– ''मंगला, मंगला !''
लेकिन आवाज़ इतनी हल्की है कि शायद मंगला तक नहीं जाती। मधु रज़ाई लेकर लेट–सी जाती है। कुछ क्षण बाद मंगला स्वयं ही आती है।)

मंगला : बीबी जी, यह आप उदास–उदास क्यों हैं?

मधु : (लेटे–लेटे ज़रा सिर उठाकर) मंगला यह किवाड़ बन्द कर दो बर्फ़–सी हवा अन्दर आ रही है।

मंगला : (किवाड़ बन्द करते हुए) मेरी बात का उत्तर नहीं दिया आपने बीबी जी ?

मधु : यों ही कुछ तबीयत उदास है मंगला !

मंगला : कोई पत्र आया बाबू जी का ?

मधु : आया था। शायद आज–कल में आ जाएँ !

मंगला : तो फिर.....

मधु : (विषाद से हँसकर) तबीयत कुछ भारी–भारी–सी है। शायद सर्दी के कारण.....

(दरवाज़े पर दस्तक होती हैं)

मधु : (ज़रा उठकर) कौन ?

सुरो : (बाहर से) दरवाज़ा तो खोलो।

मधु : (बैठकर) मंगला, ज़रा किवाड़ खोलना।

(मंगला दरवाज़ा खोलती है। सुरो और चिन्ती आती हैं।)

मधु : (रज़ाई परे करके) अरे सुरो, चिन्ती, तुम यहाँ कैसे ?

सुरो : आज ही सवेरे यहाँ उतरी हैं।

चिन्ती : माता जी प्रयाग जा रही थीं। सरिता बहिन का खयाल था कि दिल्ली भी देखते चलें।

मधु : ठहरी कहाँ हो ?

चिन्ती : कनॉट पैलेस में मलिक चाचा जी के यहाँ। देर से उनका अनुरोध था कि दिल्ली आये तो.......

मधु : और मुझे पत्र तक नहीं लिखा। इतने दिनों से मैं कह रही थी कि दिल्ली आओ तो.........

सुरो : सबसे पहले तुम्हीं से मिलने आई हैं। माता जी कहती थीं कुतुबमीनार.......

चिन्ती : मैंने कहा कुतुबमीनार एक तरफ़ और मधु बहिन एक तरफ़.......

(मधु क़हक़हा लगाती है।)

सुरो : और फिर दो घंटे से मारी–मारी फिर रही हैं तुम्हारी तलाश में।

मधु : लेकिन पता तो मेरा.....

चिन्ती : सुरो बहिन भूल गई। इन्होंने ताँगेवाले को भैरों के मन्दिर चलने के लिए कह दिया।

मधु : (आश्चर्य से) भैरों के मन्दिर.....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चिन्ती : और ताँगेवाला ले गया सब्ज़ी मण्डी, कहीं तीस हजारी के गिर्जे के पास।

मधु : गिर्जे के पास.....

(ज़ोर से क़हक़हा लगाती है।)

चिन्ती : (अपनी बात जारी रखते हुए) तब इन्हें खयाल आया कि मन्दिर तो हनुमान का है। फिर नई दिल्ली वापस आई।

(मधु फिर ज़ोर से हँसती है।)

सुरो : और तब पता चला कि हम लोग तो यों ही परेशान होते रहे। घर तो तुम्हारा पास ही था।

मधु : तुम लोग भी, मैं कहती हूँ......

(ज़ोर से हँस पड़ती है।)

सुरो : यह इतना हँसना तुम कहाँ से सीख गई ?तुम तो थीं जन्म की सिड़ी....

चिन्ती : भाई साहब ने सिखा दिया इतने जोर से कहकहे लगाना?कहाँ हैं वे ?

मधु : बनारस गए हुए हैं, दो महीने से। वहाँ के फर्म का मैनेजर बीमार पड़ गया था। शायद आज–कल में आ जाएँ।

चिन्ती : अच्छे तो हैं ?

मधु : अच्छे हैं। मौज में हैं; लेकिन तुम खड़ी क्यों हो ?इधर आ जाओ बिस्तर पर। (नौकरानी को आवाज़ देती है) मंगला! मंगला!

(सुरो और चिन्ती कुर्सियों पर बैठने लगती हैं।)

मधु : अरे कुर्सियाँ छोड़ो। बस चली आओ इधर। पलँग पर बैठते हैं लिहाफ़ लेकर.....

सुरो : लेकिन मेरे पाँव.... (हँसकर) और मैं धो नहीं सकती इन्हें।

मधु : अरे क्या हुआ है तुम्हारे पाँवों को ?जुराबें तो पहन रखी हैं तुमने ?

चिन्ती : पर तुम्हारा बिस्तर ?

मधु : कुछ नहीं होता बिस्तर को। मेरे बिस्तर का खयाल छोड़ो। बस चली आओ इधर। यह किवाड़ बन्द कर दो। बर्फ़–सी हवा अन्दर आ रही है।

(मंगला आती है।)

मंगला : आपने आवाज़ दी थी बीबी जी ?

मधु : मंगला, चाय बनाकर लाओ !

(चिन्ती किवाड़ बन्द कर देती है। तीनों घुटनों पर लिहाफ़ लेकर आराम से बिस्तर पर बैठ जाती हैं।)

सुरो : पुष्पा की शादी हो रही है, अगले महीने।

मधु : (चौंककर खुशी से) लेफ़्टिनेंट वीरेन्द्र के साथ ?

चिन्ती : वह लम्म–सलम्मा लमटीक–सा आदमी। जोर की हवा चले तो उड़ता चला जाये। मैं तो सोंचती हूँ कि उसे पुष्पा जैसी मोटी मुटल्लो से प्रेम भी हुआ तो कैसे ?

मधु : और मैं इस बात पर हैरान हूँ कि पुष्पा उसे पसन्द ही कैसे करती है। चेहरे पर तो उसके मनहूसियत बरसती रहती है और मालूम होता है जैसे.....

चिन्ती : वर्षों स्नानगृह का मुँह न देखा हो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(सब हँसती हैं—मंगला चाय की ट्रे लाती है।)

मंगला : कहाँ लगाऊँ चाय बीबी जी ?

मधु : वहाँ मेज़ पर रख दो और एक—एक प्याला बनाकर हमें दो। यह तिपाई सरकाकर इस पर बिस्कुट रख दो।

सुरो : (आश्चर्य से) मधु !

मधु : अरे उठकर कहाँ जाओगी। यहीं बैठी रहो। इस गर्म बिस्तर से उठकर डाइनिंग टेबुल पर जाने में आ चुका चाय का मज़ा.....

चिन्ती : (उठने को प्रयास करते हुए हलके—से क्रोध से) मधु !

मधु : हटाओ भी। अब बैठी रहो यहीं।

चिन्ती : (व्यंग्य से) तो विवाह के बाद रानी मधुमालती ने अपने सब सिद्धान्त बदल डाले हैं। अब डाइनिंग टेबुल के बदले बिस्तर पर ही चाय पीती हैं और बिस्तर पर ही खाना भी नोश फ़रमाती हैं।

सुरो : कहाँ तो यह कि पानी का गिलास भी पीना हो तो डाइनिंग रूम की ओर भागती और कहाँ यह कि.....

मधु : अरे क्या रखा है इस तकल्लुफ़ में। सच कहो, इस समय किसका जी चाहता है कि इस नर्म—नर्म बिस्तर से उठकर डाइनिंग टबुल पर जाए। लो बिस्कुट लो और चाय का प्याला उठाओ ! ठंडी हो रही है।

(सब चाय के प्याले उठा लेती हैं और चाय पीते—पीते बातें करती हैं।)

सुरो : मैं पूछती हूँ — अगर चाय बिस्तर पर गिर जायें ?

मधु : तो क्या हुआ ?चादर धुलवाई जा सकती है। और फिर किसी दिन सहसा पेश आनेवाली दुर्घटना के भय से कोई अपने रोज के सुख—आराम को तो नहीं छोड़ देता।

सुरो : सुख—आराम (व्यंग्य से हँसती है) तुम बिस्तर पर चाय पीने का बहुत बड़ा सुख समझती हो.......(फिर हँसती है)।

चिन्ती : और फिर सभ्यता, संस्कृति....

मधु : मानव की आधारभूत भावनाओं पर नित्य नये दिन चढ़ते चले जाने वाले पर्दों का नाम ही तो संस्कृति है। सोसाइटी के एक वर्ग के लिए दुसरा वर्ग सदैव असभ्य और असंस्कृत रहेगा। फिर कहाँ तक आदमी सभ्यता और संस्कृति के पीछे भागे।

सुरो : यह तुम क्या कह रही हो ? क्या तुम चाहती हो कि इतना कुछ सीख—समझकर मनुष्य फिर पहले की भाँति बर्बर बन जाएँ ?

मधु : नहीं बर्बर बनने की क्या जरूरत है? मनुष्य सीमाओं को छूता हुआ क्यों चले। मध्य का मार्ग क्यों न अपनाये। न इतना खुले कि बर्बर दिखाई दे, न इतना बँधे कि सनकी। महात्मा बुद्ध ने कहा था......

सुरो : (हँसकर) महात्मा बुद्ध! तुम्हें हो क्या गया है; सदियों पुराने गले—सड़े विचारों को तुम आज की सभ्यता पर लादना चाहती हो!

चिन्ती : मनुष्य हर घड़ी, हर पल प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आज के सिद्धान्त कल काम न देंगे और कल के परसों। बर्नार्ड शा.....

मधु : (व्यंग्य से हँसकर) बर्नार्ड शा, हटाओ, क्या बेमजा बहस ले बैठी हो। मंगला चाय का एक—एक कप और बनाओ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चिन्ती : बस भई अब तो चलेंगे। इतनी देर हो गई हमें यहाँ आये। मंगला हाथ धुला दो हमारे।

मधु : अरे भई एक–एक प्याला तो और लो।

सुरो : नहीं मधु अब चलेंगे। वहाँ सब लोग परेशान हो रहे होंगे। हमने कहा था, हम केवल मधु का घर देखने जा रहे हैं। एक–आध घंटे में लौट आयेंगे और यहाँ आते ही आते दो घंटे लग गये।

चिन्ती : स्नानगृह किधर है। हम वहीं हाथ धो आते हैं।

मधु : अरे क्या धोओगी इस सर्दी में हाथ ?

सुरो : नहीं भई हाथ तो हम जरूर धोयेंगे। चिप–चिप कर रहे हैं।

मधु : तो मरो! (मंगला से) मंगला, इनके हाथ धुलवा दो।

सुरो : बाथरूम.....

मधु : अरे बाथरूम में जाकर क्या करोगी ? इधर बरामदे में ही धो लो।

(किवाड़ खोलकर सुरो और चिन्ती हाथ धोती हैं। मधु चुपचाप अपने प्याले की शेष चाय पीती है।)

सुरो : (गीले हाथ लिये वापस आकर) तौलिया कहाँ है ?

मधु : तौलिया नहीं दे गई मंगला ?अच्छा वह ले लो जो खूँटी पर टँगा है।

सुरो : (क्रोध से) मधु तुम भली–भाँति जानती हो......

मधु : मंगला, इन्हें अन्दर से एक धुला हुआ तौलिया ला दो।

(चिन्ती भी गीले हाथ लिए आ जाती है। मंगला तौलिया ले आती है और दोनों हाथ पोंछती हैं।)

मधु : मैं कहती थी, अभी कुछ देर बैठतीं !

चिन्ती : नहीं भई अब कल आने का प्रयास करेंगी।

(हाथ पोंछकर तौलिया कुर्सी की पीठ पर रख देती हैं।)

मधु : प्रयास नहीं, ज़रूर आना। भूलना नहीं। और खाना भी यहीं खाना।

सुरो : हाँ, हाँ अवश्य आयेंगी। (मधु उठने का प्रयास करती है।) अब उठने का तकल्लुफ़ न करो। बैठी रहो अपने गर्म लिहाफ़ में। दरवाज़ा हम बन्द किए जाती हैं। बर्फ़–सी हवा अन्दर आ रही है।

(हँसती हुई दरवाज़ा बन्द करके चली जाती हैं।)

मधु : मुझे एक प्याला और बना दो, मंगला।

मंगला : (प्याला बनाकर देते हुए) ये कौन थी बीबी जी ?

मधु : मेरी सहेलियाँ थी। कालेज में हम साथ–साथ पढ़ती थीं और होस्टल में भी साथ–साथ रहती थीं। (कुछ क्षण चुपचाप चाय पीती है, फिर) मंगला!

मंगला : जी, बीबी जी।

मधु : मंगला, ज़रा मेरी ओर देखकर बता तो, क्या मैं सचमुच बदल गई हूँ?

मंगला : (चुप रहती है।)

मधु : (जैसे अपने आप से) मेरी सहेलियाँ कहती हैं, मैं बदल गई हूँ पड़ोसिनें भी यही कहती हैं! मेरी ओर ज़रा देखकर बता तो मंगला, क्या मैं वास्तव में बदल चुकी हूँ।

मंगला : मैं तो आठों पहर आपके पास रहती हूँ बीबी जी, मैं क्या जानूँ।

मधु : (अपनी बात जारी रखते हुए) मेरी आँखों में देखकर बता, मंगला, क्या ये बदल सकी हैं ?इनमें घृणा की

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

झलक तो नहीं ?

मंगला : (आश्चर्य से) घृणा.....

मधु : मेरे व्यवहार में तकल्लुफ़ और बनावट तो नहीं ?

मंगला : (उसी आश्चर्य से) बनावट, तकल्लुफ़.....

मधु : तकल्लुफ़, बनावट, नफ़रत– तीनों को मैं अपने दिल से निकाल देना चाहती हूँ (जैसे अपने आप से) दो महीने पहले, वे इसी बात पर मुझसे लड़कर चले गये थे।

मंगला : क्या कह रही हैं, बीबी जी आप! बाबू जी तो.....

मधु : (शून्य में देखते हुए) उनका क्रोध अभी तक नहीं उतरा। इन दो महीनों में उन्होंने मुझे एक पत्र भी नहीं लिखा।

मंगला : एक पत्र भी नहीं लिखा, लेकिन.....

मधु : (व्यंग्य से) '' मैं कुशल से हूँ, अपनी कुशल का पता देना!'' या '' मैनेजर बीमार हैं। ज्यों ही स्वस्थ हुए चला आऊँगा।'' इन्हें तुम पत्र लिखना कहती होगी। वे मुझसे नाराज़ हैं। उनका खयाल है कि मैं उनसे घृणा करती हूँ।

मंगला : (कुछ भी समझने में असफल होते हुए) घृणा, घृणा ?

मधु : यदि मैं बचपन ही से ऐसे वातावरण में पली हूँ जहाँ सफ़ाई और सलीके का बेहद खयाल रखा जाता है तो इसमें मेरा क्या दोष ?(लगभग भरे हुए गले से)वे सफ़ाई और व्यवस्था की मेरी इच्छा को घृणा बताते हैं। मैं बहुतेरा यत्न करती हूँ कि इस सब सफ़ाई–वफ़ाई को छोड़ दूँ, इन तकल्लुफ़ात को तिलांजलि दे दूँ, पर अपने इस प्रयास में कभी–कभी मुझे अपने आपसे घृणा होने लगती है। (लम्बी साँस भरकर) बचपन से जो संस्कार मैंने पाये हैं उनसे मुक्ति पाना मेरे लिए उतना आसान नहीं।(अचानक दृढ़ता से) पर नहीं। मैं इन सब वहमों को छोड़ दूँगी। पुरानी आदतों से छुटकारा पा लूँगी। वे समझते हैं, मैं उनसे नफ़रत करती हूँ।

मंगला : आप क्या कह रही हैं, बीबी जी ?

मधु : वे समझते हैं– मैं उनसे, उनके स्वभाव से, उनके वातावरण से, उनकी हर बात से घृणा करती हूँ। (सिसकने लगती है) मैंने इन दो महीनों में अपने आपको बदल डाला है। अपने आपको बिलकुल बदल डाला है।

(दरवाज़ा अचानक खुलता है और वसन्त प्रवेश करता है।)

वसन्त : हेल–लो मधु! क्या हाल–चाल है जनाब के ?(मंगला से) मंगला ताँगे से सामान उतरवाओ। और (जेब से पैसे निकालते हुए) और यह लो डेढ़ रुपया! ताँगेवाले को दे दो।

(मंगला पैसे लेकर चली जाती है।)

वसन्त : (फिर मधु के पास आते हुए) कहो भाई क्या हाल–चाल है, यह सूरत कैसी रोनी बना रखी है ?जी कुछ खराब है क्या ?

मधु : (जो इस बीच पलँग से उतर आई है–हँसने का प्रयास करते हुए) सूखा जाड़ा पड़ रहा है। जुकाम है मुझे तीन–चार दिन से।

वसन्त : मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखा करो। सेहत–सेहत–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सेहत–दुनिया में जो कुछ है सेहत है। जीवन में तुम्हारी यह सफ़ाई और सुघड़ता, ये नज़ाकतें इतना काम न देंगी , जितना सेहत। यदि यही ठीक नहीं रहती तो ये सब किस काम कीं और अगर ठीक है तो फिर इनकी कोई ज़रूरत नहीं। (अपने कथन की बारीकी का स्वयं ही आनन्द लेता है और फिर जैसे उसने पहली बार कमरे को अच्छी तरह देखा हो) अरे यह कायापलट कैसी ?यह पलँग ड्राइंगरूम में कैसे आ गया ?और यह ट्रे और प्याले...।

मधु : मैंने पलँग इधर ही बिछा दिया है कि आप और आपके मित्रों को ज़रा भी कष्ट न हो। मज़े से लिहाफ़ लेकर बैठिए। टेलीफ़ोन आपके सिरहाने रहेगा।

वसन्त : (उल्लास से) वाह ! मैं कहता हूँ तुम....तो, तुम....तो....बेहद अच्छी हो।

मधु : मैं स्वयं अपनी सहेलियों के साथ इसी लिहाफ़ में बैठी रही हूँ।

वसन्त : (आश्चर्य–मिश्रित उल्लास से) सच !

मधु : (उसकी ओर प्रशंसा की इच्छुक प्यार–भरी दृष्टि से देखते हुए) और चाय भी हमने यहीं पी है।

वसन्त : (प्रसन्नता से) व...ा...ह! मैं कहता हूँ – अब तुम जीवन का रहस्य समझ पाई हो। जीवन का भेद बाह्य तड़क–भड़क में नहीं, अन्तर की दृढ़ता में है। यदि, यदि हमारी प्रतिरोध–शक्ति, हमारी Power of Resistence क़ायम है.......।

मधु : चाय भी अब आप यहीं पिया कीजिएगा, अपने नर्म–नर्म बिस्तर पर !

वसन्त : (अत्यधिक उल्लास से) वाह–वाह ! अब इसी बात पर तुम मंगला से कहो कि मेरे लिए चाय का पानी रखे।

मधु : अब तो आप नाराज़ नहीं हैं ?

वसन्त : (आश्चर्य से) नाराज़ !

मधु : आप इतने दिनों तक मन में गुस्सा रख सकते हैं, यह मैंने स्वप्न में भी न सोचा था।

वसन्त : (और भी आश्चर्य से) गुस्सा !

मधु : दो महीने से आपने ढंग से पत्र तक नहीं लिखा।

वसन्त : पर मैंने.......।

मधु : पत्र लिखे थे । जी! ''मैं कुशल से हूँ। अपनी कुशल का पता देना''– इसे पत्र लिखना कहते होंगे!

वसन्त : (जोर से कहकहा लगाता है) तो तुम इसका कारण यह समझती हो कि मैं तुमसे नाराज़ हूँ ? पगली ! तुमसे भी कभी कोई नाराज़ हो सकता है।

मधु : पर दो पंक्तियाँ....।

वसन्त : दो पंक्तियाँ लिखने का भी अवकाश मिल गया तुम इसी को बहुत समझो।

मधु : अच्छा आप जाकर हाथ–मुँह धो लीजिए। मैं चाय तैयार करती हूँ।

वसन्त : मैं कहता हूँ , तुम कितनी....तुम कितनी....तुम कितनी अच्छी हो।

मधु : (मुस्कराते हुए) अच्छा–अच्छा चलिए, पहले हाथ–मुँह धोकर कपड़े बदलिए।

वसन्त : यह फिर तुमने कपड़े बदलने की पख लगाई ?

मधु : क्यों कपड़े न बदलिएगा?एक रात और एक दिन गाड़ी में सफ़र करके आये हैं। मार्ग की धूल सारे शरीर पर पड़ी हुई है। चलिए, चलिए जल्दी हाथ–मुँह धोकर कपड़े बदलिए! मैं इतने में चाय तैयार करती

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हूँ। (वसन्त को स्नानगृह के दरवाजे की ओर धकेल देती है,और नौकरानी को आवाज़ देती है) मंगला, मंगला!

मंगला : (दूसरे कमरे के दरवाजे से झाँकती है) जी बीबी जी!

मधु : सामान रखवा लिया या नहीं ?

मंगला : जी बीबी जी!

मधु : यह ट्रे और प्यालियाँ उठा। पानी तो चाय का ठंडा हो गया होगा। बाबू जी उधर हाथ–मुँह धोने गये हैं। मैं और पानी रखती हूँ। इतने में यह पानी फेंककर चायदानी और प्यालियाँ अच्छी तरह धो डाल।

(मंगला ट्रे आदि उठाकर जाती है। एक चमचा गिर जाता है।)

मधु : (कुछ तीखे स्वर में) यह चमचा फिर फ़र्श पर गिरा दिया तूने। बीस बार कहा है कि चमचा न गिराया कर फ़र्श पर, चिप–चिप होने लगती है। अब ट्रे बाहर रखकर, इस जगह को गीले कपड़े से धो डाल !

वसन्त : (स्नानगृह से) अरे भई साबुन कहाँ है ?

मधु : ध्यान से देखिए। वहीं तखती पर पड़ा है।

वसन्त : (वहीं से) और तौलिया ?

मधु : हाथ–मुँह धो आइए और इधर कमरे से सूखा नया तौलिया लेकर पोंछ लीजिए। (मंगला कपड़े का टुकड़ा भिगोकर लाती है और चुपचाप फ़र्श साफ़ करने लगती है) तू फ़र्श साफ़ करके चायदानी और प्यालियाँ धो डाल और मैं पानी रखती हूँ चाय का।

(रसोई–दरवाज़े से चली जाती है। कुछ क्षण तक मंगला चुपचाप फ़र्श साफ़ किए जाती है। फिर वसन्त हाथ–मुँह धोकर कुर्ते की आस्तीनें चढाए, गुनगुनाता हुआ आता है–

हिंडोला कैसे झूलूँ, मेरा जिया डोले रे।

मैं झूला कैसे झूलूँ, मेरा जिया डोले रे।

और अपने ध्यान में मग्न कुर्सी की पीठ पर पड़े उस तौलिए से मुँह पोंछने लगता है जिससे सुरो और चिन्ती हाथ–मुँह पोंछकर गई हैं।)

मधु : (रसोईखाने से) यह केतली कैसी बना रखी है मंगला तूने ! मनों तो मैल जमी हुई है पेंदे में। (केतली हाथ में लिए आ जाती है) तुझे कभी बर्तन न साफ़ करने आयेंगे मंगला। कितनी बार कहा है कि सफ़ाई का.....(अचानक वसन्त को सुरो वाले तौलिए से मुँह पोंछते हुए देखकर लगभग चीखते हुए) यह सूखा नया तौलिया लिया है आपने ?मैं पूछती हूँ आप सूखे और गीले तौलिए में भी तमीज़ नहीं कर सकते। अभी तो सुरो और चिन्ती चाय पीकर इस तौलिए से हाथ पोंछकर गई हैं।

वसन्त : (घबराकर) परन्तु नया.....

मधु : नया तौलिया उधर कमरे में टँगा है।

वसन्त : ओह ये कमबख्त तौलिये! मुझे ध्यान ही नहीं रहता वास्तव में दोनों तौलिये साफ़ हैं, मुझे.......

मधु : जी साफ़ हैं। जरा आँख खोलकर देखिए! गीले और सूखे.....

वसन्त : मैंने ऐनक उतार रखी है और ऐनक के बिना तुम जानती हो हमारी दुनिया.....(खिसियानी हँसी हँसता है)।

मधु : जी आपकी दुनिया। जाने आप किस दुनिया में रहते हैं। अब तो ऐनक नहीं। ऐनक हो तो कौनसा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आपको कुछ दिखाई देता है! (मुँह फुलाकर धम से कौच में धँस जाती है)।

वसन्त : यह तुमने फिर मुँह लटका लिया ?नाराज़ हो गई हो क्या ?

मधु : (व्यंग्य से हँसकर) नहीं मैं नाराज़ नहीं।

वसन्त : (चिल्लाकर) तुम्हारा खयाल है मैं इतना मूर्ख हूँ जो यह भी नहीं पहचान सकता।

(पर्दा सहसा गिरता है।)

शब्दार्थ–

अँगीठी – अंगारे रखने का पात्र	ऐनक–चश्मा
निपुणता – दक्षता	चर्म – चमड़ी
अरिस्टोक्रेटिक–भव्य	पख – अड़ंगा, नुक्स
विपन्न – असम्पन्न	तकल्लुफ़ – बाहरी दिखावा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1.'स्वच्छता बुरी नहीं, पर तुम तो हर चीज को सनक की हद तक पहुँचा देती हो, और सनक से मुझे चिढ़ है।' यह किसने, किससे कहा –

(अ) मधु ने मंगला से (ब) मधु ने वसन्त से

(स) वसन्त ने मधु से (द) मधु ने सुरो से ( )

2.सुरो और चिन्ती कौन थी ?

(अ) मधु की पड़ोसन (ब) मधु की सहेलियाँ

(स) मधु की ननद (द) मंगला की बहन ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. ऊषी और निम्मो से किसे चिढ़ थी ?
2. वसंत–मधु की नोंकझोक के दरमियान फोन पर साहब ने वसन्त को क्या आदेश दिया ?
3. सुरो और चिन्ती दिल्ली में कहाँ ठहरी थी ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. चूहा सैदनशाह के लोगों की तन्दुरुस्ती का राज क्या था ?
2. मधु के मामा ने वसंत द्वारा उनका रेजर इस्तेमाल करने के पश्चात् क्या किया ?
3. मधु अपने बचपन के वातावरण व संस्कार के बारे में नौकरानी मंगला से क्या कहती है ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1.मधु व वसंत में किस बात पर वैचारिक मतभेद है ?विस्तार से लिखिए।

2.एकांकी के आधार पर आज के तड़क–भड़क व तकल्लुफ–प्रधान जीवन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय –16

ममता : जयशंकर प्रसाद

जन्म – सन् 1889 ई.
मृत्यु – सन् 1937 ई.

बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ थां। बचपन में ही पिता के निधन से पारिवारिक उत्तरदायित्व का बोझ इनके कंधों पर आ गया। मात्र आठवीं तक औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्वाध्याय द्वारा उन्होंने संस्कृत, पाली, हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य का विशद ज्ञान प्राप्त किया।

प्रसाद की रचनाएँ भारत के गौरवमय इतिहास व संस्कृति से अनुप्राणित हैं। कामायनी उनका सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है, जिसमें आनन्दवाद की नई संकल्पना समरसता का संदेश निहित है। प्रेम, समर्पण, कर्त्तव्य एवं बलिदान की भावना से ओतप्रोत उनकी कहानियाँ पाठक को अभिभूत कर देती हैं।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं –झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक (काव्य), स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जन्मेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री, अजातशत्रु, विशाख, एक घूँट, कामना, करुणालय, कल्याणी परिणय, अग्निमित्र, प्रायश्चित, सज्जन (नाटक) छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल (कहानी संग्रह) तथा कंकाल, तितली, इरावती (उपन्यास)।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित कहानी ममता अपने कर्तव्य पथ से मुँह न मोड़ने वाली एक ऐसी स्त्री की कहानी है जिसने युद्ध में हारे हुमायूँ को अपने घर में शरण देकर उसकी जान बचाई थी। हुमायूँ उसका घर बनवा कर उपकार का ऋण चुकाना चाहता था।

बरसों बाद अकबर के आदेश से एक अश्वारोही उस स्थान की सुध लेता है। ममता उस मुगल अश्वारोही को वह स्थान सौपकर देह–त्याग अनंत यात्रा पर चली जाती है। वहाँ एक अष्टकोण आकर्षक मंदिर बनाया गया जिसके शिलालेख पर लिखा गया–''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनाया।'' मगर ममता का कहीं नाम नहीं था।

ममता

रोहतास–दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए, वह सुख के कण्टक–शयन में विकल थी। वह रोहतास–दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी–हिन्दू–विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है–तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चूड़ामणि ने चुपचाप उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। शोण के प्रवाह में, उसके कल–नाद में अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी। चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेह–पालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे। लौटकर बाहर चले गये। ऐसा प्रायः होता, पर आज मन्त्री के मन में बड़ी दुश्चिन्ता थी। पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आये। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिये हुए खड़े थे; कितने ही मनुष्यों के पद–शब्द सुन ममता ने घूम कर देखा। मन्त्री ने सब थालों को रखने का संकेत किया। अनुचर थाल रखकर चले गये।

ममता ने पूछा– "यह क्या है, पिताजी?"

"तेरे लिये बेटी! उपहार है।" –कहकर चूड़ामणि ने उसका आवरण उलट दिया। स्वर्ण का पीलापन उस सुनहली सन्ध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी–

"इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया?"

"चुप रहो ममता, यह तुम्हारे लिए है!"

"तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया?पिताजी यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिए। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?"

"इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त–वंश का अन्त समीप है, बेटी! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है; उस दिन मन्त्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी!"

"हे भगवान! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परम पिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी?क्या कोई हिन्दू भू–पृष्ठ पर न बचा रह जायेगा, जो ब्राह्मण को दो मुठ्ठी अन्न दे सके?यह असम्भव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूँ–इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।"

"मूर्ख है" –कहकर चूड़ामणि चले गए।

दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता भीतर आ रहा था, ब्राह्मण–मन्त्री चूड़ामणि का हृदय धक्–धक् करने लगा। वह अपने को रोक न सका। उसने जाकर रोहिताश्व दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा–

"यह महिलाओं का अपमान करना है।"

बात बढ़ गई। तलवारें खिंचीं, ब्राह्मण वहीं मारा गया और राजा–रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े; निकल गई ममता। डोली में भरे हुए पठान–सैनिक दुर्ग भर में फैल गये, पर ममता न मिली।

2

काशी के उत्तर धर्मचक्र विहार, मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खंडहर था। भग्न चूड़ा, तृण–गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों की ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी।

जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी–

"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ....."

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीप के मन्द प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उसने कपाट बन्द करना चाहा। परन्तु उस व्यक्ति ने कहा–''माता! मुझे आश्रय चाहिए।''

''तुम कौन हो?''–स्त्री ने पूछा।

''मैं मुगल हूँ। चौसा–युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।''

''क्या शेरशाह से?''–स्त्री ने अपने ओठ काट लिए।

''हाँ, माता!''

''परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो, वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब, तुम्हारे मुख पर भी है! सैनिक! मेरी कुटी में स्थान नहीं। जाओ, कहीं दूसरा आश्रय खोज लो।''

''गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर पड़ा है–इतना थका हुआ हूँ–इतना!'' –कहते–कहते वह व्यक्ति धम–से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आई! उसने जल दिया, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी–''ये सब विधर्मी दया के पात्र नहीं–मेरे पिता का वध करने वाले आततायी!'' घृणा से उसका मन विरक्त हो गया।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा–''माता! तो फिर मैं चला जाऊँ?''

स्त्री विचार कर रही थी–''मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म–अतिथिदेव की उपासना–का पालन करना चाहिए। परन्तु यहाँ...नहीं–नहीं ये सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं .... कर्तव्य करना है। तब?''

मुगल अपनी तलवार टेककर खड़ा हुआ। ममता ने कहा–''क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो; ठहरो।''

''छल! नहीं, तब नहीं–स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा?जाता हूँ। भाग्य का खेल है।''

ममता ने मन में कहा–''यहाँ कौन दुर्ग है! यही झोपड़ी न; जो चाहे ले–ले, मुझे तो अपना कर्तव्य करना पड़ेगा।'' वह बाहर चली आई और मुगल से बोली–''जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक! तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण–कुमारी हूँ; सब अपना धर्म छोड़ दें,तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?'' मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा, उसने मन–ही–मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवारों में चली गई। भीतर, थके पथिक ने झोपड़ी में विश्राम किया।

प्रभात में खंडहर की सन्धि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर अपने को कोसने लगी।

अब उस झोपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा–''मिरजा! मैं यहाँ हूँ।''

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार–ध्वनि से वह प्रान्त गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा–''वह स्त्री कहाँ है?उसे खोज निकालो।'' ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग–दाव में चली गई। दिन–भर उसमें से न निकली। सन्ध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है–''मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना, क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। यह स्थान भूलना मत।'' –इसके बाद वे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चले गए।

चौसा के मुगल–पठान–युद्ध को बहुत दिन बीत गये। ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। वह अपनी झोपड़ी में एक दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभात था। उसका जीर्ण–कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिये गाँव की दो–तीन स्त्रियाँ उसे घेर कर बैठी थीं; क्योंकि वह आजीवन सबके सुख–दुःख की समभागिनी रही।

ममता ने जल पीना चाहा, एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोपड़ी के द्वार पर दिखाई पड़ा। वह अपनी धुन में कहने लगा–''मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिये। वह बुढिया मर गई होगी, अब किससे पूछूँ कि एक दिन शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे?यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई!''

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा–''उसे बुलाओ।''

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक–रुककर कहा–''मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था, या साधारण मुगल पर एक दिन इसी झोपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था! भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर–विश्राम–गृह में जाती हूँ!''

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था। बुढ़िया के प्राण–पक्षी अनन्त में उड़ गये।

वहाँ एक अष्टकोण मन्दिर बना; और उस पर शिलालेख लगाया गया–

''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनाया।''

पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

शब्दार्थ–

प्रकोष्ठ – कमरा
दुहिता –कन्या
निराश्रय–बेसहारा
उत्कोच – रिश्वत
प्राचीर – परकोटा
विरक्त – उदासीन
पथिक – राहगीर
कंकाल – अस्थि–पंजर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1.कहानी की केन्द्रीय पात्र ममता कौन थी –

(अ) रोहतास–दुर्गपति की दुहिता

(ब) शेरशाह के मंत्री की पुत्री

(स) रोहतास–दुर्गपति के मन्त्रीकी दुहिता

(द) हुमायूँ की दुहिता ( )

2.चूड़मणि द्वारा स्वर्णथाल उपहार में प्रस्तुत करने पर ममता ने कहा–

(अ) विपदा के समय यह काम आएगा।

(ब) इतना सोना पाकर मैं धन्य हो गई।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(स) तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया?

(द) इस स्वर्ण को रखने के लिए मेरे पास स्थान नहीं है ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. शेरशाह ने किस युद्ध में हुमायूँ को पराजित किया था ?
2. किस बादशाह ने ममता की झोंपड़ी के स्थान पर अष्टकोण मंदिर बनवाया ?
3. किसने कहा,"हे भगवान! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन!"

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. ममता ने स्वर्ण–मुद्राओं का उपहार लेने से मना क्यों कर दिया ?
2. हुमायूँ कब और क्यों ममता की झोंपड़ी में आश्रय के लिए आया था ?
3. इस कहानी में भारतीय संस्कृति के किन–किन मूल्यों को उभारा गया हैं?
4. शेरशाह ने किस प्रकार रोहतास–दुर्ग पर कब्जा किया ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'ममता' के माध्यम से भारतीय नारी के त्याग एवं आदर्शों पर एक लेख लिखिए ।
2. मुगलकालीन भारतीय नारी की स्थिति का वर्णन कीजिए तथा आज इस स्थिति में आए सुधार पर प्रकाश डालिए।

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्याय –17

मैं और मैं : कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

लेखक परिचय –

श्री मिश्र जी का जन्म सन् 1906 में सहारनपुर जिले के देवबंद ग्राम में हुआ था। राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में इनकी गहरी रुचि रही है। स्वतंत्रता–आंदोलन के संदर्भ में इन्होंने कई बार जेल की यात्रा भी की। इनका मुख्य कार्य क्षेत्र पत्रकारिता है। यों तो ये 'ज्ञानोदय' के संपादक भी रहे, किंतु इनकी साहित्य साधना विशेषतः 'नया जीवन' मासिक के संपादन–प्रकाशन के रूप में व्यक्त हुई है। ललित निबंधों के क्षेत्र में भी इन्होंने अनवरत योग दिया है। इनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं – जिंदगी मुस्करायी, माटी हो गयी सोना, बाजे पायलिया के घुँघरू और दीप जले, शंख बजे। आकाश के तारे : धरती के फूल इनका लघु कथा संग्रह है। पत्रकार होने के नाते इन्होंने कई रिपोर्ताज भी लिखे। इनके रिपोर्ताज 'क्षण बोले कण मुस्काये' शीर्षक कृति में संकलित है।

पाठ परिचय –

प्रस्तुत निबंध प्रभाकर जी की 'जिए तो ऐसे जिए' शीर्षक कृति से लिया गया है। इसमें लेखक ने यह प्रतिपादित किया है कि प्रायः मनुष्य दूसरों के विषय में सोच–समझकर दुखी–सुखी होता रहता है। उसका प्राथमिक कर्त्तव्य यह है कि वह अपने विषय में सोचे, अपने कर्त्तव्य का पालन करे और निरंतर कर्मरत बना रहे। कर्त्तव्य करने के साथ–साथ उसे अहंकार का बोझ नहीं लादना चाहिए। अहंकार घृणा का पिता है और घृणा जीवन की संपूर्ण ऊँचाइयों की दुश्मन है। अतः घृणा से बचना चाहिए। लेखक ने जो दूसरा संदेश दिया है, वह यह है कि मनुष्य को जीवन के प्रति निष्ठा रखते हुए संघर्षों से घबराना नहीं चाहिए, निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि निराशा कर्म की गति रोक देती है तथा नया और ताजा अनुभव नहीं करने देती है।

मूल पाठ –

जब देखो गुमसुम, जब देखा गुमसुम! अरे भाई, तुम्हें क्या साँप सूँघ गया है कि सुबह के सुहावने समय में यों चुपचाप बैठे हो ? तुमसे अच्छे तो देवीकुंड के कछुवे ही हैं कि तैरते नजर तो आ रहे हैं। उठो, दो–चार किलकारियाँ भरो और अँगीठी के पेट में गोला डालो, जिससे अपना भी पेट गरमाए।

ओ हो, तुम कहाँ से आ टपके इस समय ? कोई कितने ही गंभीर मूड में हो, विचारों की कितनी ही गहराइयों में उतर रहा हो, तुम्हारी आदत है बीच में आ कूदना और फैलाने लगना लन्तरानियों के लच्छे–एक के बाद एक। यह सच है कि यह बहुत बुरी आदत है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तो हम लन्तरानियों के लच्छे फैलाते हैं और तुम गंभीर मूड में रहते हो। सचाई यह है भाई जान कि जमाना बहुत खराब है। जिस गधे को नमक दो, वही कहता है कि मेरी आँख फोड़ दी। हम जा रहे थे अपने काम, तुम्हें दूर से देखा सुस्त, रास्ता काटकर इधर आए कि देखें तो माजरा क्या है, और मामला कुछ गड़बड़ हो, तो कुछ मदद करें, पर तुम्हारे तेवर कुछ ऐसे बदले हुए हैं कि जैसे हम सुबह–सुबह चार रुपये उधार माँगने आ गए हों और पहले इसी तरह हाथ उधार उठाए रुपये हमने अभी तक वापस न किए हों। बहुत अच्छे रहे।

ना, ना यह बात नहीं है। तुम्हारा आना सर आँखों पर, तुम भी यह क्या बात कह रहे हो, पर बात यह है कि मैं इस समय बहुत गहरे चिंतन में था और लो बताऊँ तुम्हें गहरे चिंतन में क्या था, मैं अपने आप में खोया हुआ हूँ आज।

वाह भाई वाह, क्या कहने! लो, फिर बताऊँ तुम्हें मैं भी एक बात कि आज तुमने ऐसी दूर की हाँकी कि अब तक के सब छौंक मात हो गए। हाँ जी, तो आज तुम अपने आप में खोये हुए हो। मियाँ, खोये हुए हो, तो डौंडी पिटवाओ या पुलिस में रिपोर्ट लिखाओ। खड़े–खड़े क्या देख रहे हो भैंगे बबूल–से।

तुम तो अजीब आदमी हो कि मैं कह रहा हूँ सन्त सुभाव एक गहरी बात और तुम उड़ा रहे हो, गुटप्पे, पर बात यह है कि पढ़ाई के लिए एक पैसा कभी किसी मास्टर को तुमने दिया नहीं, अक्ल आए भी तो कहाँ से। लो, फिर मैं आज तुम्हें तुम्हारे ही जैसों की एक कहानी सुनाता हूँ। उसे सुनकर तुम समझोगे कि कैसे आदमी अपने आप में खोया जाता है।

पाँच आदमी आपस में गहरे दोस्त थे। करने–धरने को कुछ नहीं, खाने को दोनों समय रोटी और पीने को भंग चाहिए–पाँचों पक्के भंगड़ी–पीये और धुत्त पड़े रहे। एक दिन कहीं मंदिर में बैठे घोट रहे थे कि उन पाँचों की स्त्रियाँ इकट्ठी होकर जा पहुँची और लगी दिल के गुब्बार निकालने। जो दस–पाँच आदमी वहाँ और थे, उन्होंने भी इन स्त्रियों की बात का समर्थन किया। बड़ी बेइज्जती हुई और पाँचों ने कहीं परदेश में जाकर रोजगार करने का फैसला लिया।

पाँचों चल पड़े। चलते–चलते आपस में सलाह की कि, भाई होशियारी से चलियो, कहीं रास्ते में ऐसा न हो कि साँझ हो जाए जरा गहरी और कोई खोया जाये–लौटकर उसकी घरवाली को क्या जवाब देंगे। फिर कुछ दूर गए, रात हुई, एक मंदिर में पड़ कर सो गए। सुबह उठते ही तब पाया कि भाई, पहले गिन लो, सब चौकस भी हैं।

उनमें से एक ने सबको गिना : एक, दो, तीन, चार। फिर गिना : एक, दो, तीन, चार। जोर से चिल्लाकर कहा – अरे, हम तो घर से पाँच चले थे, ये तो रात भर में ही चार रह गए। दूसरे ने दुबारा सबको गिना, पर वे ही चार। तीसरे ने गिना, तब भी चार ही रहे। मामला संगीन हो गया और तब पाया कि लौटकर घर चलें – शायद पाँचवा आदमी रात को घर लौट गया हो।

रास्ते में सबके सब रोते–पीटते लौट रहे थे कि एक समझदार आदमी मिला। उसने इन्हें रोककर पूछा कि वे किस मुसीबत में हैं। इन्होंने बताया कि हम घर से पाँच चले थे, पर रात भर में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चार ही रह गए। उस आदमी ने इन्हें गिना तो वे पाँच थे। उसने कहा : भले आदमियों, तुम घर से पाँच चले थे और पाँच ही अब हो, तो रो क्यों रहे हो ?

सब इन भंगड़ियों में से एक ने फिर सबको गिना : एक, दो, तीन, चार।

समझदार ने कहा – अरे भोंदू, अपने को तो गिन। अब इन लोगों की समझ में आया कि मामला यह है कि जो गिनता है, अपने को भूल जाता है। वही हाल मेरा हो रहा है कि मैंने घर की सोची, पड़ौसी की सोची, देश की सोची और यों समझो कि दुनिया बातें सोच मारी, पर अपनी बात भूल गया और कभी यह न सोचा कि आखिर मेरा मेरे प्रति क्या कर्त्तव्य है और क्या अधिकार है। आज मैं यही सोच रहा था कि तुम आ गए। कहो फिर, मैं गहरे चिंतन में था या नहीं ?

भाई, बात तो तुम्हारी कुछ पते की सी लगती है कि हम दुनिया की बात सोचते हैं, पर अपनी नहीं, और सच बात बड़े कह गए हैं कि – आप मरे जग परलौ यानी हम मर गए तो दुनिया मर गई। हम नहीं तो जहान नहीं। बात मन को लगती है, पर अपने बारे में साचें ही क्या ?

नहीं सोचते, तो लिखाओ पशुओं में नाम, क्योंकि जो सोचता नहीं, वह पशु है – जानवर है।

तो हम पशु हैं आपकी राय में ? वाह साहब, आप हमें पशु बता रहे हैं, पर भाई, यह तो बताओ कि तुम्हें हमारी पूँछ और सींग किधर दिखाई दिए हैं ?

पूँछ और सींग! पशु बनने के लिए पूँछ और सींग की जरूरत नहीं पड़ती। बात यह है कि पशुता और मनुष्यता दो भाव है। जो पहले सोचे और फिर चले, वह मनुष्य और सोचे कुछ नहीं, बस जिधर हवा ले जाए, चला चले वह पशु – अब आई तुम्हारी समझ में मेरी बात ?

तो सोचना जरूरी है।

जी हाँ, सोचना जरूरी है और अपने बारे में सोचना जरूरी है। मैं यही जरूरी कार्य कर रहा था, जब तुम आए।

महाकवि शेखसादी एक दिन अपने बेटे के साथ सुबह की नमाज पढ़ कर लौट रहे थे। उनके बेटे ने देखा कि रास्ते के दोनों तरफ वाले घरों में अभी तक बहुत से आदमी सोये पड़े हैं। उसने अपने पिता से कहा, अब्बा ये लोग कितने पापी हैं कि अभी तक पड़े सो रहे हैं और नमाज पढ़ने नहीं गए।

विचारक शेखसादी ने दु:खभरे स्वर में कहा – बेटा, बहुत अच्छा होता कि तू भी सोता रहता और नमाज पढ़ने न आता।

बेटे ने आश्चर्य से पूछा, यह आप क्या कह रहे हैं, मेरे अब्बा ?

शेखसादी ने और भी गहरे में डूबकर कहा – तब तू दूसरों की बुराई खोजने के इस भयंकर पाप से तो बचा रहता, मेरे बेटे!

मतलब यह कि अपने बारे में सबसे पहले जो बात सोचने की है, वह यह कि मेरा यह अधिकार है कि मैं अच्छे काम करूँ, अपने जीवन को ऊँचा उठाऊँ, पर मेरा यह कर्त्तव्य भी है कि जो किसी कारण से अच्छे काम नहीं कर रहे हैं, या साफ शब्दों में गिरे हुए हैं, उन्हें अपने कामों से ऊँचे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उठने की प्रेरणा देते हुए भी, उन पर अपने अहंकार का बोझ न लादूँ, क्योंकि अहंकार घृणा का पिता है और घृणा जीवन की संपूर्ण ऊँचाइयों की दुश्मन है।

खास बात यह है कि घृणा उसका घात करती है जो घृणा करता है और इस तरह मैं दूसरों से घृणा करके अपना ही घात करता हूँ।

तो घृणा को रोकना जरूरी है ?

हाँ जी, घृणा को रोकना – उसे उत्पन्न ही न होने देना, बहुत जरूरी है, पर रोकने की बात कहकर तुमने मुझे एक पुरानी बात याद दिला दी।

मेरे एक मित्र हैं श्री कौशल जी। उन्हें अपने जीवन में पहली असफलता यह मिली कि एंट्रेंस पास न कर सके और नाइन्थ में ही उन्हें स्कूल को नमस्कार करना पड़ा।

इनके कुछ दिन बाद ही उन्होंने छोटा–सा प्रेस खोल लिया। साझी समझदार था, कर्जा प्रेस के नाम लिखता रहा, आमदनी अपने। प्रेस फेल हो गया और मेरे मित्र चौराहे पर खड़े दिखाई दिए।

अपने पिता की पूरी पूँजी लगाकर उन्होंने बर्तनों का एक कारखाना खोल लिया। बर्तन बनते, कलई होती, रुपये छनका करते। सेठों में गिनती होने लगी पर तभी उनकी पत्नी बीमार हो गई। उसे लिए इरविन अस्पताल पड़े रहे। कारखाना मजदूर खा गए। पाँच महीने बाद लौटकर आए तो लेना कम था, देना बहुत। यहाँ भी ताला बंद किया। पन्सारी की थोक दुकान थी। मेवा के ढेर लग गए – ढेरों आती, बोरियों जाती। फिर रुपया बरसने लगा, पर जाने कैसे ये घटनाएँ भी छितरा गई और पत्नी का सारा जेवर बेचकर जान छूटी।

खाली तो रह ही न सकते थे। घर से दूर जाकर होटल खोल लिया। चला, चमका और ठप्प हो गया। वहाँ से भी हटे और अपने संबंधी की सोड़ा वाटर फेक्ट्री में बैठने लगे। यहाँ से एक बीमा कंपनी में गए। खूब चमके। बीमा कंपनी में डायरेक्टरों का कुछ झमेला मचा, तो इन्होंने शर्बत की दुकान खोल ली और एक अखबार निकाल दिया। दोनों खूब चले, पर चलकर टिके नहीं, चले ही गए।

अब यह एक बहुत बड़ी कंपनी के मैनेजर डायरेक्टर थे। यहाँ ये ऐसे चमके कि पिछली सब चमकें धीमी पड़ गई। एक बार तो ऐसी हवा बँधी कि गाँठ बँध गई, पर फिर वे ही बहुत सी बातें इकट्ठी हुई और कंपनी में ताला पड़ा।

मेरे मित्र अब पुस्तक प्रकाशक थे। बाजार उनकी पुस्तकों से दाया हुआ था, धूम थी। खूब जोर रहे। देश स्वतंत्र हुआ, उन्हें एक यात्रा के बीच में एक जाति के लोगों ने उतार लिया और जाने कितने दिन बंदी रहे। जाने कैसे बचे और कहाँ–कहाँ भटकते रहे। बहुत दिन बाद एक पत्रकार के रूप में प्रकट हुए और अब शांति के साथ सम्मान की और व्यवस्था की जिंदगी बिता रहे हैं।

उन्हें देखकर बराबर मेरा दिमाग चक्कर में रहता कि ये सज्जन कितने अद्‌भुत हैं कि इतनी असफलताओं के थपेड़े खाकर भी निराश नहीं हुए। मैं उनके बारे में बहुत सोचता, पर उनके व्यक्तित्व का रहस्य न समझ पाता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक दिन एक अन्य मित्र आए श्री सिंहल। उनका कारखाना भी फेल हो गया था और वे उसका मामला निपटाने में मेरा सहयोग चाहते थे। उनके दो मोटरें बिकनी थीं पर पूरे दाम देने वाला कोई ग्राहक बाजार में न था। एक दिन बहुत ऊबे हुए मेरे पास आकर बोले, तो भाई साहब जितने में बिकती है, उतने में बेच दें, पर यह मामला निपटा दें।

मैंने कहा, मामला तो निपटाना ही है पर 10 हजार की गाड़ियाँ 6 हजार में कैसे बेच दूँ ?

बोले, 6 हजार में ही बेच दीजिए ?बात यह है कि यह मामला निपट जाए तो मैं फ्रेश स्टाट ले सकता हूँ।

मेरे कानों में पड़ा फ्रेश स्टार्ट – इनका अर्थ होता है – नया ताजा आरंभ। सुनते ही एक नई ताजगी अनुभव हुई और मैंने सोचा कि हर नया आरंभ अपने साथ एक ताजगी, एक तेजी, एक स्फुरण लिए आता है।

तभी याद आ गए मुझे फिर कौशल जी, जो जीवन में बार–बार असफल होकर भी थके नहीं, ऊबे नहीं, और बराबर आगे बढ़ते रहे और आज ही पहली बार मेरी समझ में आया उनकी उस अपराजित वृत्ति का रहस्य। यह रहस्य है – नया ताजा आरंभ। वे हारे, पर हार कर रुके नहीं और इस न रुकने में ही उनकी सफलता का रहस्य छिपा हुआ है।

मैंने सोचा – मेरा अपने प्रति यह अधिकार है कि मैं हार जाऊँ, थक जाऊँ, गिर भी पड़ूँ और भूलूँ–भटकूँ भी, क्योंकि यह सब एक मनुष्य के नाते मेरे लिए स्वाभाविक है, संभव है, पर मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं हार कर भागूँ नहीं, थक कर बैठूँ नहीं, गिर कर गिरा ही न रहूँ और भूल–भटक कर भरमता ही न फिरूँ, जल्दी से जल्दी अपनी राह पर आ जाऊँ। अपने काम में लग जाऊँ और एक नया आरंभ करूँ क्योंकि रुक जाना ही मेरी मृत्यु है और मरने से पहले, न मेरा अधिकार है और न कर्त्तव्य।

•••

शब्दार्थ –

गुमसुम – चुपचाप, उदास/ लन्तरानियों – मनगढ़ंत/ चिंतन– सोच विचार/ अपराजित वृत्ति – हार न मानने की इच्छा शक्ति/ फ्रेश स्टार्ट – नया आरंभ/ स्फुरण – अंगों का फड़कना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'मैं और मैं' पाठ के लेखक कौन हैं ?

   (क) जयशंकर प्रसाद (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

   (ग) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (घ) रामचंद्र शुक्ल

2. लेखक के मित्र श्री सिंहल अपनी गाड़ी क्यों बेचना चाहते थे ?

   (क) कर्जा चुकाने के लिए (ख) मौज–शौक के लिए

   (ग) पैसे कमाने के लिए (घ) नया व्यापार आरंभ करने के लिए ( )

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. लेखक के मित्र अपनी गाड़ियाँ कितने में बेचने को राजी हो गए ?
2. लेखक की दृष्टि में कौशल जी अद्भुत क्यों थे ?
3. लेखक के मित्र श्री कौशल जी की अपराजित वृत्ति का क्या रहस्य था ?
4. कौशल जी का प्रेस क्यों फेल हो गया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पाँचों आदमी क्यों रो रहे थे ?
2. लेखक ने किन लोगों को पशु कहा ?
3. शेखसादी ने अपने बेटे को घर पर सोते रहने के लिए क्यों कहा ?
4. कौशल जी की पुस्तकों का प्रकाशन क्यों बंद हो गया ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. पाँचों भंगेड़ियों वाली कथा के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है ?
2. शेखसादी वाली कथा से लेखक क्या समझाना चाहता है ?
3. कौशल जी ने कौन–कौन से व्यापार किए ?
4. हमारा हमारे प्रति क्या अधिकार है ?

* * * * *

Downloaded from https:// www.studiestoday.com